ॐ सोऽहम् ॐ

—:: गणपति महिमा अंग—1 ::—

श्लोक (1)

ओम वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटिसमप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

कुण्डली (1)

मंगलकरण दुःख हरण, गणपत जी गणराज।
हाथ जोड़ विनती करूं, शुभ करो सभी काज।।
शुभ करो सभी काज, विघ्न सब दूर भगाओ।
भूल चूक कर माफ, हिया में ज्ञान लखाओ।।
अन्तर कीजे साफ, और सब ही सुख साज।
ज्ञानानन्द की सुन, ले गणपत जी महाराज।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पश्यन्ति गणपति महिमा राग आसावरी)

भजन (1)

साधो भाई! गणपत देव मनायो
रंग रूप रेख नहीं जाँके, निराकार निज थायो ।।टेर।।
गणपत देव गुणों का स्वामी, सकल सृष्टि रचायो।
रचना रचाए आप रहे न्यारा, न लीला में लिपायो।।1।।
गुणगोचर से पार गणनायक, लखण भखण में न आयो।
सबका परम प्रकाशक देवा, नाम रूप विलायो।।2।।
गुरुगम चाबी लागी घट भीतर, अलौकिक गणपत पायो।
सर्वदुखों की भई निवृति, परमानन्द दर्शायो ।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु मिलग्या, गणपत राह बतायो।
ज्ञानानन्द शरण सद्गुरु की, गणपत महिमा गायो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (2)

ऊँ एक दन्तो महाबुद्धिः सर्वज्ञो गणनायकः।
सर्व सिद्धि करो देवो गोरीपुत्रो विनायकः।।

दोहा (2)

गणपति मति सुचारू करो, मेट सकल अध्यास।
ज्ञानानन्द फन्द काट, बोधरू बुद्धि विकास।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गणपति प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (2)

गणपति सुणलो अरज हमारी, मैं आया शरण तुम्हारी।
मिटाओ विपदा भवभारी, हो तुम–शुभ मंगलकारी।।टेर।।
तुम हो जग के परम् विधाता, शुद्धि बुद्धि के हो तुम दाता।
तुम्ही हो पिता–माता, तुम सुत मित्र भ्राता।।1।।
मैं मूर्ख मूढ़ अनारी, मति काम करे नहीं म्हारी।
मिटाओं दुविधा सारी, बनाओ, चरणों का अधिकारी।।2।।
तुम हो पार्वती के लाला, ज्ञान बुद्धि गम वाला।
मिटाओ दुख जंजाला, शिव सुत गज मुख वाला।।3।।
राजा प्रजा सभी मनावे, ऋषि मुनि देवता ध्यावे।
आप बिना मंजिल नहीं पावे, काम बिगड़तो जावे।।4।।
प्रथम आपको मनाऊं, चरणा में शीश झुकाऊं।
ज्ञानानन्द अरज सुनाऊं, सत्संग री सफलता चाऊं।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

–:: गुरु प्रार्थना अंग–2 ::–

दोहा (3)

आप बिन नहीं आसरो, भव से तारण हार।
ज्ञानानन्द अरज करे, पल–पल बारम्बार।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गणपति प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (3)

आवो आवो जी गुरुजी म्हारे द्वार, न्हालूं थांकी बाठ घणी।
बाठ घणी जी म्हारा आप हो धणी।।टेर।।
सखियां बुलाऊं मैं तो मंगल गाऊं।
थांकी घणी तो करूं जय जयकार, न्हांलू थांकी बाठ घणी।।1।।
आसन लगाऊं मैं तो चंवर ढुलाऊं।
थांका गाऊं जी मंगलाचार, न्हांलू थांकी बाठ घणी।।2।।
मैं अज्ञानी बड़ो अभिमानी।
म्हारों देवो जी जन्म सुधार, न्हांलू थांकी बाठ घणी।।3।।
पांच भेद और भ्रांति मिटाओ, ब्रह्म आत्म एक लिखाओ।
म्हारों देवो जी भरम निवार, न्हांलू थांकी बाठ घणी।।4।।
ज्ञानानन्द चरणों का चेरा, मेटो भवबन्धन गुरु मेरा।
मोहे त्यारो अबकी बार, न्हांलू थांकी बाठ घणी।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (4)

अरज करु गुरुदेव जी, कृपा किज्यो आज।
सत्संग में पधार के, सकल सुधारो काज।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गणपति प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (4)

म्हारा सद्गुरु सुणल्यो पुकार, पधारो म्हारे आंगणिये।।टेर।।
सत्संग मांही बेगा पधारो, आकर बिगड्यो काज सुधारो।
मैं बालक मूढ़ ग्वार, पधारो म्हारे आंगणिये।।1।।
तत्त्वमसि उपदेश सुणावो, वाच्य अरू लक्ष्य समझाओ।
लक्ष्य को करावो निरधार, पधारो म्हारे आंगणिये।।2।।
सद्गुरु तुम हो दीनदयाला, मेटो मम संशय तत्काला।
म्हारो देवो भरम निवार, पधारो म्हारे आंगणिये।।3।।
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म समाना, मेटो मेरा आना जाना।
म्हारो जनम–मरण द्यो टार, पधारो म्हारे आंगणिये।।4।।
ज्ञानानन्द थानें अरज सुणावे, भवसागर से तिरबो चावे।
म्हारे थांकों ही आधार, पधारो म्हारे आंगणिये।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (5)

एको ब्रह्मात्माः यत्र अद्वितीयाः विद्यते।
ज्ञानानन्दाचलास्ति ब्रह्मैवः रम्यते।।

दोहा (5)

दयालू सतगुरु देव जी, बन्धन देवो टाल।
ज्ञानानन्द भव जाल सू, कर तत्काल निहाल।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गणपति प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (5)

किस्ती आन पड़ी सागर में, सतगुरु आप लगावो तीर।।टेर।।
इस जग में नहीं कोई सहायक, सगा सम्बन्धी वीर।
माया ममता में ये उलझावें, बांध मोह जंजीर।।1।।
काम क्रोध मद लोभ सतावे, दुष्ट बड़ा बलवीर।
अहम्ता ममता विषय वासना, तृष्णा लगावे तीर।।2।।
जल बिन मछली तड़पे जैसे, दिल में न आवे धीर।
तुम बिन हिवड़ो तड़पे ऐसे, नैणा से झलके नीर।।3।।
स्वाति बूंद रा प्यासा पपीहा, पीवे न नदियां नीर।
ऐसे तुम बिन और न भावे, देऊं कलेजो चीर।।4।।
नहीं मनाऊं मैं देवी–देवता, ना मनाऊं कोई पीर।
ज्ञानानन्द इक तेरो आसरो, थ्ये पीरो का पीर।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (6)

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

दोहा (6)

सतगुरु दीन दयाल हो, डुबत तारो जहाज।
जीव फस्यो जंजाल म, आन बचावो लाज।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यिमा	गणपति प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (6)

सद्गुरु जी करद्यो महर, भव से पार करो।
भव से पार करो, सिर पे हाथ धरो।।टेर।।
आशा नदी है अपारा, शुभ–अशुभ दो किनारा।
मनोरथ भरिया नीरा, ज्यांमें तृष्णा उठे लहर।।1।।
राग–द्वैष जन्तु घणेरा, काम क्रोध मोह बढ़ेरा।
अब नहीं निकसन का सेरा, अब किसे सुनाऊं टेर।।2।।
गज पकड़या जल के माहिं, सांवरियों ज्यानें आण बचाई।
इस विधि करद्यो सद्गुरु सहाई, हो रियो घोर अंधेर।।3।।
ज्ञानानन्द चरणों का चेरा, करो गुरु हृदय में डेरा।
मेटो चौरासी का फेरा, गुरु देव करो मत देर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (7)

चरण कमल को आसरो, ऐक आस विश्वास।
शरणा पड़ियो आप की, करो बंधन कु नाश।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यिमा	गणपति प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (7)

सतगुरु जी ज्ञान बतावोला,
भव से पार तिरावोला।।टेर।।
जन्म–जन्म को मैं दुखियारो–2,
इस दुःख को आप मिटावोला।।1।।
सत्संग भगति क्रिया योग सब–2,
ज्यांने खोल बतावोला।।2।।
नाना पंथ चल्या है जग में–2,
म्हानें सत की राय बतावोला।।3।।
तत्त्वमसि महावाक्य वेद का–2,
म्हाने लक्ष्य अर्थ लिखावोला।।4।।
ज्ञानानन्द शरणागत तेरी–2,
अब के लाज बचावोला।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (8)

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
(कठोपनिषद् शांति पाठ)

दोहा (8)

हम सब सतमार्ग चले, कोई न होवे दीन।
ज्ञानानन्द लाज राखो, दुःखिया जल बिन मीन।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना (आशिर्वाद मगंलाचरण) राग मारवाड़ी)

भजन (8)

दाता ऐसा दो वरदान, कर दो हम सब का कल्याण।।टेर।।
हम सब की भूल मिटावो, सत् आत्म ब्रह्म लिखावो।
भेद भ्रम हटावो, दिखाओ पद निर्वाण।।1।।
वाणी शुद्ध बनाओ, गणमात्रा दोष मिटाओ।
सुने ज्यांका विघ्न मिटाओ, आप बड़े हो महान।।2।।
ऐसी कृपा कीज्यो, हम सब को शरणा दीज्यो।
राग द्वैष हर लीज्यो, हिल मिल करां गुणगान।।3।।
ज्ञानानन्द यूं गावे, आपको अरज सुणावे।
सबका हित चावे सत्गुरु, आप करो कल्याण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (9)

यतः संशय जातं हृदय ग्रंथिलक्षणम्।
छिन्धि युक्त्या मा खड्ंग धारया कृपया गुरो।।

दोहा (9)

दास अरज करे आपसु, बेगी सुनो पुकार।
मैं आयो शरणा माय, दीजे ब्रह्म विचार।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (9)

दास करे अरदास, त्यारों गुरु अब की घड़ी।।टेर।।
मैं आई पड़यो भवसागर माहिं, भवसागर है बड़ा दुःख दाई।
अब कोई दिखे न तारण ताँई, मैं तो बहुत हुयो जी हताश।।1।।
मोह माया का जाल छाया, तामें निज स्वरूप भुलाया।
सुन महिमा शरण में आया, मैं तो लेकर आयो बड़ी आश।।2।।
जल बिन मछली तड़पे जैसे, आप बिना मैं तरसुँ ऐसे।
अब जीना होवे कैसे, थां बिन और न आवे रास।।3।।
पुष्प देख भंवरा मंडराया, सुध–बुध सारी बिसराया।
यही हाल मेरा हो आया, अब मैं कांई करूं प्रयास।।4।।
ज्ञानानन्द आपरो चेलो, बेगो सुनो गुरु म्हारो हेलो।
मोहे बताओ सत् रो गेलो, म्हारी मेटो भव की त्रास।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (10)

अज्ञान–तिमिरान्धस्य, ज्ञानांजन–श्लाक्या।
चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
(गुरु गीता)

दोहा (10)

सद्गुरु आप अवनाशी, काटो यम की पाश।
ज्ञानानन्द शरणागत, पूरण करो मम आस।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यिमा	गुरु प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (10)

आप गुरु अवनाशी जी, पार करो भव जहाज।
पार करो भव जहाज, म्हारी अरजी सुनो गुरु आज।।टेर।।
असंख्य जुगा से भूल में जी, करतो रीयो अकाज।
बार–बार यम मारयो जी, ज्यों चिड़्यों को बाज।।1।।
मोह ममता में आय फस्योजी, भूल गया सब नाज।
काम क्रोध म्हारा सिर पर छाया, अहंकार रीयो गाज।।2।।
आप गुरु जी सामर्थ स्वामी, सुनावो महावाक्य साज।
जीव ब्रह्म का भेद मिटाओ, बिगड़ो सुधारो काज।।3।।
अरज करू कर जोड़ के, सुनो गरीब नवाज।
ज्ञानानन्द शरणागत आयो, आप बचाओ लाज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (11)

चेतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम्।
नाद बिन्दू कलातीतं, तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।
(गुरु गीता)

दोहा (11)

भव सागर में डूबता, कोई न त्यारण हार।
ज्ञानानन्द री विनती, आप लगावो पार।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यिमा	गुरु प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (11)

मैं शरण पड़्यो गुरुदेव, म्हारी पार करो नैया।।टेर।।
तीन दौष अन्तर में भारी, निज को भूल गिया।
तीन काण्ड बतलाओ स्वामी, आप से अरज किया।।1।।
पांच तत्व और पच्चीस प्रकृति, यामे उलझ रीया।
शब्द स्पर्श रूप रस गंध, याने मार्ग बन्द किया।।2।।
त्रिगुण माया अटपटी जी, मोह में डाल दिया।
काम क्रोध मद लोभ मिल सब, बेड़ा डूबो रीया।।3।।
ज्ञान जहाज थ्ये लेकर आवों, भव में भरम रीया।
ज्ञानानन्द शरणागत आयो, तन मन वार दिया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (12)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
(गुरु गीता)

दोहा (12)

आप बिना नहीं और है, जग तारण जगदीश।
ज्ञानानन्द शरणागत, जरा मुझ पर कीजे रीस।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना तर्ज– तालरिया मगरिया रे)

भजन (12)

सद्‌गुरु देवा वो कृपा कीजे दीन पें।
म्हारो जन्म मरण दुख मेट, आयो गुरु शरण तेरी।।टेर।।
ज्ञान विज्ञान ओ भक्ति अरू भावना–2।
म्हाने खोल समझाओं सारी रीत।।1।।
वाच्य अरू लक्ष्य का कैसे जानु भेद मैं–2।
करो जीव ब्रह्म को मेल।।2।।
जीवन मुक्ति का ओ राज समझावद्‌यो–2।
मोहे पहुंचाओं विदेह में ठेठ।।3।।
ज्ञानानन्द की जी सुणल्यो थ्ये तो विनती–2।
मोहे राखो चरणा में आज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (13)

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मैः श्री गुरवे नमः।।
(गुरु गीता)

दोहा (13)

चरण छोड़ कहां जाऊं, और नहीं कोई ठाम।
ज्ञानानन्द शरण में, अब क्या दुजे से काम।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (13)

राखोजी सद्‌गुरु शरणागत की लाज।
शरणागत की लाज, शरण में आयों गुरुजी आज।।टेर।।
मैं भवसागर माई झूल रह्यो, डूब रही मेरी जहाज।
खींच किनारे आप लगाओ, सद्‌गुरु जी सिरताज।।1।।
तीन ताप की आग लगी है, जल रीयो में आज।
ज्ञान बारीस आप बरसाओ, सुख वीणा री साज।।2।।
तत्त्वमसि उपदेश सुनाओ, वाच्य लक्ष्य राज।
अहम् ब्रह्म रा अनुभव देवो, जीवन मुक्ति के काज।।3।।
तू दाता दुःख भजना, मैं तेरो मोह ताज।
ज्ञानानन्द शरण में तेरी, ज्ञान भक्ति के काज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (14)

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मी लितं येन तस्मै श्री गुरवै नमः।।
(गुरु ज्ञान दर्पण)

दोहा (14)

चेतन रुप गुरुदेव को, वन्दन बारम्बार।
ज्ञानानन्द बंध काटो, मोक्ष के दात्तार।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (14)

म्हारा सद्‌गुरु दीनदयाल काटो यम पासी।।टेर।।
जन्म–जन्म से भटकत आयो, लख चौरासी घणा दुख पायो।
अहंता ममता में भरमायो, म्हारो होर्‌यो हाल बैहाल।।1।।
मैं अभिमानी बड़ो अपराधी, काम क्रोध के होर्‌यो आधि।
नाना लग रही मेरे उपाधि, ये तो खावे म्हारी खाल।।2।।
आप दयालू जग उपकारी, भूल अन्धेरी मेटो म्हारी।
ज्ञान अमी की पावो झारी, पीकर होऊ निहाल।।3।।
ज्ञानानन्द री अरजी थाने, अबके शरणो दीजे म्हाने।
म्हारा कर्म थांसे नहीं छाने, अब सुणल्यो जग कृपाल।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (15)

ज्ञान रू विचार दीजिये, सद्‌गुरु सत्य स्वरूप।
काम क्रोध लालच में, मैं भूल्यो निजरूप।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना राग आसावरी)

भजन (15)

सतगुरु आप हो गहर गम्भीरा
अम्बर सम निरलेप सदा ही, ज्यूँ का त्यूँ आखिरा।।टेर।।
सेवा कर्म बताके स्वामी, अन्दर कीजे धीरा।
काम क्रोध मार हटा दो, अविद्या करद्‌यो चीरा।।1।।
आत्म ज्ञान बताके गुरुजी, हर लीजे भव पीरा।
कालबली का धौखा मेटो, कर द्‌यो सुख में सीरा।।2।।
श्रवण मनन समझा के दाता, पावो निधिध्यासन नीरा।
मेरी जहाज डूबी भव माहिं, खींच लगा दो तीरा।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु दाता, आप मेरे मन मीरा।
ज्ञानानन्द अरज गुजारे, सुनल्यो सतगुरु पीरा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (16)

सर्व श्रुति शिरोरत्न विराजितपदाम्बुजम्।
वेदान्त मार्तण्डं, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
(गुरु गीता)

कुण्डली (16)

अरज करूं कर जोड़ के, सुनिये सद्गुरु दयाल।
कृपा कर मुझ दीन पर, बंधन दीजे टाल।।
बन्धन दीजे टाल, तुम बिन न टारन हारा।
शरणागत की लाज, राखो आप दात्तारा।।
ज्ञानानन्द की सुन, सुनकर करो जी निहाल।
अरज करूं कर जोड़, के सुनिये सद्गुरू दयाल।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (16)

हो गुरु दाता मोय, अबके लेवो जी उभार।
जन्म–जन्म से भटकत–भटकत, गयो जमारो हार।।टेर।।
मल विक्षेप छायो उर में, समझूं न सारा सार।
अपने आपको भूल गया जी, आवरण करद्यो छार।।1।।
काम क्रोध घणा सतावे, दुष्ट बड़ा बैकार।
आप दयालू सामर्थ दाता, याने दीज्यो मार।।2।।
आशा तृष्णा नदियां बहवै, वेग बड़ा अपार।
डगमग–डगमग नैया डोले, बेगा लेवो संभार।।3।।
मैं अज्ञानी बालक तेरो, सुनल्यो म्हारी पुकार।
ज्ञानानन्द को निर्बल हेलो, भव से करना पार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (17)

कथं ज्ञानमवाप्नोति कथं मुक्तिर्भविष्यति।
वैरागयं च कथं प्राप्नोतिएतद् ब्रूहि मम प्रभो।।
(अ. गीता श्लोक–1)

कुण्डली (17)

मुर्शिद सुनिये प्रार्थना, शरण लियो में तोय।
दया करो मम् दास पे, दुजा न दीख कोय।।
दुजा दीखे न कोय, अब छोड़ कहीं न जाऊं।
आप जैसा देव, और कोई नहीं पाऊँ।।
ज्ञानानन्द की सुन, चरणा में राखो मोय।
मुर्शिद सुनिये विनती, शरणां पड्यो में तोय।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यिमा गुरु प्रार्थना तर्ज– तालरिया मगरिया रे)

भजन (17)

सतगुरु देवाओ, सुण ले म्हारी विनती।
मैं दुखी बड़ो बेहाल, पिलाओ म्हाने ज्ञान जड़ी।।टेर।।
कर्म उपासना (ओ) कियो मैं बहु भारी–2।
यासे पायो नहीं विश्राम, पिलाओ म्हाने ज्ञान जड़ी।।1।।
गंगा यमुना (ओ) तीर्थ सारा नहा लियो–2।
यासे मिट्यो नहीं मन को संताप, पिलाओ म्हाने ज्ञान जड़ी।।2।।
माणक मोती (ओ) गुरु मैं तो मांगू नहीं–2।
म्हाने राखो चरणा रो दास, पिलाओ म्हाने ज्ञान जड़ी।।3।।
अगम अपारी (ओ) महिमा आपकी–2।
मैं आयो शरणाके माही, पिलाओ म्हाने ज्ञान जड़ी।।4।।
वेद महावाक्य (ओ) खोल समझाइयो–2।
यह ज्ञानानन्द री पुकार, पिलाओ म्हाने ज्ञान जड़ी।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (18)

अखण्डानन्द बोधाय, शिष्य सन्ताप हारिणे।
सच्चिदानन्द रुपाय तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
(गुरु गीता)

दोहा (18)

शरण आया गुरुदेवा, कीजिए बेड़ा पार।
आत्म तत्व दिखाये के, जल्दी करो भव पार।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यिमा	गुरु प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (18)

सतगुरु जी मैं आयो शरण तुम्हारी ओ।
मैं बालक अज्ञानी दाता लीजे अबके उभारी ओ।।टेर।।
भवसागर जल भरियो अति, जहाज डूबत जारी ओ।
और आसरो दिखे नाहिं, भव बंधन भारी ओ।।1।।
काम क्रोध लोभ लुटेरा, खावे खाल हमारी ओ।
विवेक वैराग्य साधन देवो, सुध आवे सारी ओ।।2।।
आप दयालू दाता स्वामी, जाणो सब घट की सारी ओ।
अवगुण माफ करो गुरुजी, मैं मूर्ख अनाड़ी ओ।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु दाता, सुणल्यो अरज हमारी ओ।
ज्ञानानन्द को निर्बल हेलो अबके लेवो सुधम्हारी ओ।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (19)

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहे।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहे।
(श्वे.उप. 1)

दोहा (19)

हम सब प्रसन्न रहे, करे ज्ञान प्रचार।
राग–द्वैष हौवे नहीं, मांगु बारम्बार।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यिमा	गुरु प्रार्थना(आशिर्वाद मंगलाचरण)	राग मारवाड़ी)

भजन (19)

ये शुभ आशीर्वाद हमारा, शिष्य होय मंगल तुम्हारा।।टेर।।
ईश्वर तुमको सद्बुद्वि देवे, मल विक्षेप हर लेवे।
आत्म अनुभव करावे, मिट जावे भ्रांति असारा।।1।।
हम सब को सुखी बनाओ, राग द्वेष को मिटाओ।
जीवन मुक्ति दिलाओ, हिलमिल करो प्रचारा।।2।।
है मालिक कृपा कीजे, विघ्न सारा हर लीजे।
निर्विघ्न सत्संग कीजे, करां आत्म दीदारा।।3।।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, आपको अर्ज सुनावे।
सबका ही हित चावें, आप करो जी निस्तारा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (20)

धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि पावितं ते कुलं त्वया।
यद विद्या बन्धमुक्त्या ब्रह्मीभवितुमिच्छसि।।
(विवेक चूड़ामणि श्लोक–52)

दोहा (20)

धन धन शिष्य तेरे को, उत्तम मति ली धार।
बचना चाहे मोह से, तेरा हो जयकार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी(आशिर्वाद मंगलाचरण) राग मारवाड़ी)

भजन (20)

तु सुणले वचन हमारा, शिष्य होय मंगल तुम्हारा।।टेर।।
धन्य धन्य बुद्धि तेरी, तू शरण गुरु की हेरी।
मिटज्या जन्म मरण की फेरी, तेरा सहज होगा निस्तारा।।1।।
दिन–दिन आगे बढ़ना, राग द्वैष नहीं करना।
पाप पुण्य नहीं भरना, हिल मिल करो प्रचारा।।2।।
बोलो मीठी वाणी, होवे न किसी की हानी।
यह निर्मलता की निशानी, इनका करो विस्तारा।।3।।
ज्ञानानन्द धन्य होई, कुल परिवार सब कोई।
जाँकी जननी करतार्थ सोई, सुत शिष्य तत्व धारा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

–:: गुरु चेतावनी अंग–3 ::–

श्लोक (21)

परीक्ष्य लोकान् कर्मचित्तान् ब्रह्माणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।।
(मु.उप.1–2–12)

कुण्डली (21)

सद्गुरु सांचा देवता, देवे आत्म ज्ञान।
दिखाये के निज रूप को, उगाव अनुभव भान।।
उगाव अनुभव भान, अविद्या दूर हटावे।
देवे ब्रह्म मिलाय, जम की जैल छूडावे।।
अमृत पिला इसको, मिटावे चारों खान।
ज्ञानानन्द सांचा, गुरु देवे आत्म ज्ञान।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग लावणी)

भजन (21)

आत्मज्ञान जगत के माही मोक्ष का गेला,
बिन सतगुरु मिलता नाहिं, बण्या बिन चैला।।टेर।।
तन मन धन ओ, शरण चरण की सेवा।
प्रसन्न होवे गुरुदेव, दिखावे निज देवा।।1।।
दर्शन लागे देव, बंधन कट जावे।
फिर नहीं आवे भव माही, अमर पद पावे।।2।।
जप तप नियम, व्रत तीर्थ करो सारा।
बिन सतगुरु निष्फल जान, श्रुति ने पुकारा।।3।।
अगम निगम कहे पुकार, संत की वाणी।
ज्ञानानन्द लेवो विचार, ज्ञान बिन हानि।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (22)

यतः परं कैवल्यं गुरुमार्गेण वै भवेत्।
गुरुभक्तिरतः कार्या सर्वदा मोक्ष कांक्षङक्षभी।।
(गुरु गीता श्लोक–91)

कुण्डली (22)

सतगुरु की सेवा करें, राख दृढ़ विश्वास।
अमरापुर सहजे मिले, छोड़ जगत की आस।।
छोड़ जगत की आस, जाण जगत सभी झूठा।
उलट देख ले आप, आनन्द मिलें अनूठा।।
महावाक्य खोलकर, ब्रह्म दीखावे पास।
ज्ञानानन्द गुरु में, राख नित दृढ़ विश्वास।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (22)

गुरुगम सैन पहचान, यो नर तन पावणो।।टेर।।
मानव तन सुर दुर्लभ जाणो, सम हो पाप–पुण्य तब मानो।
इसको पा आत्म पहचानो, मिट जाये खींचातान।।1।।
करम धरम अरू न्याय नीति, सद्गुरु से समझो थ्ये रीति।
पल–पल जावे उम्र बीती, जावे रेल समान।।2।।
ये तन जानो झूठ विनाशी, भाई बन्ध सब मोह की फांसी।
यामें उलझ सदा दुख पासी, बिगड़ जावे सब शान।।3।।
ज्ञानानन्द कहे गुरु वाणी, सोच समझ ले अब तू प्राणी।
आवागमन की हो जावे हानि, करले आत्मज्ञान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

कुण्डली (23)

सतगुरु म्हारा महरमी, मरहम देवे खोल।
ब्रह्म आत्मा समझावे, सांच तराजू तौल।।
सांच तराजू तौल, संशय सारा मिटावे।
कर्म बन्ध को काट, यम की जेल छुडावे।।
ज्ञानानन्द गुरु से, युक्ता युक्ती से बोल।
सतगुरु म्हारा महरमी, मरहम देवे खोल।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (23)

सुन ले रे मनवा गुरु शब्दों का शोर।
जन्म मरण का बंधन कट्ज्या,मिट्ज्या जम का जोर।।टेर।।
विवेक वैराग्य साधन साधो, सम दम आदि और।
मोक्ष की प्रबल इच्छा पर, दे दे अपना जौर।।1।।
महावाक्य गुरुदेव सुनावे, तापै करले घौर।
जीव ब्रह्म की कर ले एकता, वाच्यार्थ को छोर।।2।।
और द्वार सब छोड़कर, आ निज अपनी ठौर।
सर्व संशय पल में मिट्ज्या, मिटज्या मन की दौड़।।3।।
सद्गुरु से निज रूप परख ले, पकड़ ज्ञान की डोर।
ज्ञानानन्द फन्द सब कट्ज्या, मिल ज्या मुक्ति मोर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (24)

न सुखं वेद शास्त्रेषु न सुखं मंत्रयंत्रके।
गुरोः प्रसादादन्यत्र सुखं नास्ति महीतले।।
(गुरु गीता–87)

कुण्डली (24)

गुरु बिना संसार में, भला किसी का नांहि।
गुरु बिन जाने ना आप, गुरु बिना भय न जांहि।।
गुरु बिन भये ना जाहि, गुरु बिन मिले न किनारा।
आन देव को त्याग, सतगुरु को करले प्यारा।।
सुंगरा मानुस समझे, नुंगरा समझे कांई।
ज्ञानानन्द गुरु बिन, भला है किसी का नाहि।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (24)

बिन सद्‌गुरु नहीं उतरे रे, भव सागर से पार।।टेर।।
चाहे यत्न करो हजारा, तो भी उतरे नहीं भव पार।
काल बलि छोड़े नहीं लारा, साधन जावे बेकार।।1।।
नारद सुखदेव बलकारी, गुरू बिन चौरासी त्यारी।
आखिर में विपत्ति भारी, अन्त में लिया गुरु धार।।2।।
चाहे ब्रह्मा जैसा बन जावै, गुरु बिना बच नहीं पावे।
फिर–फिर चौरासी पावै, लो हृदय में विचार।।3।।
तन मन से सेवा कीजे, सद्‌गुरु चरणों में रीजे।
ज्ञानानन्द भव से तरीजे, सद्‌गुरु के आधार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (25)

गुरु वचन हृदया धरे, रहवे आज्ञा माहिं।
ज्ञानानन्द भव मांहि से, तिर जावे पल मांहि।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (25)

मनमुखी मूरख बण मत भाई, फेर पाछो पछतावेलो।
भवसागर में बहतो जाव, यम का जूता खावेलो।।टेर।।
झूठी जग में काया माया, ज्यांने देख ललचावेलो।
लख चौरासी ऊंडी खाई, मुश्किल मार्ग पावेलो।।
सांचा सतगुरु ज्ञान बतावे, जद वो मार्ग आवेलो।
मार्ग चाल गांव पूक ज्यां, जद तू निज घर पावेलो।।
जप तप योग नियम व्रत सब, जाय तीर्थां न्हावलो।
मनमुखी कर्म जावे सब निष्फल, श्रुति साख बतावलो।।
अगम–निगम और सतपुरूषां री, सांची बात लौ ल्यावलो।
ज्ञानानन्द गुरुमुखी बणजा, फेर जन्म नहीं आवेलो।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (26)

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।
(श्वेता.उप. 6–23)

कुण्डली (26)

सतगुरू सांचा देवता, इन सम दुजा नाहि।
सेवा करे चरणों की, मुक्त हो पल माहि।।
मुक्त हो पल माहि, संशय सभी ही खोवे।
फेर भव में न आय, ज्ञान का दीपक जोवे।।
होव उर में प्रकाश, अज्ञान तम हट जाहि।
ज्ञानानन्द गुरु सम, दूजा देव है नाहि।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु–चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (26)

गुरु शरण में हो जा रे, मत लगावे बार।
यों अवसर थारो जा रह्यो, पल–पल में बैकार।।टेर।।
सतगुरु संगी है तेरा, मेटे जन्म–मरण का फेरा।
दिखावे असली तू तेरा, मिट्ज्या कर्म करार।।1।।
चाहे यत्न करो हजार, गुरु बिन खावे यम की मार।
खोल सुनावे शब्द सार, ज्ञान बिन है बेकार।।2।।
जब कपाट कृपा से खोले, लाल पावे पट के ओले।
सांच तराजू तौले, पावै माल अपार।।3।।
तोहे ज्ञानानन्द समझावे, मत मूर्ख मूल गमावे।
क्यूं विरथा उमर बितावे, कर गुरु चरणा से प्यार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (27)

कृतघ्नस्य कुतः स्थानं कुतः सुखम कृतघ्निनः।
असदृशः कृतघ्नो हि कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।।
(महा. शान्ति पर्व–173/20)

कुण्डली (27)

विद्या पा सद्गुरु से, हो जावे फिर दूर।
दुख पावे भव माही, बणसी कूकर सूर।।
बणसी कूकर सूर, ऐसी नीच गति पावै।
लख चौरासी माहि, वो फिर–फिर गोता खावै।।
ज्ञानानन्द कृतघ्न, बुरा समझ महा क्रूर।
विद्या पा गुरुदेव से, हो जावे फिर दूर।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु–चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (27)

भाई सद्गुरु चरणा में रहज्यो, मत हीजे डाँवाडोल।
सार सेन सतगुरु से लेना, मत रे शंख डफोल।।टेर।।
गुरु बिन मिले न रस्ता, राम सकल में बसता।
गुरु बिन कोई नहीं लिखता, गुरु चरणामृत पियो घोल।।1।।
सत् स्वरूप है सांई, वां बिना खाली नहीं कांहि।
करो यत्न मिलने का भाई, मत रे मन मटोल।।2।।
चेतन सब जहां का राजा, वां बिन बजे न बाजा।
वो नहीं थका नहीं ताजा, देखो खूब टटोल।।3।।
जब हो सद्गुरु री महर, दिखलावे चेतन शहर।
ज्ञानानन्द आवे लहर, घट का ताला देवे खोल।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (28)

यत्र विश्वमिंद भाति कल्पितं रज्जूसर्पवत्।
आनन्दपरमानन्दः स बोधस्त्वं सुखं भवचर।।
(अष्टा. गीता–1–10)

दोहा (28)

सद्गुरु शरण में चालिए, कट्ज्या कर्म विकार।
मुक्त होवे पल माहीं, उतरे भव जल पार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु–चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (28)

मन तु गुरु मुखी ज्ञानी बन जा रे।
सतगुरु सेन समझ की देवे, ज्याने हृदय में दरजा रे।।टेर।।
या संसार मिथ्या माया, याने परी तज जा रे।
सत् स्वरूप है रूप तुम्हारो, ता माही तू रम जा रे।।1।।
भेद भ्रांति मेटले प्यारे, अध्यास सकल मिटा जा रे।
ना कोई जन्मे ना कोई मरता, भव का भय हटा जा रे।।2।।
एक ही देव सर्व में भासे, द्वैता दूर करा जा रे।
तुझसे भिन्न दूसरा नाही, चेतन माही समा जा रे।।3।।
सत्यानन्द जी गुरु समझावे, गुरु चरणा में हो जा रे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, जीवन मुक्ति पा जा रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (29)

सुरज सम गुरु जानिए, हरे तुम अंधकार।
ऐसे गुरु की सेवा सुँ, होवे आत्म दिदार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु–चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (29)

मन तु झुक जा रे, गुरु के आगे।
तन मन धन अर्पण कर, जन्म मरण भय भागे।।टेर।।
आलस छोड धार श्रद्धा ने, गुरु सेवा में लागे ।
माया त्याग जाग रे मनवा, ब्रह्म भाव अनुरागे ।।1।।
विवेक वैराग्य षट् संपत्ति, मुमुक्षता में आगे।
श्रवण मनन निधिध्यासन करके, जीव ब्रह्म एक सागे।।2।।
सतगुरु जैसा देव नाहीं, देखत ही काल भागे।
लौट जगत में फिर नहीं आवे, आत्म पद में लागे।।3।।
सत्यानन्द जी गुरु समझावे, अज्ञान नशा ने त्यागे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, ब्रह्मदर्शन लागे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (30)

उक्त साधन संपन्नो जिज्ञासुर्यतिरात्मनः।
जिज्ञासायै गुरुं गच्छेत्समित्पाणिर्नयोज्ज्वलाः।।
(स.वे.सा.सं.)

दोहा (30)

गुरु शरण में आय के, कर आत्म का विचार।
मिथ्या माया जगत है, अवगत आप अपार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु–चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (30)

ले ले म्हारा मनवा, गुरुगम सेन विचार।
गुरुगम की चतुराई देखो उतरे भव जल पार।।टेर।।
काया माया मिथ्या सारी, मतलब को परिवार
मिथ्या त्याग भाग नर जागो, पारब्रह्म की लार।।1।।
उलट देख ले आपको, भेद भक्ति को टार।
चेतन शुद्ध शामिल सब में, आर–पार इकसार।।2।।
दस–दोष और सात व्यसन से, जल्दी हो जा बाहर।
चार साधन ज्ञान के कीजे, याने लीजे धार।।3।।
भवसागर से पार उतर तो, गुरुगम चाबी संभार।
ज्ञानानन्द खोल घट ताला, वस्तु मिले अपार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (31)

परिवादी खरो भवति, श्वानै भवति निन्दकः।
परिभोक्ता कृमी भवति, कीटो भवति मत्सरी।।
(गुरु गीता)

दोहा (31)

गुरु शरणा में आय के, जे भजे नहीं राम।
ऐसे पापी जीव की, जमड़ा खींचे चाम।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु–चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (31)

सतगुरु बिना प्राणी, भोगे चारों खानी।।टेर।।
गुरु धार वचन नहीं माना, होवे दादुर और स्वाना।
आखिर नरक भुगताना, उठावे बहुत हानी।।1।।
गुरु बिन मिले नहीं गेला, सरे नहीं काम रति धेला।
हो जा सतगुरु का चेला, मौज मिले मनमानी।।2।।
सुखदेव नारद प्यारे, जो सतगुरु नहीं धारे।
आखिर में गए हारे ,तब गुरु बनाया ज्ञानी।।3।।
गुरु सत्यानन्द समझावे, निज ब्रह्म तत्व बतलावे।
ज्ञानानन्द विरला पावे, सुन सद्गुरु की वाणी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (32)

विद्वन्! मृत्युभयं जहीहि भवतो नास्त्येवमृत्युः क्वचित्।
नित्यस्य द्वयवर्जितस्य परमानन्दात्मनो ब्रह्मणः।।
भ्रान्त्या किंचिदवेक्ष्य भीतमनसा मिथ्या त्वया कथ्यते।
मां त्राहीति हि सुप्तवत् प्रलपनं शून्यात्मकं ते मृषा।।
(सर्ववेदान्त सार संग्रह)

दोहा (32)

धीरज धरले मानवी, तोय न खावै काल।
उलट देख ले आपको, शरणा गुरु की चाल।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु–चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (32)

ऐ मनवा गुरु गम धीरज धरो।
सत् शब्दा की करले खोजना, भवसागर से तरो।।टेर।।
ज्ञान का साधन धारण करके, जीते जी ही मरो।
मुख्य गौण का भेद समझ कर, अंतरंग धारण करो।।1।।
जीव ब्रह्म की कर ले एकता, सुन महावाक्य खरो।
वाच्यार्थ को दूर हटाकर, लक्ष्य में एक करो।।2।।
जीवन मुक्ति की लेकर युक्ति, विलक्षण होय विचरो।
विदेह मुक्ति तब स्वतः सिद्ध हो, नहीं चौरासी फिरो।।3।।
अनुभव आत्म आप अविनाशी, तीनों काल में खरो।
ज्ञानानन्द उलट आप में, फिर नहीं जन्म–मरो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी तर्ज – बरस–बरस म्हारा इन्द्रराजा)

भजन (33)

हरस हरस गुण गांवो रे गुरु का, गुण गांया बेड़ा पार तिरे,
चौरासी में नाहीं फिरे।।टेर।।
तन मन धन से करो धारणा, मनुष्य जन्म यूँ सफल करे।
मोह ममता में नहीं परे।।1।।
गुरु जी पधारे घर आनन्द होवे, आदि व्याधि काल टरे।
काम क्रोध मद लोभ मरे।।2।।
गुरु देवा का देवा जग में, श्रुति शास्त्र सब साख भरे।
अगम निगम भी मौन धरे।।3।।
रामकृष्ण से कौन बड़ा है, वे भी गुरु आगे मस्तक धरे।
वे भी गुरु की सेवा करे।।4।।
गुरु द्रोही ज्यांका मुख मत देखो, मुख देख्यां वांका पाप भरे।
जाए नरक में जीव परे।।5।।
गुरु बिन कर्म करे जो निष्फल, पशु योनि में जन्म धरे
जाए जंगल में चारों चरे।।6।।
ज्ञानानन्द गुरु के बिना रे, कौन जीव की विपत्त हरे।
बारी–बारी से जनम मरे।।7।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (34)

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्रह्माणो, निर्वेदमायान्नोस्त्यकृतः कृतेन।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्, समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।।

(मु.उप. 12)

दोहा (34)

सच्चा सद्गुरु खोज ले, ब्रह्मनिष्ठ विद्वान।
ज्ञानानन्द सेवा से, पावै पद निर्वाण।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (34)

थ्ये अब ज्ञानी सद्गुरु धारो।
ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय बिना, विरथा जावलो जमारो।।टेर।।
गाडर कण्ठ दिखे थनिया, जामे दुध नहीं लिंगारो।
ऐसे नकली गुरु से, क्यों जन्म पच पच हारो।।1।।
वाचक ज्ञानी फिरे भव जग में, ज्यांको छोड़ो लारो।
आप डूबे औरां ने डूबोवे, बांध अभिमान को भारो।।2।।
पाँच लक्षण हो जिस गुरु में, सो पार उतारन वारो।
तांके चरण कभी मत छोड़ो, वो ही सिरजन हारो।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु समझावे, मानो वचन हमारो।
ज्ञानानन्द ऐसे पाखण्डी गुरु पे, कभी चित्त मत डारो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (35)

क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः, स्वयं जुह्वत एकर्षि श्रद्धयन्तः।
तेषामेवेतांब्रह्मविद्यां वदेत् शिरोव्रतं विधिवत् यैस्तु चीर्णम्।।

(मु.उप.खण्ड.2, श्लोक 10)

दोहा (35)

ज्ञानी हो गुरुदेव तो, कर सेवा मन लाय।
ज्ञानानन्द सद्गुरु बिन, भव जल गोत्या खाय।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (35)

थ्ये अब सतगुरु जीवन धारो।
गुरु बिना कुण पार लगावे, डूब मरे मझधारो।।टेर।।
गुरु बिना कुण संगी जीव को, कुण देवे लो सहारो।
भाई बन्धु सगे सम्बन्धी, देखत करज्या किनारो।।1।।
धन दौलत और माल खजाना, ये आवन जावन वारो।
इनसे पार पड़े नहीं पुरी, छोड़ देश को लारो।।2।।
गुरु बिन ज्ञान मिले नहीं कबहूँ, नहीं मुक्ति को द्वारो।
गुरु बिन काम सफल नहीं होवे, यों ही पचपच हारो।।3।।
सांचा सद्गुरु खोज ले प्यारे, ब्रह्मज्ञानी मतवारो।
ज्ञानानन्द उन्ही पे वार दे, तन–मन जीवन सारो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (36)

सद्गुरु जी की शरण ले, भजो राम निष्काम।
कल्पतरू गुरुदेव है, पूर्ण होए सब काम।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (36)

चालो रे मनवा वीर, सतगुरु शरणा में।।टेर।।
सतगुरु शरण सदा सुखदाई, बहवे ज्ञान की गंगा माई।
सकल पाप धुल जावे पल माहिं, अंतर होवे साफ सुधीर।।1।।
पांचो भेद का होवे निबटारा, पांचो चोरों का चले नहीं चारा।
आत्मरूप परख ले प्यारा, कर जीव ब्रह्म में सीर।।2।।
जीवन मुक्ति का मिलज्या मौखा, जन्म मरण का मिटज्या धोखा।
प्रगट होज्या आनन्द अनोखा, फिर आवे नहीं भव की तीर।।3।।
ज्यों जल माहीं बूंद समाना, त्यों पावै ला पद निर्वाणा।
ज्ञानानन्द नहीं आना जाना, मिटज्या रे लेख लकीर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (37)

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम् दैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
(गुरु गीता)

दोहा (37)

परम देव गुरुदेव जी, काटे भव की पास।
ज्ञानानन्द परखावे, आत्मा अपने पास।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (37)

सतगुरु दाता भाई परम विधाता।
जीवन नैया भव से पार लगाता।।टेर।।
सद्गुरु स्वामी है उपकारी।
सत्य ज्ञान बताय के करे भव पारी।।1।।
सतगुरु सम वैद्य न जग में।
जन्म मरण रोग मेटे पल में।।2।।
तन मन धन सेवा करो दिन राती।
जल जावे हिवड़े वाली बाती।।3।।
जो जन लेवे सद्गुरु का शरणा।
उनका नही होवे जन्म और मरणा।।4।।
ज्ञानानन्द सद्गुरु सम नहीं दानी।
सतगुरु देवे जीवन मुक्त निशानी।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (38)

ज्ञानं विज्ञानसहितं लभ्यते गुरु भक्तितः।
गुरोः परतरं नास्ति ध्येयोऽसौ गुरुमार्गिभिः।।
(गुरु गीता श्लोक 59)

दोहा (38)

भवसागर के मांहिने, रू जीवन रूपी नाव।
ज्ञानानन्द केवटिया, तारे भव से आव।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (38)

मानव नाव का रे म्हारा सतगुरु है खेवणिया।।टेर।।
बड़े भाग्य से मानव तन मिलिया, सोवे मत रे जाग।
ये तन बार–बार नहीं मिलसी, हरि भक्ति में लाग।।1।।
योग युक्ति गुरु देव बतावे, ज्ञान वैराग्य साध।
श्रवण मनन निधिध्यासन करके, संशय का कर दे बाध।।2।।
भवसागर से चालिए, जीवन मुक्ति लेए।
विदेह देश में जाए रहो, काल फेर नहीं खाए।।3।।
सतगुरु जी की कृपा होवे, भय भ्रम मिट जाए।
ज्ञानानन्द सतगुरु केवटिया, देवे नांव पहुंचाय।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (39)

गुरुर्देवो गुरुधर्मा गुरुर्निष्ठा परं तपः।
गुरोः परतरंनास्ति सत्यं सत्यं वरानने।।
(गुरु गीता)

दोहा (39)

सब मिलता गुरु शरण में, ज्यो इच्छा मन होय।
ज्ञानानन्द तीर्थ वहां, सकल पाप दे धोय।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग आसावरी)

भजन (39)

सतगुरु शरण सदा सुख दाई।
सद्‌गुरु चरण अमीरस पीले, भव बंधन टल जाई।।टेर।।
इन चरणों में अड़सठ तीर्थ, रहती गंगा माई।
ब्रह्मा रहते, विष्णु रहते, रहते आद गोसाई।।1।।
इन चरणों में रामकृष्ण रहते, रहती विदेह की जाई।
चरणा मांहि परम सुख उपजे, तीनों ताप नशाई।।2।।
इन चरणों में सुर नर मुनी रहवे, ताँ काल गति नहीं पाई।
शरण छोड़ और को ध्यावे, जाय पड़े भव माहीं।।3।।
और यत्न हजारों कर ले, गुरु बिन गति न पाई।
ज्ञानानन्द मैं कैसे गाऊं, नेति नेति कथ गाई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (40)

गुरुभाव परं तीर्थं अन्यतीर्थं निरर्थकम्।
सर्वतीर्थाश्रयः देविपादाङ्गुष्ठं च वर्तते।।
(गुरु गीता)

दोहा (40)

तन मन अर्पण किजिये, चरणों में चित्त देय।
ज्ञानानन्द सेवा से, अमृत प्याला पेय।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग आसावरी)

भजन (40)

गुरु चरणा में चित्त दीजे।
तन मन धन अर्पण कर गुरु के, अमृत प्याला पीजे।।टेर।।
धन दौलत और माल खजाना, याने देख मत रीझे।
आशा इनकी छोड़ दे भाई, जीवन मुक्ति लीजे।।1।।
भाई बन्ध और कुटुम्ब कबीला, इनमें चित्त मत दीजे।
बाज चड़ी को आकर मारे, धोखा में मत रीजे।।2।।
पंछी आय डाल पर बैठे, ये शिक्षा ले लीजे।
ड़ाल छोड़ उड़ जावसी, सोच समझ पग दीजे।।3।।
सतगुरु शरणा जाकर भाई, खोज आपकी कीजे।
ज्ञानानन्द मान मन मेरा, उलट आप में रीजे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (41)

तद्विद्धि प्राणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः।।
(गीता–4/34)

दोहा (41)

गुरुवचन हिवड़े धरता, रहवे सेवा माय।
ज्ञानानन्द ऐसे को, कांहु लोक डर नाय।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग आसावरी)

भजन (41)

साधो भाई गुरु कहे ज्यो ही कीजे।
सार–सार को धारण करना, मन मानी मत कीजे।।टेर।।
तन मन धन से सेवा करना, चरणों में चित्त दीज्ये।
कुमार्ग में पग नहीं देणा, सांची बात सुन लीजे।।1।।
दो दिन का ये धन और जन है, देखत ही तन छीजे।
कांई गर्व करे नर अन्धा, काल गति लख लीजे।।2।।
संत समागम हरि कथा रे, ज्ञान का अमृत पीजे।
जन्म मरण में फेर ना आवे, अभय पद ले लीजे।।3।।
ये अवसर है मानव तन का, राम मिले सो ही कीजे।
ज्ञानानन्द फेर नहीं आणा, भव का मूल तज दीजे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (42)

निर्विकल्पं परं ब्रह्म यत्स्मृत्वैव निष्ठया।
ते वै धन्या विमुक्ताश्च जीवन्तोऽपि बहिर्दशाः।।

दोहा (42)

दयालू सतगुरुदेव जी, बंधन देवे टाल।
ज्ञानानन्द भव जालसु, मुक्त करे तत्काल।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (42)

सतगुरु की शरण में जाणा है, जीवन मुक्ति पाणा है।।टेर।।
मल विक्षेप को दूर हटाके, विवेक वैराग्य साधन साध के।
मुमुक्षता का भाव बढ़ाणा है।।1।।
श्रवण मनन निधिध्यासन धारो, तत् तव पद का अर्थ विचारो।
लक्ष्य में एक लखाणा है।।2।।
दृढ़ ब्रह्म का होवे ज्ञाना, ज्यां से पद पावे निर्वाणा।
फिर भव में नहीं आणा है।।3।।
ज्ञानानन्द चेत मन मेरा, आत्म पद में करले डेरा।
अब नहीं कोई लेणा देणा है।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (43)

यस्यामतं तस्यमतं मतं यस्य न वेदसः।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्।।
(केनोउप. 2/3)

दोहा (43)

अखण्ड सच्चिदानन्द घन, मन वाणी से पार।
अखिल का आधार आत्म, गुरु मुख लये विचार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी तर्ज – आरती आठों याम होती)

भजन (43)

अरे ब्रह्म को लिखा नहीं जाता–2
हो कोई माहिर महरमी, वो गुरुगम से पाता।।टेर।।
पांव से चला नहीं जाता–2
खुब करो कोशिश हाथ से पकड़ नहीं आता।।1।।
कान से सुना नहीं जाता–2
खूब करो कोशिश, नैण से निरख नहीं पाता।।2।।
मन से मनन नहीं होता–2
खूब करो कोशिश बुद्धि में निश्चय नहीं आता।।3।।
मन बुद्धि से बाहर चेतन कोई–कोई लिखता–2
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मोक्ष पद पाता।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (44)

श्रोत्रियोऽवृजिनोऽकामहतो यो ब्रह्मवित्तमः।
ब्रह्मण्युपरतः शान्तो निरिन्धन इवानलः।।

(विवेक चूडा. 34)

दोहा (44)

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ दो, लक्षण गुरु का जाण।
तकि सेवा कीजिए, पल में हो कल्याण।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग चलत मारवाड़ी)

भजन (44)

सद्गुरु बिना प्राणी, जीव जो अनाथ है।
गुरु मिल जाय तो भाई, बन जाये बात है।।टेर।।
ब्रह्मनिष्ठ और श्रोत्रिय, लक्षण गुरु का गात है।
पूर्ण गुरु मिल जाये तो, भव से तर जात है।।1।।
नगर दूरा मार्ग झीणा, गोता घनेरा खात है।
भवसागर में मारे बछेड़ा, घोर अंधेरी रात है।।2।।
ब्रह्म ज्ञान होवे नहीं गुरु बिन, सराय रह जात है।
जन्म मरण छूटे नांहि, चौरासी में जात है।।3।।
योग कर्म सब जप तप भाई, गुरु बिन निष्फल जात है।
लोक–लोक में फिरे भरमता, आगे यम का घात है।।4।।
सांचा सद्गुरू मिले नहीं तो, जीवन बर्बाद है।
ज्ञानानन्द गुरु को धारो, मुक्ति मिल जात है।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (45)

तत्र भागवतान् धर्मान् शिक्षेद् गुर्वात्मदैवतः।
अमाययानुवृत्त्या यैस्तुष्येदात्मात्मदो हरिः।।

(भा.अ.3 श्लो. 22)

दोहा (45)

सद्गुरु की सेवा करो, छोड़ मोह जंजाल।
ज्ञानानन्द अवसर को, देवे मत तू टाल।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मोहिनी)

भजन (45)

सद्गुरु जी से प्रीत लगाल्यो रे, काट मोह जंजीर।।टेर।।
ये जग झूठा जाण तमाशा, कर्म विकर्म चौपड़ पासा।
छोड़ मिथ्या मन की आशा, हारे मत बाजी धीर।।1।।
भाई बन्धु कुटुम्ब परिवारा, माया जाल में उलझावे सारा।
यामैं फंस कर सब जग हारा, राजा रंक फकीर।।2।।
सद्गुरु महिमा अगम अपारा, श्रुति स्मृति वेद पुकारा।
शरण आये को लेय उबारा, फिर न आवे भव की तीर।।3।।
सद्गुरु सबका स्वामी, परब्रह्म अर्न्तयामी।
ज्ञानानन्द करो गुलामी, गुरु पीरो का पीर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (46)

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।
(गीता 4.34)

दोहा (46)

सद्गुरु की सेवा करो, प्रसन्न गुरुवर मान।
आत्मज्ञान तोय मिले, छुट जावै जम ड़ाण।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मोहिनी)

भजन (46)

सद्गुरु से ज्ञान लिखाले रे, उतरे भव जल पार।।टेर।।
कर्मकाण्ड कर–कर के थाक्या, अभिमान मन में राख्या।
अपने आप में कभी न झांक्या, पच–पच मर्‍या गंवार।।1।।
गुरु ज्ञान का साधन बतावे, ज्याने जो कोई समझ में लावे।
दृढ़ आत्म अनुभव पावे, काल कर्म सब जार।।2।।
मोह ममता की बेड़ी कटज्या, ब्रह्म माहिं सुरती डटज्या।
बन्धन का कारण हटज्या, कर आत्म का दीदार।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु दाता, यूँ समझावे सत् की बांता।
ज्ञानानन्द तारे नरका जाँता, अपनी बांह पसार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (47)

इति गुरुवचनाच्छ्रुतिप्रमाणात्परमवगम्य।
स्वत्त्वमात्मनियुक्त्या।।
प्रशमतिकरणः समाहितात्मा।
क्वचिदचलाकृतिरात्मनिष्ठतोऽभूत्।।
(विवेक–चूडामणि)

दोहा (47)

तन अमोलक पा मानव, मुक्ति का कर विचार।
बार–बार न पावसी, मोनव मोक्ष द्वार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	गुरु चेतावनी	राग मोहिनी)

भजन (47)

हेली ये करले गुरु जी की सेवा री, सेवा में मेवा उपजे।।टेर।।
सद्गुरु सेवा निश दिन करना, करना आठूयाम।
भव का भय सब मिट जावे, पावे आदूधाम।।1।।
ये जग झुठी माया कहिये, जादु खेल समान।
देखते ही छुप जाये, ज्यों संध्या में भान।।2।।
सुन्दर रूप देख मत फूले, इनका नहीं विश्वास।
काल कर्म तोय खावसी, ये गाल गले में पास।।3।।
परम धाम में चाल बसो रे, मोह ममता को त्याग।
ज्ञानानन्द सब छोड़ के, आत्म पद में लाग।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (48)

तस्मै स विद्वानुपसन्नायसम्यक्प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय।
येनाक्षरं पुरूषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम।।
(मुण्डकोपनिषद 1.2.13)

दोहा (48)

सद्गुरु शरण के माहीं, बहे ज्ञान की गंग।
ज्ञानानन्द सेवा से, धुल जावे मल जंग।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (48)

ऐ मन सद्गुरु का चरणा में, बहवे ज्ञान की गंगा।
जो कोई आवे यां चरणा म, मन हो जावे चंगा ।।टेर।।
सद्गुरु की सेवा करबा से, धुलज्या दोष मल जंगा।
चित् चंचलता दूरी होज्या, लागे राम का रंगा।।1।।
विवेक जागे ऊर के माहिं, मोह हो जावे भंगा।
चारों साधन सम्पन्न होज्या, हो सदगुरु के संगा।।2।।
जब सद्गुरु महावाक्य सुणावे, श्रवण कर अंगी अंगा।
मिटे असम् विपरित भावना, छूटे सब ऊर दंगा।।3।।
जीवन मुक्ति मिल ज्या पल में, छूटे माया का संगा।
ज्ञानानन्द विदेह मोक्ष में, आवागमन हो भंगा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (49)

आत्मनो गुरुरात्मैव पुरूषस्य विशेषतः।
यत्प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रेयोऽसावनुविन्दते।।
(अव. गीता)

दोहा (49)

परम गुरु है सौ आत्मा, जड़ी सु ताँका ज्ञान।
ज्ञानानन्द काट देए, जन्म–मरण दुख खान।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी तर्ज– करले म्हारा मनवा गुरु चरणा को आधार)

भजन (49)

पीले रे मनवा, गुरुगम ज्ञान जड़ी।
जन्म–मरण का रोग मिटज्या, कटज्या कर्म कड़ी।।टेर।।
ज्ञान जड़ी अमोलक कहिए, चौड़े धाड़े पड़ी।
बण अधिकारी पान करता, अविद्या देज्या दड़ी।।1।।
तत्त्वमसि गुरु देव सुनावे, सुणले याही घड़ी।
विचार पट से छाण ले रे, वाच्य लक्ष्य लड़ी।।2।।
दस दोष और सात दुर्व्यसन, परैज यांका कड़ी।
पथ्य अपथ्य समझ गुरु से, पूर्ण पार पड़ी।।3।।
सद्गुरु दाता वैद कहिये, दुनिया मरीज खड़ी।
ज्ञानानन्द गुरु शरण में, मुक्ति हो याहीं घड़ी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (50)

गुरु बिना होवे नाहीं, शुद्ध आत्मा का बोध।
ज्ञानानन्द सेवा से, करिए निज तत्व शोध।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी तर्ज– गुरु बिन ज्ञान मिले ही कोनी.....)

भजन (50)

सद्‌गुरु बिना मुक्ति मिले ही कौन्या।
जल बिन प्यास बुझे ही कौन्या।।टेर।।
दुग्ध से माखन बने बहु सारा।
पर जावण बिन जमे ही कौन्या।।1।।
सूत एक वस्त्र बने अनेका।
पर दर्जी बिन सिले ही कौन्या।।2।।
मिट्‌टी का बर्तन बनता नाना।
पर कुम्हार के बिना घड़ ही कौन्या।।3।।
सोना एक गहना अनेका।
पर सोनी बिना घड़े ही कौन्या।।4।।
अगम निगम में लिखी लेखनी।
पर अर्थ बिना मतलब कौन्या।।5।।
ज्ञानानन्द सुन गुरु की बांता।
गुरु बिना भव से तिरे ही कौन्या।।6।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (51)

स विश्वकृद् विश्वविदात्म योनिर्ज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः।
प्रधानक्षैत्रज्ञपतिः गुणेशः संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः।

(श्वेताश्वरोपनिषद)

दोहा (51)

मनमुखी बणे कागला, गुरुमुख समझो हंस।
नीर–क्षीर विवेक कर, पावे गुरु का वंश।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी गुरु चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (51)

मानव कर सतगुरु हेत, चेत निज आत्म पावो रे।
आत्म पावो रे, थ्ये ब्रह्म लिखावो रे।।टेर।।
जन्म जन्म की मूल वासना, ज्यांने दूर हटोवो रे।
चेतन शुद्ध शामिल है सबमें, ता में सूरत जमावो रे।।1।।
ये साधन है राम मिलन का, सतगुरु जी से लावो रे।
सेवा सार रखो थ्ये हरदम, पल भर ना बिसरावो रे।।2।।
माया अविद्या कर्म वासना, ज्यां रा पता लगाओ रे।
जड़ चेतन की गांठ खोलदे, फिर भव में नहीं आवो रे।।3।।
सत्यानन्द जी सदगुरु दाता, वांने शीश निवावो रे।
ज्ञानानन्द वचन मान के, भव से पार तिर जावो रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—: गुरु महिमा का अंग—4:—

श्लोक (52)

येनाक्षरं परं ब्रह्म ज्ञापितं परमात्मने।
तस्मै श्रीगुरवे नित्यं नमो ज्ञानप्रदायिने।।

दोहा (52)

भाग भला गुरु पाय के, अविद्या दिनी नसाई।
जिसको बाहिर ढूंढता, सो घट भीतर पाई।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग चलत मारवाड़ी)

भजन (52)

ओ म्हारा सतगुरु है धणी रे, म्हारा सतगुरु है धणी।
सब कुछ उनपे वार दिया रे, मिलगी मुक्त मणी।।टेर।।
काया नगर का भेद बताया, ज्यां का और छ धणी—2।
मोह ममता की डोर काट दी, तोड्या ताप तणी।।1।।
तीन पांच का किया पसारा, यामे पच्चीस छ जणी—2।
अष्ट कमल और षट् बावन की, घाट्या छ घणी।।2।।
भेद भ्रांति पांचो मेट्या, दे दे शब्दा की अणी—2।
करम—भरम म्हारे अब नहीं लागे, ज्यूं जल कमल प्रणी।।3।।
सतगुरु जी सरदार हमारे, वांकी गरिमा घणी—2।
ज्ञानानन्द चरणो के मांहि, मिलग्या आप धणी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (53)

कर उपकार गुरुदेव ने, दीना आत्म ज्ञान।
ज्ञानानन्द भरम हटा, पद पाया निर्वाण।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग चलत मारवाड़ी)

भजन (53)

सद्गुरु जी ने कीना उपकार, ज्ञान हमको दे दीना।।टेर।।
सामवेद का महावाक्य सुनाया, तत् त्वम् पद का अर्थ बताया।
वाच्यार्थ लक्ष्य समझाया, खोल बताया सार।।1।।
पांचकोष का राज दिखाया, ज्ञान भूमिका सात बताया।
पांचभेद और भ्रान्ति मिटाया, शत्रु पांचा न मार।।2।।
तीनों गुणों से आगे कीना, तूरिया पद को जाकर चीना।
अभय पद में हो गया लीना, अब मिटगी सब तकरार।।3।।
ज्ञानानन्द गुरुदेव जी महिमा, अगम—निगम ने लिखी गरिमा।
आगे पीछे नहीं कोई सीमा, मैं खुद जांऊ बलिहार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (54)

ज्ञानानन्द पाया निधि, अन्न धन का भण्डार।
कृपा कीनी गुरूदेव ने, होया मंगलाचार।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग चलत मारवाड़ी)

भजन (54)

सद्गुरु भलो कियो उपदेश, सत की राहि बतादी रे
राहि बतादी रे, भरम की भीत डीगादी रे।।टेर।।
अनादि काल से सोया जीवड़ा, म्हारी नींद उड़ादी रे।
मैं हूं कौन कहां से आया, या सांच लिखादी रे।।1।।
परा से पार अगम से आगे, ज्यांकी खोज करादी रे।
मैं हूं उसमें वो है मुझमें, दूजा भेद मिटादी रे।।2।।
केवल पद कोई विरला जाने, वांकि निगे करादी रे।
कहना सुनना दोन्यू नांहि, मुख मौन लगादी रे।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु मिलिया, सारी भूल मिटादी रे।
ज्ञानानन्द निज अनुभव की, असली बात बतादी रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (55)

सदगुरु कृपा सु मिल्या, व्यापक ब्रह्म अपार।
ज्ञानानन्द ठहर गया, लीना अनुभव धार।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग चलत मारवाड़ी)

भजन (55)

सद्गुरु भलो कियो उपकार, भव से पार लगाया जी।
पार लगाया जी, भव से पार तराया जी।।टेर।।
मोह जाल में उलझ–उलझ, कई जन्म गंवाया जी।
जड़ चेतन की गांठ खोल दी, निज रूप लिखाया जी।।
चार साधन ज्ञान का, गुरु खोल बताया जी
तत्त्वमसि उपदेश सुनाकर, म्हारो भरम मिटाया जी।।
आदू धाम अगोचर महिमा, सत् साख लगाया जी।
आठो पहर अमृत बरसे, ज्यांरा पान कराया जी।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलिया, मोहे सेन बताया जी।
ज्ञानानन्द समझ अनुभव में, दूजा नहीं पाया जी।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (56)

आत्मा पूरण राम है, निश्चय लीनी धार।
ज्ञानानन्द कृपा भयि, कण–कण में इकसार।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (56)

मैं तो जाण लियो रे भाई, आत्मपूरण राम है।।टेर।।

मैं क्यों बाहिर को जाऊं, क्यों मैं जड़ को ध्याऊं।
मैं चेतन में मिल जाऊं, जिसका मेरे उर में ठाम है।।1।।

बाहिर भीतर वोही, निज चेतन है सोई।
वां बिन खाली न कोई, व्यापक सब धाम है।।2।।

गुरु महावाक्य सुणाया, ज्यानें अर्था सहित बताया।
सारा द्वैत बिलाया जी, पूर्ण भया विश्राम है।।3।।

गुरु सत्यानन्द समझाया, निज अपना बोध कराया।
ज्ञानानन्द यूं गाया जी, सफल हुआ सब काम है।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (57)

सांकुशा विषयतृप्तिरियं तृप्तिर्निरंकुशा।
कृतं कृत्यं प्रापणीयं प्राप्तमित्येव तृप्यति।।

(अध्याय 4 श्लोक 42 पंचदशी)

दोहा (57)

महर करी गुरुदेव ने, दीना आत्मज्ञान।
भव बंधन सब मिट गया, उग्या अनुभव भान।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (57)

म्हारा सत्गुरु कर दिया महर, भव से तार दिया।।टेर।।

सत् असत् विवेक कराया, आत्म ब्रह्म एक लिखाया।
सुना के महावाक्य टेर।।1।।

मल विक्षेप आवरण हटाया, पांचो कपड़ा साफ धुलाया।
लागी नहीं कुछ देर।।2।।

जीव भाव की काटी फांसी, अहम् ब्रह्म सदा सुख राशि।
दिखाया चेतन शहर।।3।।

ज्ञानानन्द कहे गुरु उपकारा, भूलूँ नहीं मैं बारम्बारा।
मिटाया चौरासी का फेर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (58)

सद्गुरोर्देवाः नमस्यन्ति, सत् सत् नमाम्यहम्।
सत्यानन्द गुरुदेवास्ति, स्वरूपज्ञानं प्रदाम्यहम्।।

दोहा (58)

दीपक वत गुरु सो करे, माया भ्रम तम नाश।
ज्ञानानन्द सांचा गुरु, कर दे उर प्रकाश।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग चलत मारवाड़ी)

भजन (58)

म्हाने हीवड़े में बस गया ज्ञानी गुरुदेव।
आशापूर्ति गुरुमूर्ति देवे आत्म भेव।।टेर।।
पपीहा के मन में, सुहाती पीवन में।
ऐसे म्हारे मन में, भायो गुरुदेव।।1।।
बछड़ा ने गाय बेटा ने माँई यूँ समझयो भाई।
शिष्यों के मन में गुरुदेव।।2।।
पतिव्रता नारी पीव को निहारी।
दूजा नहीं धारी, पति बिन प्राण तज देव।।3।।
फूलों की बास में, भँवरा ज्यों आस में।
नित जावे नाश में, जन्म–मरण फिर लेव।।4।।
ज्यूं जल बिन मीना, त्यूं गुरु बिन नहीं जीना।
ज्ञानानन्द कह दीना, गुरु बिन रह्यो न जाव।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (59)

छिद्यन्ते हृदयग्रंथिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।।
(मुण्डकोपनिषद 2.2.8)

कुण्डली (59)

घर पर ही गुरुदेव जी, दर्शन दीय आयी।
दूर किये मल जंग को, आत्म देव लिखायी।।
आत्म देव लिखाई, अब मिटी भव की त्रासा।
खुद ही आनन्द में, मिट गयी सारी आशा।।
मिट गयी खींचातान, मति में निश्चय आयी।
ज्ञानानन्द को गुरु, अब दर्शन दीय आयी।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा तर्ज– लख चौरासी में भठकत–भठकत..)

भजन (59)

सतगुरु यूँ समझाया ये।
अविद्या मेटी जीव की, निज स्वरूप लिखाया ये।।टेर।।
काम क्रोध मद लोभ लुटेरा, याने दूर हटाया ये।
शील संतोष दया भाव, म्हारे उर में लाया ये।।1।।
विवेक वैराग्य षट् सम्पत्ति मुमुक्षता बताया ये।
श्रवण मनन निधिध्यासन कर पार ब्रह्म दर्शाया ये।।2।।
जड़ चेतन की ग्रंथि माहिं, जीव स्वरूप भूलाया ये।
सत असत् का निर्णय करके, भव बन्धन छुड़ाया ये।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलग्या, यूँ समझाया ये।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मोक्ष पद पाया ये।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (60)

अपरोक्षात्मविज्ञानं शब्दादेव न संशयः।
संसारकारणं ज्ञानं तत्त्यज्यं भास्कर।।
(भागवत पुराण)

दोहा (60)

लगन लगी गुरुदेव से, छुटे नहीं दिन रात।
अपरोक्ष आत्म पाया, मिट गयो यमरो घात।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग कवाली)

भजन (60)

प्रीत लगी गुरुदेव से, देव अनोखा पा लिया।
राग–द्वेष सब छुट गया, ज्ञान गंगा में नहा लिया।।टेर।।
मल विक्षेप आवरण तीनो, अन्तःकरण से छूट गया।
माया अविद्या मिटी उपाधि, अहम् ब्रह्म खुद हो गया।।1।।
परोक्ष को तो भेद मिटा, अपरोक्ष में मैं आ गया।
दृढ़ अपरोक्ष का निश्चय हुआ, भव बंधन सब खो गया।।2।।
ज्ञान भान जब से उगिया, अज्ञान अंधकार मिट गया।
ज्यूँ रज्यू में सांप का रे, भ्रम सारा दूर गया।।3।।
ज्ञानानन्द निज ज्ञान से, अमर सैज पर सो गया।
ये उपकार गुरुदेव का शीश चरणों में रख दिया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (61)

एवं गुरुपासेननैव भक्तया विद्याकुठारेण छित्त्वा धीरः।
विवृश्य जीवाशयं प्रमत्तः सम्पद्य चात्मानमथ त्यजास्त्रम्।।
(श्री भाग. स्कन्ध 10)

दोहा (61)

सद्गुरु के प्रताप से, मिट्या विषय विकार।
अहम्ता ममता न रही, दुर्व्यवसन से बहार।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (61)

सतगुरु जी कर दिया महर, भव से तारन की।
तारन की उभारन की।।टेर।।
सतगुरु दाता भेद मिटाया, सार बताई सब सारन की।
काम क्रोध मद लोभ लुटेरा, युक्ति बताई याने मारन की।।
अहम्ता ममता विषय वासना, सहन दिखाई याने जारन की।
आत्म ज्ञान गुरु देव बताया, राह बताई बन्धन काटन की।।
आनन्दघन में डेरा दीना, इच्छा नहीं भव में आवन की।
ज्ञानानन्द उपकार गुरु का, निश्चय किया तन–मन वारन की।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (62)

सद्गुरु ने दया की, पाया परमानन्द।
अविद्या पर्दा ना रहा, मिटाया सभी फन्द।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (62)

सद्गुरु देव दिखाया रे,
भूल मिटी इस जीव की परमानन्द पाया रे।।टेर।।
भिन्न–भिन्न करके सदगुरु स्वामी, सारा भेद समझाया रे।
लक्ष्यारत में किन्हीं एकता, दुई दूर हटाया रे।।1।।
अर्थ सहित महावाक्य वेद का, सतगुरु सुनाया रे।
जीव ब्रह्म की हुई एकता, जीवन मुक्त रहाया रे।।2।।
तीन दौष अन्तर का भारी, जाने दूर भगाया रे।
तीन ताप की हो गयी हानि, सर्व बन्धन छुड़ाया रे।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु दाता, जीव की जैल छुड़ाया रे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, महिमा गाया रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (63)

विचारतीक्ष्णतामेति धीरः पश्यति परंपदम्।
दीर्घसंसाररोगस्य विचारो हिमभेषजम्।।
(योग वाशिष्ठ)

दोहा (63)

सद्गुरु उत्तम वेद है, मेटत भव की खेद।
आयो शरण आपकी, लेय बड़ी उम्मेद।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (63)

म्हारा सतगुरु को उपकार, भूलूं नहीं एक घड़ी।।टेर।।
सद्गुरु दाता वैद्य बण आया, नाड़ी पकड़ कर रोग बताया।
घोट पिलाया ज्ञान जड़ी।।1।।
जन्म–मरण का हेतू कर्म था, बिन समझिया बड़ा भ्रम था।
सतगुरु काट्या कर्म कड़ी।।2।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्त तीनों, इनको छोड़ तुरिया पद चीनों।
ब्रह्म आत्मा एक मड़ी।।3।।
ज्ञानानन्द सद्गुरु जी री महिमा, अगम निगम में लिखी गरिमा।
नैति–नैति कही चरण पड़ी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (64)

जाणत जाणत जाणयो, मिटगी सगरी भूल।
सद्गुरु की कृपा भई, छूट गये यम शूल।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (64)

सद्गुरु निज तत्व लिखाया रे।
जाणत जाणत जाणइयो रे, सारी भूल मिटाया रे।।टेर।।
मैं सुतो अज्ञान नींद में, सद्गुरु चेत कराया रे।
जागत–जागत जागईयो, सारा स्वप्न विलाया रे।।1।।
जीव ब्रह्म का भेद मिटा, चेतन इक थाया रे।
मिटत–मिटत सब मिट गया, आत्म अपरोक्ष दर्शाया रे।।2।।
श्रुति युक्ति अनुभूति से, अपना बोध कराया रे।
सर्व दुखों की होगी निवृति, परमानन्द पाया रे।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलिया, यूँ समझाया रे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, महिमा मंगल गाया रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (65)

मुकुन्दं सद्गुरुं नत्वा मुरारेश्रवांघ्रिपंकजम्।
विचाररूपपुष्पाणां मालां वहामि तत्त्वनाम्।।

दोहा (65)

पुण्य परबल उदय भया, मिटग्या तीनों ताप।
नेह लाग्या गुरुदेव सु, जाण्या आप्यां आप।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (65)

हां रे भाग मेरा चौखा रे,
सद्गुरु जी मिलग्या, आया मौका रे, भाग मेरा चौखा रे।।टेर।।
बहुत दिनों से भटकत–भटकत, भव में खाया झोंखा रे।
महर करी म्हारा सद्गुरु स्वामी, मन, विषयों से रोका रे।।1।।
अशुभ कर्मा न कर कर नाना, योनि माहिं भौका रे।
जगत छोड़ चला निज अपना, आनन्द, आया अनोखा रे।।2।।
मैं डूब रियो भव सागर माहिं, सतगुरु लाया नौका रे।
बण अधिकारी बैठ जहाज में, मिटग्या धोखा रे।।3।।
सतगुरु आया, भक्ति ल्याया, मिट्या कर्म का टोटा रे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मुक्ति का, मिलिया मौका रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (66)

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु शिव, गुरु ही देव निरंजन।
गुरो ही अपना आत्मा, गुरु ही भव दुःख भंजन।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग हरियाणा)

भजन (66)

सद्गुरु सामर्थ दीन दयालु, सुष्टि रचना रचाता है।
खेल रचाये आप रहे न्यारा, सर्व साक्षी कहलाता है।।टेर।।
ब्रह्मा रूप धर सतगुरु दाता, सबका सृजन कर्ता है।
नाना जीव रचा के स्वामी, नाना खेल दिखाता है।।1।।
विष्णु रूप धर सतगुरु दाता, सब का पालन करता है।
चीटीं को कण हाथी को मण, जगह–जगह पहुंचाता है।।2।।
रुद्र रूप धर सतगुरु दाता, दुष्टो को मार भगाता है।
है कोई सतवादी जिज्ञासु, बेड़ा पार लगाता है।।3।।
सतगुरु दाता इन्द्र सम होकर, ज्ञान बारिस बरसाता है।
मम रूप जिज्ञासु पपीहा, सारी प्यास बुझाता है।।4।।
सत्यानन्द जी सतगुरु दाता, दीन बन्धु कहलाता है।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, जीवन मुक्ति पाता है।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (67)

नष्टं गुरोश्रव रामस्य साधुसंगो यदा भवेत्।
तदात्मानं विजानाति जीवो भोगान् जहाति च।।

दोहा (67)

महर करी गुरुदेव ने, अपरोक्ष दिया ज्ञान।
रज्जु में सर्प है नहीं, सतगुरु से ली जान।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (67)

मैं अब सद्गुरु जी को ध्याया।
तन–मन–धन सब अर्पण करके, प्रेम सहित गुणगाया।।टेर।।
महर करी गुरु दया करी रे, आत्म अपरोक्ष लिखाया।
अजर–अमर अविनाशी अवगत, पर्दा खोल दिखाया।।1।।
जन्म मरण सब कल्पित है रे, मैं तो नहीं कल्पाया।
सर्व खल्विदं ब्रह्म है रे, सर्व खलक में छाया।।2।।
ब्रह्म से भिन्न सभी नश्वर है, थिर कोई न रहाया।
सत्य सोई स्वरूप हमारा, तीन काल थिरथाया।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु मिलिया, ऐसा बोध कराया।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मोज मगन यश गाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (68)

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्नं बभूव कश्चित्।
अजोनित्यःशाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीर।।
(कठो.उप. 2/27)

दोहा (68)

आप्या अपना खोजकर, मेट्या सब अध्यास।
महर करी गुरुदेव ने, ब्रह्म लिखाया पास।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग सोरठ)

भजन (68)

पाया है हमने, सतगुरु जी से निज सार।
कांई महिमा वरन करूं जी, सतगुरु को उपकार।।टेर।।
आपे आपा खोजकर, कीना ब्रह्म विचार।
अविद्या पर्दा हटा दिया रे, आगे किया दीदार।।1।।
जले न सूखे गले नहीं रे, ऐसा पाया दात्तार।
वां से सूरत लगी है म्हारी, चूके नहीं इक बार।।2।।
ऐसा तत्व पा लिया जी, सतगुरु को आधार।
वाँकी महिमा है बहु भारी, हरदम जाऊं बलिहार।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलिया, दिया शब्द का सार।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मौज मगन होशियार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (69)

गुरुसेवां विना कर्म कुर्वाणो मूढचेतनः।
प्राप्नोति निष्फलं त्वं हि स्वप्नलब्धं यथा धनम्।।

दोहा (69)

सद्गुरु की शरण में आ, किन्हा वेद विचार।
ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या, ममसुँ भिन्न आसार।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा तर्ज– दुनिया मतलब की है ......)

भजन (69)

सतगुरु जी के शरणे, अब मोहे जाण पड़ी।।टेर।।
कांई सत्य कांई असत्य, ऐसी मन में अड़ी।
ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या, सतगुरु खोली कड़ी।।1।।
विवेक वैराग्य षट् सम्पति, मुमुक्षता खड़ी।।
सतगुरु की कृपा से, हीरा पाया अलखमड़ी।।2।।
सतगुरु शब्द सुनावता जी, श्रवण मनन करी।
निधिध्यासन की परिपक्वता, आत्म से जाय जुड़ी।।3।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों, ये तो रही खड़ी।
तूर्या स्वरूप में जाय समाया, पाया माल दड़ी।।4।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु मिलग्या, दीनी अमर जड़ी।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मुक्ति आगे खड़ी।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (70)

अनाथोऽस्म्यतिदुःखी खामि भीतोऽस्मीति दयां कुरू।
मज्जन्तं भवसिन्धो मां समुद्र महागुरो।।

दोहा (70)

निर्गुण रुप गुरुदेव है, गुण गोचर से पार।
लिखत–लिखत सब थक गये, ज्ञानानन्द उच्चार।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (70)

सद्गुरु जी मिलग्या ज्ञानी, दुनिया से न्यारा–न्यारा।
है वो मेरे सृजन हारा।।टेर।।
जग की करिया हानि, दीनी ब्रह्म निशानी।
निश्चय करके मानी, दरश्या आत्म प्यारा।।1।।
मैं गुरु शरण में आया, तब सद्गुरू ज्ञान सुनाया।
भेद भ्रम नशाया, हुआ ब्रह्म दीदारा।।2।।
सुनत गुरु की वाणी, मिटगी चारों खानी।
राम रह्या नहीं छानी जी, कर्म छूटिया लारा।।3।।
ज्ञानानन्द हुआ मस्ताना, गुरु चरणा में ज्यांका ठिकाना।
अब छूट्या आना जाना, सब हरि रूप निहारा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (71)

मुकुरे रवि संयोगादधोगच्छति पावकः।
शिष्यानुभवमेतेन तथा सद्गुरुसंगतः।।

दोहा (71)

सीपी में रूपा नहीं, मिथ्या जग की झांय।
गुरुकृपा से परखियो, ब्रह्म आप घट मांय।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (71)

सन्तो भाई खोल्या भरम का ताळा।
गुरु कृपा से कूँची लागी, निरखू अवगत चाळा।।टेर।।
दीना सतगुरु ज्ञान प्रकाशा, उर में भया उजाळा।
साक्षी ज्ञान की युक्ति लेकर, मैं मेरी को टाळा।।1।।
सर्वदुखो की भई निवृति, नित्य भया सुखाला।
आठों पहर निरखू ब्रह्म को, काट मोह जंजाळा।।2।।
नाम रूप जिसमें नाहिं, नहीं श्वेत नहीं काळा।
तीन काल एक रस रहवे, ऐसा सत् चित आळा।।3।।
सत्यानन्द जी सामर्थ दाता, मार्या शब्द का भाला।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, सर्व बन्धन को टाळा।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (72)

चन्द्रकान्तमणिः सोमं द्रवते चन्द्रसन्निधौ।
शिष्यानुभवमेतद् यथा सदुगुरुदर्शनात्।।

दोहा (72)

गुरु वचनों को पाय के, तोड़ी भव की पाश।
ज्यों चिनगारी आग की, करत घास की नाश।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग सोरठ)

भजन (72)

गुरु वचनों से पाया रे, परमानन्द की सीर।।टेर।।
सोहम् अस्मि वृति किन्हा, मूल अविद्या सब तज दीना।
लक्ष्यार्थ में लवलीना, वाच्यार्थ दीनों चीर।।1।।
पंचकोष और त्रिगुण पर्दा, माया अविद्या समझयो जड़ता।
ये मुझमें नहीं अड़ता जी, मार्‌यो ज्ञान को तीर।।2।।
सतगुरु ऐसा वचन सुनाया, जीव ब्रह्म का भेद मिटाया।
ब्रह्म आत्मा एक दर्शाया, सद्‌गुरु मिलग्या पीर।।3।।
सत्यानन्द जी गुरु समझाया, ज्ञानानन्द समझ में ल्याया।
ताप तीन मिटाया, पीके प्रेम का नीर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (73)

कृत्वा मूर्तिपरिज्ञानं चेतन्यस्य न किं गुरुः।
निर्वेदसमतायुक्त्या यस्तारयति संसृतेः।।

दोहा (73)

सतगुरु जी री सेवा सु, पाया आत्मराम।
काल कर्म लागे नहीं, पहुंच गया निजधाम।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (73)

म्हारा सतगुरु दिया लखाई, घट में देव निरंजन है।।टेर।।
पंचकोष के परे बसता, ज्यामें भेद विकार नहीं धँसता।
उनमें नहीं माया का अंजन है।।1।।
मैंने पाय लिया गोविन्दा, मेरा मिट गया जग का फंदा।
वो सब दुःख भंजन है।।2।।
म्हारा सतगुरु ने बलिहारी, म्हारी मलिन वासना मारी।
गुरु ज्ञान नेत्र का अंजन है।।3।।
सतगुरु मिल गया कृपाला, मेरा जग बन्धन को टाला।
ज्ञानानन्द निर्बन्धन है।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (74)

ज्ञान विज्ञानरत्नाढ्यो गुरुरस्ति दयाणवः।
यस्य वागूर्मिसंस्पर्शादज्ञो भवति सौख्यभाक्।।

दोहा (74)

ज्ञानानन्द सांचा गुरु, दीना सोऽहम् ज्ञान।
वेद महावाक्य अर्थ सुँ, पाया पद निर्वाण।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (74)

मैं तो हो गया चकनाचूर, सतगुरु कृपा से।।टेर।।
वेद महावाक्य खोल समझाया, आत्म राम चौड़े दर्शाया।
निरख्या निजानंद नूर।।1।।
महर भई सतगुरु की जब से, आत्म दूर नहीं अब हमसे।
भेद गयो सब दूर।।2।।
जगत बन्धन की मिट गयी त्राशा, अब नहीं है दूजे की आशा।
मैं खुद आनन्द भरपूर।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु पाया, ज्ञानानन्द समझ में लाया।
बाज्यो महावाक्य तूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (75)

वेदान्त वाक्य पुष्पेभ्यो ज्ञानमृतम धत्तमम्।
उज्जहारालिवद्यो नस्तस्मै सद्गुरुवे नमः।।

दोहा (75)

वन्दन सद्गुरु साध को, आद अन्त से बाहर।
ज्ञानानन्द उन गुरु को, जाऊ में बलिहार।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (75)

धन–धन रे सतगुरु, तुमको बारम्बार।
जन्म–मरण का बन्धन काट्या, कीन्हा भव से पार।।टेर।।
आप न मिलते जगत में तो, जातो जमारो हार।
यमराजा की जेल भोगतो, लख चौरासी तैयार।।1।।
महर करी मुझ ऊपर स्वामी, काम क्रोध दिया मार।
तब निर्मलता आयी घट में, आठ पहर इकसार।।2।।
एक राम को धारण कीन्हा, द्वैत गया सब छार।
सत् चित् आनन्द रूप हमारा, अरस–परस दीदार।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलग्या, दिया वेद तत्सार।
ज्ञानानन्द गुरु कृपा कर, जल्दी लियो उभार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (76)

गुरुं विना यथा भ्रांतः श्वा सर्वत्र भ्रमेत् तथा।
यथा मृगेन्द्रः स्वां मूर्ति दृष्ट्वा कूपेऽपतत् स्वयम्।।

दोहा (76)

शरण पड्यों में आय, उगियो अनुभव भान।
तम अन्धेरी ना रही, सहज भयो कल्याण।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (76)

मैं आदू धाम का वासी रे, गुरु बतायो गेल।
महर भई गुरु देव की, अविद्या हो गयी फेल।।टेर।।
जब गुरु शरण में आयो, सतगुरु जी वचन सुनायो।
भेद भ्रम मिटायो जी, किया जीव ब्रह्म का मेल।।1।।
धाम हमारा ऐसा, जहाँ नहीं हैं राग द्वेषा।
आनन्द रहे हमेशा, ये सब उसका खेल।।2।।
ऐसा धाम निराला, जहाँ नहीं माया का चाळा।
काल देज्या टाळा, लगा ज्ञान का सेल।।3।।
मैं फेर लौट नहीं आऊँ, सत् में जाही समाऊं।।
ज्ञानानन्द थिरथाऊं रे, करयो ब्रह्म में टहेल।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (77)

महावाक्य मीठा लगे, सुन सुन उपजा ज्ञान।
ज्ञानानन्द सद्गुरु से, उगिया अनुभव भान।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (77)

प्यारो लागे ओ सद्गुरु जी म्हाने थांको आत्मज्ञान।
बन्धन छुड़ावे राम मिलावे, तोड़े यम की काण।।टेर।।
ब्रह्मा सेवे विष्णु सेवे, शिवजी सेवे महान।
देवी देवता देवे हाजरी, चुके नहीं इक ड़ाण।।1।।
कर्म छुड़ावे भरम मिटावे, जीवन मुक्त प्रमाण।
हर्ष शोक अब व्यापे नाहीं, ऐसा पद निर्वाण।।2।।
आदि व्याधि दोनू न रेवे, मेटे खिंचातान।
विदेह मोक्ष फिर मिले सहज में, होवे जय कल्याण।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु मिलिया, सो है ब्रह्म समान।
ज्ञानानन्द शरण सद्गुरु की, सहज हुआ गलतान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (78)

शोषणं भव सिन्धोश्च दीपनं ज्ञानसम्पदाम्।
गुरु पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवेनमः।।

दोहा (78)

ज्ञान हुआ गुरुदेव से, पाया आत्मराम।
ज्ञानानन्द भव ताप सुँ, मन पाया विश्राम।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग घुमर)

भजन (78)

हो सा म्हाने सतगुरु जी समझाया लोई।
सांचो आत्म राम है।।टेर।।
कोई–कोई मन्दिर मूर्ति बतावे, ये अब म्हारे मन नहीं भावे।
म्हाने सत् निर्णय दर्शाया ये लोई।।1।।
वेद पुराण म्हाने खोल समझाया, आत्मा ब्रह्म एक बताया।
म्हारी भ्रमना सारी मिटाया ये लोई।।2।।
रज्जु में सर्प सीप में रूपा, यो सब भ्रम भयो जग कूपा।
म्हाने आत्म आधार लिखाया ये लोई।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु पाया, ज्ञानानन्द शरणागत आया।
मैं तो जीवन मुक्ति पाया ये लोई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (79)

गुरु पादप्रसादेनज्ञानमुत्पद्यते स्वयम्।
येनोद्धृतमिदं विश्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

दोहा (79)

भव सु बेड़ा पार किया, नेणा दरश्य राम।
ज्ञानानन्द बलिहारी, पूर्ण भया सब काम।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा तर्ज–उड़–उड़ रे म्हारा काग्ला....)

भजन (79)

धन–धन रे म्हारा ज्ञानी रे गुरां ने बेड़ा भव से पार किया।
भव सागर से तार दिया।।टेर।।
भवसागर में डूब रही नैया, सतगुरु आयामेरा बनकर खेवैया।
खींच किनारे लगा ही दिया।।1।।
तत्त्वमसि का अर्थ बताया, वाच्य अरू लक्ष्य समझाया।
जीव को ब्रह्म बना ही दिया।।2।।
घट आकाश महाकाश जैसा, जीव ब्रह्म में अन्तर ऐसा।
भेद सारा मिटा ही दिया।।3।।
जीवन मुक्त की मिल गयी सेरी, मिट गयी चौरासी री फेरी।
व्यापक रूप में समा ही गया।4।।
ज्ञानानन्द सतगुरु शरणा में, तन मन धन अर्पण चरणा में।
दोनों ही फल मैनें पा ही लिया।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (80)

अहो शास्त्रमहो शास्त्रमहो गुरु रहो गुरुः।
अहो ज्ञानमहो ज्ञानमहो सुख महो सुखम्।।
(पंचदशी 7.64)

दोहा (80)

धन–धन सद्गुरु देव को, मेटा भ्रम सब आज।
ज्ञानानन्द पुण्य भला, सफल भया सब काज।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग आसावरी)

भजन (80)

साधो भाई गुरु गम निश्चय पायो।
असंख्य युगा रा सुता जीव ने, पल में आय जगायो।।टेर।।
सेवा कर्म बता के सतगुरु, मल विक्षेप हटायो।
चव साधन का सार बताके, मोहे आप अपनायो।।1।।
तत्त्वमसि महावाक्य सुनाके, लक्ष्य ब्रह्म दरशायो।
घटाकाश महाकाश जैसे, भाग त्याग अपनायो।।2।।
अगम पंथ है झीणा रस्ता, सतगुरु मोहे समझायो।
हाथ पाव से चला न जावे, बिन नैणा परखायो।।3।।
पाँच पच्चीस तीन तेरा, झूठ जान बिसरायो।
आप में आप ताप नहीं तीनों, सहज स्वरूप समायो।।4।।
धन्य–धन्य मेरे गुरु दाता ने, ये आलम बतलायो।
ज्ञानानन्द बलिहारी जाऊं, ये सब गुरु से पायो।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (81)

धन्योऽहं धन्योऽहं तृप्तिर्मे कोपमा भवेल्लोके।
धन्योऽहं धन्योऽहं धन्यो धन्यः पुनः पुनर्धन्यः।।
(पंचदशी 7.62)

दोहा (81)

धन्य हु धन्य हु सदा ही, पाकर गुरु प्रसाद।
ज्ञानानन्द पुनः धन्य, मेट दिया सब वाद।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग घुमर)

भजन (81)

हो म्हाने जीवन मुक्त कराया ये लोय,
बलि–बलि जाऊं म्हारा सतगुरु ने।।टेर।।
मुक्ति का साधन ज्ञान बताया सा,
हो म्हाने मुख्य गौंण समझाया ये लोय।
ज्ञान रा रूप अरु साधन लखाया सा,
हो म्हाने बहि–अंतरिंग दर्शाया ये लोय।
श्रवण मनन को खोल बताया सा,
हो म्हारा संशय सकल मिटाया ये लोय।
निधिध्यासन की धर के धारणा सा,
हो म्हारा आवरण दूर हटाया ये लोय।
ज्ञानानन्द सतगुरु शरणा में सा,
हो मैं तो व्यापक रूप दृढ़ाया ये लोय।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (82)

अखण्डानन्दसम्बोधो वन्दनाद्यस्य जायते।
गोवन्दं तमहं वन्दे चिदानन्दतनुं गुरुम्।।
(स.वे.सि.सा. 1)

दोहा (82)

दया कल्प गुरुदेव जी, मेटी मन की त्रास।
ज्ञानानन्द मुक्त हुआ, पा शुद्ध आत्म खाश।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (82)

म्हारा सद्गुरु जी कीना उपकार, ज्ञान मोहे दे दीना।।टेर।।
सामवेद का महावाक्य सुनाया, तत् त्वं पद का अर्थ बताया।
वाच्यार्थ लक्ष्य समझाया, खोल बताया सार।।1।।
पाँच कोष का राज दिखाया, ज्ञान भूमिका सात बताया।
पाँच भेद और भ्रांति मिटाया, शत्रु पाँचो मार।।2।।
तीन गुणों से आगे कीना, तुरिया पद में जाकर चीना।
अभय पद में हो गया लीना, अब सब मिटग्या तकरार।।3।।
ज्ञानानन्द सद्गुरु की महिमा, अगम निगम ने लिखी गरीमा।
आगे पीछे नहीं कोई सीमा, मैं खुद जाऊं बलिहार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (83)

अहमेकमिदं सर्वं व्योमातीतं निरन्तरम्।
पश्यामि कथमात्मानं प्रत्यक्षं वा तिरोहितम्।।
(अवगीता 10)

दोहा (83)

ज्ञान दिया गुरुदेव ने, खोल हृदय कपाट।
ज्ञानानन्द मैं आत्मा, कर्म जले ज्यूं काठ।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	गुरु महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (83)

म्हारा सतगुरु सैन बताया सा, पाया आत्म राम।
पाया आत्म राम म्हारा, पूर्ण हुआ सब काम।।टेर।।
सद्गुरु ज्ञान सुनाया, पाँचों भेद मिटाया।
ब्रह्म आत्म एक लिखाया, सुणा महावाक्य नाम।।1।।
जीवन मुक्ति कराया, विदेह मुक्ति समझाया।
विलक्षण आनन्द पाया, पल–पल आठो याम।।2।।
लगन गुरु से लागी, उर से अविद्या भागी।
म्हारे सेन समझ में आगी, सांचो साहिब नाम।।3।।
गुरु धन–धन बारम्बारा, मेरा बेड़ा किया भव पारा।
ज्ञानानन्द तन–मन वारा, आप मेरे सुख धाम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (84)

भाग्य भला गुरु पाय के, दुविद्या दीनी नसाई।
जिसको बाहिर ढूंढता, सो घट भीतर पाई।।
सो घट भीतर पाई, जगत ब्रह्म दरशाया।
ना रज्जु में सर्प बसे, अधिष्ठान एक बताया।।
ना ना पंथ न भाय, अस्ति भांति प्रिय सागे।
ज्ञानानन्द निश्चय, गुरु मिल्या बड़ा भाग्य।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (84)

सद्गुरु भलो करयो उपकार, भव से पार लगाया जी।
म्हाने भव पार तराया जी।।टेर।।
मोह जाल में उलझ–उलझ, कई जन्म गंवाया जी।
जड़ चेतन की गांठ खोलदी, निज रुप लिखाया जी।।1।।
चार साधन ज्ञान का, गुरु खोल बताया जी।
तत्त्वमसी उपदेश सुना, म्हारो भरम मिटाया जी।।2।।
आदू धाम अगोचर महिमा, सत् साख लगाया जी।
आठो पहर अमृत बरसे, ज्यांरा पान कराया जी।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलया, मोहे सेन बताया जी।
ज्ञानानन्द समझ अनुभव में, दूजा नहीं पाया जी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (85)

सद्गुरु मुझ पर महर करि, सोता दिया जगाय।
अज्ञान तिमर दूर किया, डूबत लियो बचाय।।
डूबत लियो बचाय, भ्रम भय सब ही भागा।
चरण शरण में आय, अनुभव रंग में लागा।।
ज्ञानानन्द महिमा, सहजा ना वरणी जाय।
सद्गुरु मुझ पर महर करि, सोता दिया जगाय।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति गुरु महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (85)

मोती निपज्या गुरु चरणा में, आज अमीरी छाई रे।
जनम–जनम की रही गरीबी, सदगुरु ने बिसराई रे।।टेर।।
अमर धन म्हारा सतगुरु दीना, दीना कण्ठ लगाई रे।
दिन–दिन बढ़ता माल सवाया, साख सवाई पाई रे।।
बणिया सेठ कोई आद पुराणा, सांची हाठ लगाई रे।
ब्रह्म ज्ञान रा सौदा बैच्या, सत् शिष्य के ताई रे।।
ज्यूं–ज्यूं पाया माल खजाना, कमी रही कछू नाहिं रे
जमड़ा का अब दाव न लागे, कर्जा चुकत कराई रे।।
ईश्वर कृपा मोपे कीनी, सदगुरु मिलिया आई रे।
ज्यां देखूं ज्यां नूर ही दरशे, ज्ञानानन्द निज पाई रे।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: सत्संग प्रार्थना का अंग—5::—

श्लोक (86)

कलौ सभां जयन्त्यर्था गुणज्ञाः सर्वभाविनः।
यत्र संकीर्तनैर्नैव सर्वः सवेष्टोभिलभ्यते।।

दोहा (86)

काम क्रोध सब मिटे, हो ज्या अविद्या दूर।
ऐसी सत्संग देवो गुरु, दर्शे आत्म नूर।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	सत्संग प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (86)

मोहे सत्संग प्यारी लागे सा, कृपा करो महाराज।।टेर।।
स्वामी आशा तृष्णा सतावे, काम क्रोध मोह डरावे।
भव जाल में भटकावे, डूब रही मेरी जहाज।।1।।
बिन सत्संग पार नहीं जावे, अगम निगम यूँ समझावे।
केवट आप कहलावे, पार करो भव जहाज।।2।।
नीति बतलाओं सारी, अविद्या अपर बल भारी।
याने बेगा दीज्यो मारी, द्यो जीवन मुक्ति राज।।3।।
गुरु आप अन्तर्यामी, कृपा करो मम स्वामी।
ज्ञानानन्द करे सलामी, शुभ करो सब काज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (87)

सद्गुरो मम अधुना प्रार्थनाः सत्संग प्रदाम्यहम्।
ज्ञानानन्दस्य श्रवणं प्रददामि इति वरं नमे।।

दोहा (87)

अरज करूं कर जोड़ के, सुणज्यो गुरु सुजान।
सत्संग को अभिलासी, यो देवो वरदान।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	सत्संग प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (87)

दिलाना स्वामी सत्संग तुम्हारी ओ
सत्संग बिन दाय न आवै, सुन लौ अरज हमारी ओ।।टेर।।
विवेक वैराग्य देवो साधन, षट् सम्पति सारी ओ।
मुक्ति की इच्छा मारे मन में, कर दो जारी ओ।।1।।
ब्रह्म ज्ञान करावो स्वामी, अविद्या छारी ओ।
सत्संग जहाज बिठावो दाता, हो जाऊं पारी ओ।।2।।
जीव भाव मेटो तुम स्वामी, ब्रह्म निरधारी ओ।
जीवन मुक्त होय के—डोलूं, करो कृपा भारी ओ।।3।।
ज्ञानानन्द की विनती, सुनो मुरारी ओ।
मैं हूँ दास तुम्हारो स्वामी, करो भव से पारी ओ।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (88)

शीतलाति सत्संगो गुर्रोमम श्रयाम्यहम्।
इति ज्ञानानन्दस्य प्रार्थनां शरणमहमागच्छामि।।

दोहा (88)

शीतल बेन रू सुसंगति, देवो गुरु दात्तार।
यही वरदान मांगने आयो आपके द्वार।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यमा सत्संग प्रार्थना राग आसावरी)

भजन (88)

सतगुरु सत्संग देवो दाता।
और कछु चाहूँ नाहिं, संत समागम मन भाता।।टेर।।
सत्य सार सत्संग है जग में, और असार कहलाता।
सत्संग से ही जग में पाऊं, द्वैत सकल मिट जाता।।1।।
बिन सत्संग विवेक न होवे, यां बिन बहु दुःख पाता।
विवेक से ज्ञान, ज्ञान से मुक्ति, खत्म कर्म का खाता।।2।।
सत्संग बिन संभव नाहिं, कर करोड़ यत्न थक जाता।
आप कृपा बिन सुलभ नाहिं, सकल शास्त्र यों गाता।।3।।
हाथ जोड़ कर करूं विनती, चरणों में शीश झुकाता।
ज्ञानानन्द है चाकर तेरा, नहीं दूजे से नाता।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (89)

स च सत्शास्त्रसत्संग सदाचारैर्निजं फलम्।
ददाति स्वभावोऽयमन्यथा नार्थसिद्ध्यते।।
(योग वाशिष्ठ)

दोहा (89)

जप तप योग चाहूँ नहीं, ना बैकुण्ठा बास।
ज्ञानानन्द ये मांगू, रखो संतो का दास।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यमा सत्संग प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (89)

मोहे आशा भारी लागी सा, सत्संग दो गुरुदेव।।टेर।।
सत्संग है सुख की खान, कृपा कर दो भगवान।
मिटा दो खींचातान, दीज्यो आत्म भेव।।1।।
सत्संग है सुख सांचा, म्हारी कर दो पूरी आशा।
मिटाओ दो ताप त्रासा, तुमसे अर्जी दियो कैव।।2।।
न चाहू मैं धन और भोग, न मैं चाहू क्रिया योग।
द्यो सत्संग का सुयोग, अब म्हारी विनती सुन लेव।।3।।
सत्संग करवाते रहना, दोष दृष्टि कछू नहीं देना।
ज्ञानानन्द शरण में लेना, जन्म जन्म करूं सेव।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (90)

संतोषः परमोलाभः सत्संगः परमोगतिः।
विचारः परमं ज्ञानं शमो हि परमं सुखम्।।
(यो.वा.)

दोहा (90)

संत समागम शीतल है, ज्यो गंगा का नीर।
मैं आतूर सत्संग में, सद्गुरु देवो धीर।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	सत्संग प्रार्थना	राग आसावरी)

भजन (90)

ओ सामर्थ सत्संग देवो दाता,
बार–बार मैं करूँ विनती, अर्ज सुन लो विधाता।।टेर।।
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे, ये मोहि तड़पाता।
विवेक रूपी बाण लगाओ, दुष्ट दूरां भग जाता।।1।।
आशा तृष्णा नदियाँ बहवे, अभिमान ताव चढ़ाता।
शील संतोष देवे नम्रता, जीवन मुक्ति पाता।।2।।
सत्संग है सुख की खान, ये ही मेरे मन भाता।
ताकी इच्छा है मेरे दिल में, सत्संग बिन तड़पाता।।3।।
मैं मुर्ख अज्ञानी दाता, आपको अर्ज सुनाता।
ज्ञानानन्द शरण आपकी, भव से तरणा चाहता।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

–:: सत्संग चेतावनी का अंग–6 ::–

श्लोक (91)

वृत्तानियज्ञच्छन्दांसि तीर्थानि नियमाः यमाः।
यथा वरून्धे सत्संगः सर्वसंगापहो हि माम्।।

दोहा (91)

संत शरण सम जगत में, पवित्र पदार्थ नाहिं।
करोड़ जन्म का अज्ञ भी, धुल जावे पल माहिं।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग गजल कवाली)

भजन (91)

जगत में सत्संग है गंगा, नालों जिसका जी चाहे।।टेर।।
सत्संग गंगा के माहिं, ताप तीनों मिट ही जायी।
अन्तस शुद्ध हो जायी, करा लो जिसका जी चाहे।।1।।
सत्संग है ज्ञान की गंगा, न्हावे जो हो जावे चंगा।
मिटसी यूं यम का पंगा, मिटा लो जिसका जी चाहे।।2।।
सत्संग गंगा के माहि, अमोलक हीरा है भाई।
पावे मुक्ति पल माहि, पालो जिसका जी चाहे।।3।।
श्रुति वेद यूं गावे, सत्संग सम और न पावे।
ज्ञानानन्द समझावे, समझ लो जिसका जी चाहे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (92)

संतोषः साधुसंगश्च विचारोऽधशयस्तथा।
एतएव भवाम्भोधेः पादाः पारं तिरणेषु नृणाम्।।
(यो.वा.)

दोहा (92)

संत समागम जगत में, मानों अमृत खान।
पीवत जीवन मुक्त हो, निर्बन्धन निर्वाण।।

(गुरु बोल वाणी बेकरी सत्संग चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (92)

ओ सत्संग हो जग में, अमी रस भरया ओ।
जो कोई पीवे रस अमृत को, भव सागर तरया ओ।।टेर।।
सत्संग है समन्दर ज्यांमे, मोती धरया ओ।
हंस विवेकी धारण कर्ता, कारज सरया ओ।।1।।
सत्संग बाग अनोखा भाई, फल मधुमई जड़िया ओ।
खावे ज्यों ही मुक्ति पावे, सुख होय विचरीया ओ।।2।।
सत्संग से सब गुणी होते, अवगुणी सुधरिया ओ।
काम क्रोध मद लोभ सारा तुरत ही जरियाओ।।3।।
सत्संग बिन संसार में, जन्मे अरू मरिया ओ।
ज्ञानानन्द बैठो सत्संग में, भव पार उतरिया ओ।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (93)

किं कैलाससुमेभ्यः यत्र वृक्षाः स्थिताः द्रुमाः।
सर्व चन्दनकर्तारः ससत्संगो मतो मम।।
(वि.मा.पु. 46/22/1)

दोहा (93)

नाव नहीं सत्संग सम, भव से तारण हार।
भाग भला वो बैठता, पल में हो भव पार।।

(गुरु बोल वाणी बेकरी सत्संग चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (93)

ओ सत्संग जग में तारण हारी ओ,
जो कोई आवे इन सत्संग में, हो जावे पारी ओ।।टेर।।
माया अविद्या मिटे वासना, मल मल को जारी ओ।
होवे बोध शुद्ध रूप का, मोह ममता मारी ओ।।1।।
काम क्रोध को दूर हटावे, शीतलता धारी ओ।
चन्द्र उगे अम्बर में, मिटज्या आग करारी ओ।।2।।
सत्संग सम गुण नहीं किसी में, वेद पुकारी ओ।
अवगुण मेटे गुण बरसावे, सुख ऊपजे भारी ओ।।3।।
और वासना दूर हटा के, लौ सत्संग धारी ओ।
ज्ञानानन्द बैठ सत्संग में, छोड़ो, थारी मारी ओ।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (94)

सत्संग इति संसारेऽद्वितोऽयमस्ति।
ज्ञानानन्द वदति मम सत्संगोऽस्ति।।

दोहा (94)

सांचा संग संसार में, मेटे यम की त्रास।
करे दूर घन अंध को, आत्म लिखावे पास।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग चलत मारवाड़ी)

भजन (94)

ओ सत्संग में लाभ घनेरा रे, देखो कोई अजमाय।।टेर।।
पहले पहल विवेक जागे, ज्यांसे माया मिथ्या त्यागे।
निज स्वरूप अनुरागे, भेद भ्रम मिट जाय।।1।।
सकल कामना जावे, पर्दा सब हट जावे।
फिर अपणा घर पावे, फेर जन्म न आय।।2।।
सत्संगत है सांची, अगम–निगम में बाँची।
अब बात रही नहीं काची, प्रकट दियो सुनाय।।3।।
अब ऐसा अवसर कीजे, सत्संग में चित्त दीजे।
ज्ञानानन्द समझ ले लीजे, पाप कर्म मिट जाए।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (95)

सत्संगकल्पवृक्षोऽसौ सर्वेष्टितफलप्रदः।
सुवाक्यमृतवर्षेण त्रितापान् हरते क्षणात्।।
(वि.मा.पु. 10)

दोहा (95)

सार असार जाणे नहि, बिन सत्संगत पाय।
जैसे छाया कल्पतरू, तीन ताप मिट जाय।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (95)

बिन सत्संग के नहीं होवे रे, आत्म का विवेक।।टेर।।
पोथी पढ़ लो बहु पाना, होवे नहीं यासे ज्ञाना।
खूब करो अनुमाना, अगम–निगम लो देख।।1।।
जो कोई सत्संग करसी, पूर्ण विवेक उर माहिं भरसी।
कारज सारो सरसी, जो रहवे सन्ता सिर टेक।।2।।
जो संतो के संग आया, वो आत्म पद को पाया।
आवागमन मिटाया रे, ले संतो का जैक।।3।।
बिन सत्संग नाहिं विवेका, यों रामायण में लेखा।
ज्ञानानन्द ढंग से देखा, फिर लिखिया सत्संग लेख।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (96)

सत्संग सुखलेशेनक्षमा मुक्तिरीरिता।
कुतो ब्रह्मादिशकादि भूषानां भोग भूमयः।।
(वि.मा.पु. 39)

दोहा (96)

जीवन पार होने को, सत्संग है जहाज।
आय बैठे जहाज में, सफल भये सब काज।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (96)

ओ सत्संग भव तिरणे की नाव, बैठ जा मन में भावे तो।।टेर।।
सत्संग है सुखों की खान, ज्यांसे सुधरिया कई विद्‌वान।
मिट जावे खींचातान, ताण ने, बेगी मिटावे तो।।1।।
सत्संग है जग में प्यारी, करो सभी नर–नारी।
पल में हो भव पारी, पेली, पार जावे तो।।2।।
सत्संग का फल अनोखा, ज्यासें मिलता मुक्ति मौका।
मिटज्या दिल का धोखा, धोखा ने, दूर हटावे तो।।3।।
पारस संग लोहा जोवे, वो अपने रूप को खोवे।
यूं जीव ब्रह्म हो जावे, जड़ से, चेतन होवे तो।।4।।
ज्यां हो सत्संग की बात, ज्ञानानन्द सुणो दिन रात।
ज्यांसे मिलज्या दीनानाथ, नाथ से, प्रेम बढ़ावे तो।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (97)

दुर्लभं त्रयमेवैतद् देवानुग्रहहेतुकम्।
मनुष्यत्वं मुमुक्षत्वं महापुरूषसंश्रयः।।
(विवेकचूड़ामणि 3)

दोहा (97)

कर तु सत्संग सिमरणा, अपने आप विचार।
चौरासी जावे नहीं, सहज होय भवपार।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (97)

मानव कर ले रे सत्संग, नर तन मिलियो पुण्य से।।टेर।।
सत्संग है पुण्य की खान, यो कहता वेद पुराण।
थारी मिट ज्या खींचातान, संतों की कृपा से।।1।।
सत्संग बिन नांहि विवेका, कोटि यत्न कर देखा।
यों रामायण में लेखा, अनुभव होवे सत्संग से।।2।।
तज दे दुष्टों का संग साथ, सुन ले महापुरूषों की बात।
थारे आवे हीरो हाथ, शब्द सत्‌गुरु का सुणबा से।।3।।
ज्ञानानन्द नहीं तन रहने का, फिर क्यूं यत्न करे जीने का।
मान वचन संतो का, परम पद पावे सत्संग से।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (98)

न रोधयति मां योगी न सांख्यं धर्म एव च।
न स्वाध्यायस्तपो त्यागोनेष्टापूर्ते न दक्षिणा।।

दोहा (98)

श्रेष्ठ तीर्थ सत्संग है, इनसे बड़ा न कोई।
जो आवे सत्संग में, कोटि तीर्थ फल होई।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (98)

ओ सत्संग है जग में परम पवित्र गंगा।
जन्म–जन्म का पाप धुलज्या, हो जावे मन चंगा।।टेर।।
काम क्रोध दूरा भागे, मिट जावे उर दंगा।
शील संतोष हृदय में आवे, धुल जावे मल जंगा।।1।।
लोहा पलटकर सोना होवे, ज्यों पारस के संगा।
जीव पलटकर ब्रह्म होत है, सत्संग के प्रसंगा।।2।।
चन्दन के संग तरवर बदले, भंवरा संग पतंगा।
मूरख बदले सत्संग माहिं, उत्तम हो ज्या अंगा।।3।।
महापुरूषों की सेवा कर ले, सुधरे मन मतंगा।
ज्ञानानन्द सत्संग करने से, मिट जावे यम पंगा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (99)

व्रतानि यज्ञच्छंदासि तीर्थानि नियमाः यमाः।
यथाविरूद्धेसत्संगः सर्वसंगापहो हिमाम्।।
(मा.वि.मा 50)

दोहा (99)

ऋषि मुनि यो गावे, गावे वेद पुराण।
पल भर सत्संग सम ना, जप तप यज्ञ दान।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (99)

ओ सत्संग की महिमा, काँई करूं बखान।।टेर।।
सत्संग में सब सुख उपजे, वेद वचन प्रमाण।
सर्व दुखों की होय निवृति, पद पावे निर्वाण।।1।।
सबसे शीतल सत्संग जग में, चन्द्र से भी महान।
सत्संग से ही ज्ञान उपजे, मिटज्या खींचातान।।2।।
सत्संग बड़ा संसार में, इनसे बड़ा न आन।
ज्यों कोई आर बिराजे इसमें, तुरन्त होई कल्याण।।3।।
तप के वर्ष हजार से, सत्संग पल का महान।
ज्ञानानन्द कृपा संता की, मिट जावे यम ड़ाण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (100)

संसृतिर्विषयानन्दो भक्त्यानन्दो हरेः कथा।
जीवन्मुक्तौ भवेद् ब्रह्मनन्दो दुर्वासनाक्षये।।

दोहा (100)

संगत संता की बैठ, उपजे ब्रह्म ज्ञान।
आदि व्याधि ना रहावे, पद पावे निर्वाण।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग गजल)

भजन (100)

ऐ इतना तो कर ले बन्दे, सत्संग माही आके।
ब्रह्म ज्ञान को पाले भाई, संता के संग जाके।।टेर।।
प्रथम बैठन सीखो, माया रस सब फीको।
सुनो महावाक्य टीको, मत्संग को दूर हटा के।।1।।
गुरु बतावै गेलो, मार्ग चालो बनकर चेलो।
आत्म संग नित खेलो, द्वैत का भेद हटा के।।2।।
बनो पाका अधिकारी, साधन लेवो धारी।
छोड़ो थारी मारी, अहम् को दूर भगा के।।3।।
ज्ञानानन्द सत्संग सांची, साधे बिन सब काची।
खूब लियो में जांची, चौड़े कियो सुना के।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (101)

सत्संगः सत्यजगतः सुखदेव नारद इति कथ्यते।
ज्ञानानन्द सतसंगे निर्वाण पदं प्राप्नोति।।

दोहा (101)

बंधन की होव निवृति, पद पावे निर्वाण।
सत्संग के प्रताप से, मिटे चारों खान।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (101)

जगत में सत्संग है सुख धारा, ज्यांने पीये हरिजन प्यारा।।टेर।।
सनकादि सप्तऋषि प्यारा, पिया व्यास वाल्मिकी सारा।
सुखदेव पीके हो गया न्यारा, सत् शास्त्र साख पुकारा।।1।।
जो पीवे सुखी हो जावे, जहां का भव बन्धन कट जावे।
फिर भव में नहीं आवे, मिट ज्या काल पसारा।।2।।
सत्संग है निर्मल नीरा, शुद्ध होवे अन्तर धीरा।
कट जावे पाप जखीरा, उतरे भव जल पारा।।3।।
ऋषि मुनि समझावे, सत्संग बड़ी बतावे।
ज्ञानानन्द यों गावे, सत्संग है तत् सारा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (102)

यं न योगेन सांख्येन दानव्रततपोऽध्वरैः।
व्याख्यास्वाध्याय संन्यासैः प्राप्नुयाद् यत्नवानपि।।
(श्रीमद्भाग. 11.12.9)

दोहा (102)

जप तप योग संन्यास से, मिले नहीं करतार।
ज्ञानानन्द सत्संग ह, खुला मोक्ष द्वार।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (102)

हाँ सत्संग में सुरत लगाले रे, छोड़ जगत की प्रीत।
छोड़ जगत की प्रीत, भाई अपने मन को जीत।।टेर।।
सत् पुरूषों की सेवा करके, हरदम ध्यान हरि का धरके।
गुरु ज्ञान में मन फरके, सत्संग करले नीत।।1।।
सत्संग अमीरस भर्या, मरिया जीव उबर्या।
जन्म मरण नहीं धर्या, होकर अविद्या अतीत।।2।।
सत्संग भाग से पावै, बिन पुण्य निकट नहीं आवै।
ये श्रुति संत बतावै, कर पुरूषार्थ की रीत।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु दाता, सत्संग करले तू दिन–राता।
ज्ञानानन्द जद होवे ज्ञाता, संतपुरूष अनुप्रीत।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (103)

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधुसमागमः।।

दोहा (103)

निर्मल नीर संगत रा, न्हावै बिरला कोई।
ज्ञानानन्द पाप ताप, पल में जावे खोई।।

(गुरु बोल	वाणी बेकरी	सत्संग चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (103)

सत्संग है गंगा नीर, न्हाले चावे तो।।टेर।।
गुरु शब्द का साबून लगाले, मल का मेला ने दूर हटाले।
अन्तर होवे साफ सुधीर।।1।।
भेदभाव दूर हटाके, आत्मा ब्रह्म एक लिखाके।
अविद्या का पर्दा चीर।।2।।
वेद महावाक्य सुन रे प्राणी, जीव भाव की हो जावे हानि।
तु खुद निजानन्द अखीर।।3।।
ज्ञानानन्द समझ मन मेरा, परम् धाम का पावो सेरा।
नहीं आवे भव की तीर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: सत्संग महिमा का अंग—7 ::—

श्लोक (104)

इन्दवः शीतलाः सन्ति सत्संगः सर्वदुःखानां भंजनम्।
ज्ञानानन्द वदति नाशयन्ति यमयस्यन्त्राणि अशेषम्।।

दोहा (104)

चन्दा से शीतल अधिक, किया दुखों का नाश।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, मिटगी यम की त्राश।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (104)

ओ सत्संग में सुरता लागी सा, पायो आत्म नूर।।टेर।।
मैं सत्संग माही आया, तीनो ताप मिटाया।
मल विक्षेप हटाया, आवरण हो गया दूर।।1।।
मैं तो सोते नींद से जाग्या, आत्म पद में लाग्या।
भेद भ्रम सब त्याग्या, मिल गया आप हुजूर।।2।।
होग्या भव बंधन का नाशा, आनन्द मिलिया खासा।
मिट गयी सकल पिपासा, मैं खुद में हूं भरपूर।।3।।
मिल गयी सत्संग की सेरी, मिटगी चौरासी फेरी।
ज्ञानानन्द यूँ टेरी, आई अनुभव की लूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (105)

संतसमागमकरस्य सत्संगः प्राप्नोति।
ज्ञानानन्देन कीर्तनं ज्ञान वैराग्यं प्राप्नोति।।

दोहा (105)

संगत कीन्ही साधु की, दुविधा दुरी होई।
ज्ञानानन्द पलक माय, अपने आपा जोई।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (105)

प्रभू की दया से हमको, मिल गया सत्संग।
दिन—दिन अवगुण टूटन लाग्यो, उत्तम हो गया अंग।।टेर।।
सत्संग से विवेक होग्या, सुधर्‌या मन मतंग।
सत् असत् को जानकर, पाया पुरूष असंग।।1।।
ज्ञान वैराग्य शस्त्र लेकर, मन से कीन्हा जंग।
मन को मार भगाया दूरा, अब नहीं उठे तरंग।।2।।
सत्संग से मैं ऐसा सुधर्‌या, भँवरा संग से भृंग।
लोहा का कंचन हो जावे, जैसे पारस संग।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलिया, पिला दिया जल गंग।
ज्ञानानन्द निज ज्ञान में, हो गया भव—भय भंग।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (106)

सतगुरुर्देवो दयालोऽस्तिसत्संगं प्रददाम्यहम्।
ज्ञानानन्द कथयति सकलं ब्रह्म इदम्।।

दोहा (106)

कल्पतरू सत्संग ने, अविद्या दिनी मेट।
ज्ञानानन्द छोड़ चला, परम पुरूष में ठेट।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (106)

हाँ सत्संग का मौखा मिल गया रे, सतगुरु के दरबार।।टेर।।
म्हारी प्रीत सत्संग से लागी, उर से अविद्या भागी।
मैं भेद भ्रम को त्यागी सा, कर आत्म दीदार।।1।।
सत्संग से पाया गैला, होके सतगुरु का चेला।
मैं साक्षी रूप अकेला सा, आर–पार इक सार।।2।।
हो गयी कृपा सत्संग की, टूटी तार मन मतंग की।
लहर आई अनुभव रंग की, गायो राग मल्हार।।3।।
सत्संग महिमा भारी, मैं लियो जीवन में धारी।
ज्ञानानन्द दियो पुकारी, सत्संग मेरा आधार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (107)

आत्माचलाविनाशी ब्रह्म सत्यं जायते।
ज्ञानानन्द कथयति अखण्डप्राप्नोति सत्संगे।।

दोहा (107)

संगत कीन्ही साध की, हीरा लीना हाथ।
दीन गरीबी मिट गयी, निज परमार्थ साथ।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (107)

हाँ सत्संग में हीरा पाया सा, गयी गरीबी दूर।।टेर।।
मैं ऐसे धन को पाया, ज्यांसे दरिद्र दूर हटाया।
दिन–दिन बढ़त सवाया, होग्या माल भरपूर।।1।।
ना कोई चोर चुरावे, ना कोई बन्धु बटावे।
ना कोई राज लटावे, रहवे पास हुजूर।।2।।
सत्संग की हाट मैं पाया, ज्यांसे हीरा परख कर लाया।
भेद भाव हटाया, पाया आत्म नूर।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी ज्ञानी, म्हारी मेट्या भरम ग्लानी।
ज्ञानानन्द यूँ जाणी, अनुभव आई लूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (108)

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःख संज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।
(गीता 15.5)

दोहा (108)

भूल मिटी इस जीव की, मन में भया उचाव।
ज्ञानानन्द पार भया, बैठ सत्संग नाव।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (108)

हाँ सत्संग का मौखा मिल गया रे, दरश्या आत्म नूर।।टेर।।
सत्संग साधन कीन्हा, असत् वाच्य तज दीन्हा।
मैं लक्ष्यार्थ को चीन्हा, मिटी विषय की लूर।।1।।
प्रतिबन्ध संगत से छूटा, ज्ञान अन्तर में फूटा।
करम भरम सब छूटा, जल गयो बीज अंकूर।।2।।
सत्संग से मिट गया खटका, अमृत लिया गटका।
मिट्या चौरासी भटका, अब नहीं जाऊं दूर।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी पाया, ज्ञानानन्द समझ में लाया।
ताप तीन मिटाया जी, होग्या चकनाचूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (109)

यत्कीर्तनं यत्स्मरणं यदीक्षणं, यद्वन्दनं यच्छ्रवणं यदर्हणम्।
लोकस्य सद्यो विधुनोति कल्मषं तस्मै समुद्रश्रवसे नमो नमः।।

दोहा (109)

लगन लगी सत्संग की, जाग्यो पूरण भाग।
प्रमाण–प्रमेय नहीं, अपने आप में जाग।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग चलत मारवाड़ी)

भजन (109)

सत्संग से प्रीति लागी रे, म्हारी मन की भ्रमना भागी।।टेर।।
दिन–दिन सत्संग करते करते–2।
म्हारी विवेक विरती जागी रे।।1।।
भेद भ्रांति मिटी सत्संग से–2।
मैं आत्म संग अनुरागी रे।।2।।
मल विक्षेप सब दूरा हटग्या–2।
म्हारे निश्चय बुद्धि आगी रे।।3।।
सकल संशय पल में मिटग्या–2।
म्हारे उर से अविद्या भागी रे।।4।।
ज्ञानानन्द के सत्संग भावे–2।
म्हारे लगन गहरी लागी रे।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (110)

कलेर्दोषानिधे राजन्नस्ति ह्योको महान्गुणः।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसंग परं व्रजेत।।
(श्रीमद गीता 12.3.52)

दोहा (110)

परम आनन्द को पाया, उतम संगत माहीं।
ज्ञानानन्द भव बंध सु, सहज ही मुक्ति पाहीं।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (110)

हाँ सत्संग में आनन्द आयो सा, सफल भया सब काज।।टेर।।
सत्संग से ज्ञान मोहे होग्या, आवरण पर्दा सब हटग्या।
मल विक्षेप म्हारा मिटग्या, मिला मुक्ति का राज।।1।।
सत्संग में महासुख पाया, ब्रह्म भाव उर आया।
भेदभाव हटाया रे, सुन महावाक्य आवाज।।2।।
पारस से ज्यूँ पलटे लोहा, यूँ मैं जीव भाव को खोया।
साक्षी स्वरूप आत्म में जोया, बजाया अनुभव साज।।3।।
सत्संग बड़ी उपकारी, ज्ञानानन्द जीवन में धारी।
मेरी जहाज हो गयी भव पारी, भव भय गयो सब भाग।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (111)

अयं स्वभावः स्वत एव यत्पर–श्रमापनोदप्रवणो महात्मनाम्।
सुधांशुरेष स्वयमर्ककर्मश प्रभाभितप्तामवति क्षितिं किल।।
(वि.चू. 37)

दोहा (111)

संत समागम सुख सिंधु, सत मोती तिस माँय।
ज्ञानानन्द हंस बण्या, सुजीवन मुक्ति पाय।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (111)

म्हारे सत्संग मन में भाई सा, लागी लगन अपार।।टेर।।
मैं तो सत्संग माहिं आयो, ब्रह्म अद्वैत लिखायो।
भेद सकल मिटायो, कर आत्म दीदार।।1।।
जग से हो गया दूरा, आत्म संग होग्या पूरा।
चेतन दरश्या नूरा, आर–पार इक सार।।2।।
सत्संग कीन्हा चोखा, ज्यांसे निरख्या देव अनोखा।
मिटग्या यम का धोखा, निर्भय रयो निराधार।।3।।
भयो सत्संग को उपकारो, जिससे पायो आत्म प्यारो।
ज्ञानानन्द पुकारो, म्हारो सत्संग है आधार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (112)

सान्निध्यात् महायोगिन् पातकानि महान्त्यति।
सद्यो नश्यन्ति वै पुंसां विष्णोरिव सुरेतराः।।

दोहा (112)

सत्संगत में आय के, करिया हरि से हेत।
मानव तन को पाय के, यम को जीत्यो खेत।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति सत्संग महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (112)

अवसर आग्यो रे सत्संग को,
म्हारो पूर्ण भयो सब काम।।टेर।।
भाई बन्ध अरु माल खजाना से, मनड़ो भयो उपराम।
एक राम में सुरता लागी, पल–पल आठो याम।।1।।
सत्संगत प्रताप भयो तब, सदा रहयो सुख धाम।
मल विक्षेप आवरण मिटग्या, विषय भया सब जाम।।2।।
तीनों ताप व्यापे नहीं ज्यांमे, सदा करूं आराम।
अमर धाम में आसन कीना, मैं हूँ साक्षी घनश्याम।।3।।
सत्संग मानसरोवर जाके, मैंने किया स्नान।
ज्ञानानन्द पुण्य पुर्बला, मिलिया आत्मराम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (113)

यस्य स्यात् संगतिः सदिर्भ्भवेत् सोऽल्पोइपि भाग्यवान्।
देवशुनीन्द्रसंगत्या जित्वाभूत् सुभगः पणीन्।।
(ऋक्. 10)

दोहा (113)

भाग भला मेरा जगा, लगा सत्संग रंग।
ज्ञानानन्द संगति में, हुआ भव भय भंग।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति सत्संग महिमा तर्ज– एक बार आओ जी जवाई जी...)

भजन (113)

ओ म्हारो धुल गयो मन को मेल, सत्संग गंगा में।।टेर।।
काम क्रोध में भरा पड़ा था, राग द्वैष में गिरा पड़ा था।
मोह माया में जकड़ पड़ा था, म्हारी गलगी अविद्या बेल।।1।।
भाग्य पूर्बला जाग्या चोखा, सत् पुरूषों का पाया मोखा।
पाया आत्मराम अनोखा, म्हारा मिटग्या कर्म का खेल।।2।।
सत्संगत में श्रवण कीना, तत्त्वमसि की समझ ले लीना।
वाच्य हटा लक्ष्य पद चीना, होयो जीव ब्रह्म को मेल।।3।।
ज्ञानानन्द सत्संग में आके, द्वैत भाव को दूर हटाके।
जीवन मुक्ति सा फल पाके, म्हारी मिटी जन्मा की टेहल।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (114)

सत्संगेन हि दैतेया यातुधाना मृगाः खगाः।
गन्धर्वाप्सरसो नागाः सिद्धाश्चारणगुह्यकाः।।
(भागवत 11.12.3)

दोहा (114)

साधा की संगत मिली, मन में भयो विवेक।
ज्ञानानन्द सत्संग से, मिटा कर्म का लेख।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति सत्संग महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (114)

म्हारे साधा की संगत में, रंग राम को लाग्यो,
राम को लाग्यो रे, मार्ग मुक्ति को पाग्यो।।टेर।।
अज्ञान नींद में सुतो जीवड़ो, जाग्रत में जाग्यो।
विवेक वृत्ति पूर्ण भई, तब वैराग्य छाग्यो।।1।।
सम दम श्रद्धा तीसरी रे, उपराम में आग्यो।
मैं हूं कौन कहां से आया, मैं मेरी त्याग्यो।।2।।
तीनों साधन धारण करके, चौथी मुमुक्षता पाग्यो।
महावाक्य का बण अधिकारी, श्रवण में लाग्यो।।3।।
तत् त्वं पद का शोधन करके, वाच्यार्थ त्याग्यो।
लक्ष्यार्थ में करी एकता, पद परमानन्द पाग्यो।।4।।
ज्ञानी गुरु की संगत मिली, जब, ज्ञान गंगा नहाग्यो।
ज्ञानानन्द सत्संग कृपा से, अनुभव में आग्यो।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (115)

व्रतानि यज्ञाश्छन्दांसि तीर्थानि नियमाः यमाः।
यथावरुन्धे सत्संगः सर्वसंगापहो हि माम्।।
(भागवत 11.12.2)

दोहा (115)

जप तप क्रिया योग से, जो फल पावे लोग।
नाहीं पल सत्संग सम, सो सत्संग सुयोग।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति सत्संग महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (115)

पाया रे पाया, सत्संग में मोती पाया
जन्म–जन्म की मिटगी गरीबी, यम का कर्ज चुकाया।।टेर।।
पुण्य पुर्बला मेरा जाग्या, मैं सत्संग के माहिं लाग्या।
कर्म भरम सब दूरा भाग्या, आत्मज्ञान बताया।।1।।
आत्म ज्ञान हुआ है जब से, भव बन्धन भाँस्या नहीं तब से।
अब लगन लगी है मेरी रब से, दुजा नजर नहीं आया।।2।।
ऐसा सत्संग मैने पाया, ज्यूँ कल्पवृक्ष सी शीतल छाया।
काम क्रोध की आग बुझाया, निर्मल कर दी काया।।3।।
ये सब है सत्संग की माया, जीवन मुक्ति मोहे पठाया।
विदेह मोक्ष का पट्टा लखाया, पद ज्ञानानन्द गाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (116)

ते नाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः।
अव्रतातप्ततपसः सत्संगान्मामुपागताः।।

(भागवत 11.12.7)

दोहा (116)

ज्ञान हुआ सत्संग से, मिटी मन की मतंग।
ज्ञानानन्द रंग लगा, आठ पहर सत्संग।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (116)

म्हारे सत्संग के माहिने, रंग ज्ञान को लाग्यो।।टेर।।
स्वार्थ भाव कर्म छोड़, मल दोष दूर भाग्यो।
नित अग्रंह के ध्यान से, मन चंचलता त्याग्यो।।1।।
चारो साधन धारण करके, मुमुक्षता पाग्यो।
गुरुदेव महावाक्य सुनाया, तब सुणबा में लाग्यो।।2।।
तत् त्वं पद का शोधन करके, वाच्यार्थ त्याग्यो।
लक्ष्यार्थ में करी एकता, मुक्ति जीवन की पाग्यो।।3।।
अहं ब्रह्म के निश्चय से, द्वैत भाव त्याग्यो।
परमानन्द भयो घट भीतर, भव बन्धन भाग्यो।।4।।
यो फल सब सत्संग को, पुण्य पूरबला पाग्यो।
ज्ञानानन्द बलिहारी संगत ने, आत्म को पाग्यो।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (117)

त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधुसमागमम्।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नित्यमनित्यताम्।।

दोहा (117)

प्रीतम पाया संगत सूँ, अविद्या दुरी खोई।
ज्ञानानन्द पाने से, जीवन मुक्ति होई।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (117)

प्रीतम पाया रे सत्संग में, म्हारो जाग्यो पूर्बलो भाग।।टेर।।
धन–धन है ई सत्संगत ने, तोड़ी मन को राग।
शील संतोष म्हारे मन में बस गयी, काम क्रोध गया भाग।।1।।
मल विक्षेप म्हारे दोनों मिटग्या, विवेक चढ़यो वैराग।
षट् सम्पति म्हारे मन में बस गई, प्रबल मुमुक्षता जाग।।2।।
दैहिक दैविक भौतिक तापा, यांकी मिटगी आग।
सत्संगत में आवता मन, गयो हरि में लाग।।3।।
सत्संग ने बलिहारी जाऊं, अहम् अपना त्याग।
ज्ञानानन्द क्या महिमा गाऊं, सब सत्संग का फाग।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (118)

संतशरणे सुखासीनः निशिदिवसं स्मरणम्।
जीवनमुक्त्यै गुरोः शरणं प्रपद्ये।।

दोहा (118)

संत समागम नित करूं, भूलू नहीं दिन–रात।
ज्ञानानन्द सत्संग सु, जीवन मुक्ति साथ।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	सत्संग महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (118)

ओ म्हारे विवेक उर में जाग्यो सा, सत्संग को प्रताप।।टेर।।
मल विक्षेप हो गया दूरा, आवरण हो गया चूरा।
चेतन दरश्या नूरा, होग्यो अन्तर साफ।।1।।
भेद सकल हटाया, संशय सारा मिटाया।
उर से अविद्या भगाया, खोज्या आप्या आप।।2।।
परस्या सत् चित मेला, हो आत्म संग खेला।
मिटग्या चौरासी गैला, कर्मो के मारी थाप।।3।।
सत्संग मिलग्यो चोखो, ज्ञानानन्द पाग्यो मौको।
अब मिटग्यो सब धोखो, आनन्द मिल्यो अमाप।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: भक्ति का अंग–8 ::—

श्लोक (119)

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता।।
(भागवत 11.14.20)

दोहा (119)

सद्‌गुरु की कृपा करो, दे दीजिए भक्ति दान।
निज देव को दिखाय के, मेटो खिंचातान।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	भक्ति प्रार्थना	राग आसावरी)

भजन (119)

ओ सामर्थ अर्ज सुनो विधाता।
बार–बार मेरी यही आशा, भक्ति देवो दाता।।टेर।।
मेरे उर में हुई अभिलाषा, मैं भक्ति को चाहता।
कृपा कर मुझको देवो, मैं गुण आपका गाता।।1।।
भक्ति सकल सुखों की खानी, सकल शास्त्र यश गाता।
ताकि इच्छा हुई उर अन्दर, बिन भक्ति तड़पाता।।2।।
जप तप नेम व्रत नहीं पूजा, नहीं तीर्थ में जाता।
मेरा नियम धर्म है तू ही, तुम बिन मैं अकुलाता।।3।।
तुम हो दाता देने वाले, मैं मुक्ता कहलाता।
ज्ञानानन्द शरण में तेरी, चरणा शीश झुकाता।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (120)

भक्त्या ह्यकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम्।
भक्तिः पुनातिमन्निष्ठा श्वपाकानपि सम्भवात्।।

दोहा (120)

सद्गुरु सामर्थ देव से, अरजी करूं पुकार।
भक्ति दीजो दान में, कृपा सु दृष्टि धार।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	भक्ति प्रार्थना	राग आसावरी)

भजन (120)

ओ सामर्थ भक्ति दीजे तुम्हारी।
बार–बार में करूं विनती अर्ज सुणो जी हमारी।।टेर।।
भव सागर भर्‌यो गहरो, तृष्णा नदीयां न्यारी।
कैसे तीरणा होवे यासें, भंवर पड़े है भारी।।1।।
भक्ति नाव जगत में प्यारी, सकल संत पुकारी।
कृपा कर बैठाओ यामें, जाऊं मैं बलिहारी।।2।।
अपरोक्ष ज्ञान की दीजै युक्ति, भूल मिटाओं सारी।
अन्तःकरण शुद्ध हो, दीज्यो ज्ञान बुवारी।।3।।
हाथ जोड़ मैं करूं विनती, सुण लीज्यो बनवारी।
ज्ञानानन्द शरण आपके, तन मन धन दियो वारी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (121)

धर्मः सत्यदयोर्युक्तो विद्या वा तपसान्विता।
मद्भक्त्या पेतमात्मानं न सम्यक् प्रपुनातिहि।।

दोहा (121)

भक्त बणकर भक्ति करे, कटे करम जंजाल।
ज्ञानानन्द पलक में, निहाल करे दयाल।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (121)

हाँ मन रे भक्ति से सुख पावे, जहां से भव सागर तर जावे।।टेर।।
भक्ति सकल सुखों की खानी, अगम–निगम सब गावे।
नियम धर्म से पालन करता, सहज अमरापुर पावे।।1।।
भक्ति माता ज्ञान की कहिजे, ज्ञान पुत्र कहलावे।
ज्ञान प्रकट होय हृदय में, अविद्या सब मिट जावे।।2।।
भक्ति भाव प्रेम की नौका, जो कोई नर चढ़ जावे।
चढ्या ज्यों ही पार उतरिया, फिर भव में नहीं आवे।।3।।
सत्यानन्द जी सेन बतावे, विरला समझ में लावे।
ज्ञानानन्द फन्द सब मिटज्या, काल कर्म नहीं खावे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (122)

श्रद्धा भक्ति ध्यान योगान्मुमुक्षोर्मुक्तिहेतुन्वक्ति साक्षाच्छुतेर्गीः।
यो वा एतेष्वेव तिष्ठत्युमेष मोक्षोऽविद्याकल्पिताद्देहबन्धात्।।

दोहा (122)

भक्ति बिन भगवन की, अन्तस न हो साफ।
साफ हुए बिन नहीं ह्वे, कैसे जाने आप।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (122)

हाँ हाँ रे भक्ति कमाओ रे, हरि प्रेम का थ्ये भाव बढ़ाओ।
प्रथम नियम धर्म से भाई, गुरु शरणा में आओ रे।
सेवा कर गुरु चरणा की, ज्ञान गंगा नहाओ रे।।1।।
उत्तम–मध्यम कनिष्ठ भक्ति, तीन भेद लौ ल्यावे रे।
उत्तम भक्ति श्रेष्ठ सब में, ताहिं को बढ़ाओ रे।।2।।
सब बन्धन की होवे निवृति, निज स्वरूप समाओं रे।
जन्म–मरण का मिट जाय झगड़ा, पार हो जाओ रे।।3।।
सत्यानन्द जी गुरु समझावे, मन से ध्यान लगावो रे।
ज्ञानानन्द भक्ति करके, मुक्त हो जाओ रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (123)

तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
भगवत्सङ्गिसङ्गस्य मर्त्यानां किमुताशिषः।।
(भागवत 11.18.23)

दोहा (123)

हरि अनुराग विराग जग, धन्य भाग जा सोय।
मन से भजन किये बिना, भक्ति न पावे कोय।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (123)

हाँ हरि भक्ति भाई कर लेना दिन–रात।
भजन करो भरपूर, भजन बिन काई न आवे हाथ।।टेर।।
निश–दिन ध्यान लगाकर भज ले, छोड़ जगत का साथ।
परम पिया है सब घट माहिं, सुन ले सांची बात।।1।।
यह संसार माया का टपरा, आग लगे जल जात।
शील सरोवर भक्ति माहिं, शीतल मन हो जात।।2।।
काम क्रोध सब दूरा होवे, शान्ति उर में आत।
काल बलि का दाव न लागे, देखत ही भग जात।।3।।
बादल बणके सतगुरु दाता, करे ज्ञान बरसात।
ज्ञानानन्द मुमुक्षु बनकर, पीवो ज्ञान प्रभात।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (124)

कर्मयोगज्ञानसाधनसम्पन्नाः सन्ति।
मत्कृपां विना सर्व एव मृतकाः इव समाः।।
(ज्ञा.श्लोक)

दोहा (124)

करम योग अरू ज्ञान सब, साधन यदपि बखान।
बिना भक्ति के जानलो, मृतक देह बिनु प्रान।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (124)

भक्ति बिन मानव कोई न जावे साथ, भाई भजले दीनानाथ।।टेर।।
ये जगत काल का चारा, क्यों फूला है मूँड़ गंवारा।
अब तो भज ले प्रीतम प्यारा, है सबका जगन्नाथ।।1।।
जब काल बजावे बाजा, छोड़े नहीं दुबला ताजा।
सबका करे भुजा खाजा, मारे करम की लात।।2।।
मिथ्या मोह माया हटाके, मिल जा ब्रह्म में जाके।
सत्य स्वरूप लिखा के, छोड़ जगत की साथ।।3।।
बिन स्वार्थ राम भजेगा, ज्ञानानन्द पाप कटेगा।
जीवन मुक्ति पाएगा, सर्व बन्धन कट जात।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (125)

इत्थं हरेर्भगवतो रूचिरावतार वीर्याणिबालचरितानि च शन्तमानि।
अन्यत्र चेह च श्रुतानि गृणन्मनुष्यो भक्तिं परां परमहंसगतौ लभेत।।

दोहा (125)

मानव तन को पायके, करो भक्ति से प्यार।
ज्ञानानन्द भक्ति बिना, लख चौरासी त्यार।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (125)

भक्ति रस भाया, प्रेम से कर ले पान।
जन्म–मरण का धोखा मिट्ज्या, पद पावे निर्वाण।।टेर।।
उत्तम भक्ति प्रथम कहिये, समझे एक ही जान।
अपनी जाण से दुख नहीं होवे, जो चाहे कल्याण।।1।।
दूजी भक्ति मध्यमा, लघु वचन लो लान।
प्रेमी दास सखा भाव से, भज ले रे भगवान।।2।।
तीजी भक्ति कनिष्ठा, सेवे मूरत पाषाण।
आरती वन्दन पुष्प चढ़ाकर, करे हरि गुणगान।।3।।
भक्ति साधन ज्ञान का रे, मिट्ज्या खींचातान।
ब्रह्म ज्ञान को धारण करता, छूट जावे जम डाण।।4।।
भक्ति भाव का बेड़ा लेकर, बेगा करो प्रस्थान।
ज्ञानानन्द हरि भक्ति से, अपने आपको जान।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (126)

श्रद्धाभक्तिपुरःसरेण विहितेनैवेश्वरं कर्मणा,
संतोष्याजिततत्प्रसादमहिमा जन्मान्तरेष्वेव यः।
नित्यानित्यविवेकतीव्रविरतिन्यासादिभिः साधनैः युक्तः
स श्रवणे सतामभिमतोमुख्याधिकारि द्विजः।।
(स.वे.सि. 796)

दोहा (126)

चाह रखे जो मुक्ति की, जपसी अजपा जाप।
ज्ञानानन्द भक्ति बिन, होवे ना अन्तर साफ।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग गजल)

भजन (126)

तू इतना तो कर ले बन्दे, भक्ति का भाव बढ़ा के,
निष्काम कर्म तुम करना, मन का मैल छुड़ा के।।टेर।।
कर ले गुरु की सेवा, सेवा से मिल जाय मेवा।
दरशे आत्म देवा, अभिमान को दूर हटा के।।1।।
भेदभाव नहीं करणा, पाप पुण्य नहीं भरणा।
ले संतो का शरणा, विश्वास मन में बढ़ा के।।2।।
भाव प्रधान है भक्ति, करजे होवे तो शक्ति।
फिर होवे जीवन मुक्ति, ज्ञान गुरु का पाके।।3।।
ज्ञानानन्द निर्भय हो लेलो, चोट शब्द की झेलो।
हो जीव ब्रह्म को मैलो, अविद्या का जाल हटा के।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (127)

प्रोक्तेन भक्तियोगेन भजतो मासकृन्मुनेः।
कामा हृदया नश्यन्ति सर्वे मयि हृदि स्थिते।।
(भागवत 11.14.29)

दोहा (127)

भक्ति करो निष्काम से, आ सद्गुरु के दरबार।
ज्ञानानन्द उलट आप, उतरे भव से पार।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (127)

भक्ति कर भाई, सद्गुरु से ले सार।।टेर।।
निष्काम कर्म कर भाई, निश दिन बारम्बार।
प्रेम भाव से भज भागवत, लिजे जन्म सुधार।।1।।
काया माया मिथ्या सारी, मतलब को परिवार।
भीड़ पड्या कोई काम न देवे, देखो खूब विचार।।2।।
उत्तम मध्यम कनिष्ठा, भक्ति तीन प्रकार।
जो कोई समझे सैन गुरु की, होवे जय जयकार।।3।।
शब्द बोध भक्ति से भाई, अनुभव आप विचार।
ज्ञानानन्द भक्ति बिना रे, जीवन है धिक्कार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (128)

कथन्चित् मत्कथादौ जातश्रद्धस्तु यः पुमान्।
न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगोऽस्य सिद्धिदः।।
(भागवत 11.20.8)

दोहा (128)

भज भगवत करो सेवा, तत्व ज्ञान विचार।
ज्ञानानन्द सार यही, भव जल उत्तरो पार।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (128)

हां हां रे भक्ति कीजे रे! तू राम भजन में, नित चित्त दीजे रे।।टेर।।
दया धर्म अरू शील संतोष से, शुद्ध भोमक्या कीजे रे।
निरमल नीर सीर ज्यों अन्तरः, श्रवण कीजे रे।।1।।
तू है कौन, आया कहां से, फिर कहां बास बसिजे रे।
इतना सोच विचार कर भाई, समझ पग दीजे रे।।2।।
भक्ति से भगवत है प्यारा, सत् शास्त्र साख भरिजे रे।
नीति नियम से भज भगवाना, पार तरिजे रे।।3।।
सत्य धर्म और प्रेम आस्था, सुधा सम पान करिजे रे।
ज्ञानानन्द समझ मन मेरा, उलट घर कीजे रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (129)

हरि भगति कर मानवी, छोड़ जगत का नेह।
ज्ञानानन्द भक्ति बिना, जगत झूठा व देह।।

(शिष्य बोल	वाणी बेकरी	भक्ति चेतावनी	राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (129)

भक्ति तो भाया, हरि भक्ता ने प्यारी।
प्रेम भाव से भजे भगवत ने, हो जावे भव पारी।।टेर।।
नाम जपे हरि सुमरण करता, आठ पहर इक सारी।
गुरु सेवा में हरदम रहवे, चूके नहीं इक बारी।।1।।
मिथ्या वचन कबहू नहीं बोले, बोले ज्ञान विचारी।
सार सार ने ग्रहण करे, अरु छोड़े दुनिया दारी।।2।।
निज भक्ति कोई करे महात्मा, मोह ममता ने मारी।
अमर धाम का मार्ग मिलज्या, जम जालम को जारी।।3।।
सत्य सनातन एक अगोचर, ज्यांकी खोजे बारी।
ज्ञानानन्द हरि भक्ति बिन, यूं ही पच पच हारी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (130)

भक्ति बिन संसार में, दुःख पावे नर नार।
सुख न पावे जीवन में, खावे यम की मार।।

(शिष्य बोल वाणी बेकरी भक्ति चेतावनी राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (130)

भक्ति कर भाई, अपना जन्म सुधार।।
यो अवसर तू चूक्यां पाछे, मिले न बारम्बार।।टेर।।
संत समागम करले प्यारे, गुरु शरणा में आर।
गुरु वचन को निश्चय करले, आठ पहर निरधार।।
करणी बाड़ी प्रेमरो पाणी, करले सिमरण सार
दृढ़ ज्ञान रा जब फल लागे, तब आनन्द होवे अपार।।
ये फल कोई विरला खावे, पूरण सतगुरु पार
खावे जो ही युग–युग जीवे, पार ब्रह्म की लार।
भक्ति करेला कोई मरजीवा, मोह ममता को मार
ज्ञानानन्द हरि भजन से, जन्म नाहिं दूबार।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: भक्ति महिमा ::—

दोहा (131)

भक्ति के उपकार से, पाया निरंजन राम।
अभय पद में जाय मिला, पूर्ण भया सब काम।।
पूर्ण भया सब काम, करणो अब नहीं बाकी।
रहूं ब्रह्म में लीन, यम खावे हम सु धाकी।।
शुभ–अशुभ को छोड़, सब कर्म किया निष्काम।
ज्ञानानन्द भक्ति से, पाया निरंजन राम।।

(शिष्य सामर्थ वाणी पेशन्ति भक्ति महिमा राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (131)

भक्ति कर पाया, निज आत्म का ज्ञान।।टेर।।
भव बंधन की होगी निवृत्ति, पद पाया निर्वाण।।टेर।।
सतगुरु सेवा धारण करके, शब्द सुणिया कान।
शब्द सुणिया मन मे गुणिया, हृदय पड़ी पिछाण।।1।।
अभेद भक्ति से आतम पायो, भेद भक्ति की काण।
जनम–मरण अब न व्यापे, छूट गया यम डाण।।2।।
बदती न दिखे बेलड़ी, चलता ना दिखे भान।
भजता न दिखे साधवा, कैसे करूं भखान।।3।।
मानव का पाया देवरा, मिलिया भक्ति वरदान।
ज्ञानानन्द धन्य धन्य हूं, कर भक्ति रस पान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (132)

तम् आराध्य गुरुं भक्त्या प्रणिप्रश्नसेवयाः।
प्रसन्नं तम् अनुप्राप्य पृच्छेज् ज्ञातव्यमात्मनः।।

दोहा (132)

प्रथम साधन भक्ति करी, तब मन निर्मल होय।
ज्ञानानन्द भक्ति मिली, गुरु अनुकंपा सोय।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (132)

हाँ हाँ रे भक्ति लिखाया रे।
सर्व अनर्थ की होगी निवृत्ति, परमानन्द पाया रे।।टेर।।
देह अभिमान को छोड़कर मैं, गुरु चरणा में आया रे।
तन मन धन अर्पण करके, आत्म जोत जलाया रे।।1।।
भक्ति सकल सुखों की खानी, ये मेरे मन भाया रे।
स्वस्वरूप अनुसंधानम् करके, भक्ति बताया रे।।2।।
भक्ति भक्त एक रूप है, यूँ वेदों में गाया रे।
अजर अमर आत्म अविनाशी, अपने में आप समाया रे।।3।।
भक्ति फल अनोखा भाई, भव का बंध छुड़ाया रे।
ज्ञानानन्द मग्न भक्ति में, भव पार लगाया रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (133)

अखण्डाद्वितीयरूपभक्त्या मम प्रदामि।
ज्ञानानन्द भक्त्या सर्वदुःखानां भंजनम्।।

दोहा (133)

भक्ति अभेद पायी के, दिया भेद सब टाल।
ज्ञानानन्द जाय मिला, अब न व्यापै काल।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (133)

निर्गुण भक्ति पाया रे, सतगुरु करी सहाई।
होए अधिकारी धारण कीना, प्रेम मगन लो लाई।।टेर।।
निर्गुण भक्ति है सुख दाता, दुतिया दूरा जाई।
सोही भक्ति हम धारण कीना, आठ पहर घट छाई।।1।।
मल विक्षेप आवरण तीनों, दूरा गया विलाई।
निरापद अविनाशी निरख्यो, ज्यों का त्यों थिरथाई।।2।।
परमानन्द भया घट भीतर, गुरुगम की चतुराई।
निज खजाना पा लिया जी, ऐसी करी कमाई।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिल गया, ऐसी सेन लिखाई।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, जीवन मुक्ति फल पाई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (134)

मोक्षकणसामग्र्यां भक्तिरेव गरीयसी।
स्वस्वरूपानुसन्धानं भक्तिरित्यभिधीयते।।

दोहा (134)

भक्ति के उपकार से, पाया निरंजन राम।
अभय पद में जाय मिला, पूर्ण हुआ सब काम।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (134)

भगति से प्रीति लागी रे, सब दुख हो गया दूर।।टेर।।
भक्ति से बन्धन खूटा, पाप जन्म का छूटा।
ज्ञान अन्तर में फूटा, भ्रम भयो चकचूर।।1।।
अब ज्ञान भया है ऐसा, धर्म–कर्म नहीं लेसा।
यही मिला उपदेशा, उग्यो ज्ञान को सूर।।2।।
भक्ति का मिलिया मौका, भाग जागिया चौखा।
आनन्द आया अनोखा, दरश्या आत्म नूर।।3।।
म्हारे लाग्या रंग मजेटी, संतों की बैठ्यों कमेटी।
ज्ञानानन्द लपेटी, आई अनुभव लूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (135)

श्रद्धाभक्तिपुरःसरेण विहितेनैवेश्वरं कर्मणा,
संतोष्याजिततत्प्रसादमहिमा जन्मान्तरेष्वेव यः।
नित्याऽनित्यविवेकतीव्रविरतिन्यासादिभिः साधनैयुक्तः, स
श्रवणे सतामभिमतो मुख्याधिकारि द्विजः।।

दोहा (135)

लगन लगी हरि भक्ति से, छूटत ना दिन–रात।
ज्ञानानन्द हरि हरि करुं, कोयल ज्यूँ कुरलात।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (135)

भक्ति से प्रीति लागी, और न भावे काम।।टेर।।
श्रवण सुनता जाऊं, मन से मनन कराऊँ।
मुख से कीर्तन गाऊं, गाऊं आठो याम।।1।।
अहम् चिन्तन लौ लाऊं, अहंकार दूर हटाऊं।
अपने में आप समाऊं, सदा रहूं निष्काम।।2।।
महावाक्य चिन्तन करता, और सकल बिसराता।
सत् चित् आनन्द में थिरता, लीन रहूँ सुबह शाम।।3।।
म्हारे भगति मन में भावे, अब और नजर न आवै।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, सफल हुआ सब काम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (136)

भकत्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुंचपरन्तम।।
(गीता 11.54)

दोहा (136)

उत्तम भक्ति पायी के, दीना बन्धन तोड़।
राम रंग के मायने, मन को लीना जोड़।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (136)

भगति का मार्ग पाया रे, सतगुरु के दरबार।।टेर।।
गुरु भेद भक्ति बिसराया, सब में आत्म एक लखाया।
द्वैत सकल मिटाया सा, पाया ब्रह्म अपार।।1।।
यह मार्ग बड़ा ही झीना, मैं गुरु कृपा से लीना।
आत्म अनुभव कीना सा, महावाक्य विचार।।2।।
अपरोक्ष अनुभव फैंका, पांच कोष जा छेका।
अपने आपको देखा, मिट्या भेद विकार।।3।।
गुरु सत्यानन्द सैलानी, म्हारी मेटी भरम ग्लानि।
ज्ञानानन्द यूं जानी, अपनी मति अनुसार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (137)

बाष्पगद्दया द्रवतेयस्य चित्तं, रुदत्यभीक्ष्णं हसति क्वचिच्च।
विलज्ज उद्गायति नृत्यते च मद्भक्तियुक्तोभुवनं पुनाति।।

दोहा (137)

भक्ति उपकार बहुत बड़ो, दुख दिया सब काट।
निज आत्मा को पा लिया, सतगुरु जी की हाट।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (137)

गुरु भक्ति का बाग लगाया सा, लागी नाहिं बार।।टेर।।
गुरु बीज शब्द का बाया, प्रेम का नीर पिलाया।
मैं जीवन मुक्त फल पाया, कर आत्म दीदार।।1।।
भक्ति सर्व सुखों की खानी, सतगुरु भेद दिया मोही जानी।
मैं निश्चय करके मानी सा, आनन्द भयो अपार।।2।।
मैं अभेद भक्ति अपनाया, तब भेद भक्ति बिसराया।
याही समझ में आया सा, निश्चय लीनी धार।।3।।
मेरा भाग पूर्बला जाग्या, मैं हरि भक्ति में लाग्या।
ज्ञानानन्द छोड़ भाग्या, सब विषय विकार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (138)

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यमर्थमहं स च मम प्रियः।।
(गीता 7.27)

दोहा (138)

चेतन पाया भक्ति से, दुखड़ा गया सब छुट।
ज्ञानानन्द पाया तब, सत्य आनन्द लूट।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (138)

म्हारे भक्ति को रंग लाग्यो, पल–पल भावे राम।।टेर।।
मैं जब भक्ति में लाग्यो, चिन्ता फिक्र सब त्याग्यो।
म्हारो भेद भरम सब भाग्यो सा, पाया आत्म राम।।1।।
भक्ति से पाया सेरा, परमात्म दरश्या नेरा।
मिटग्या चौरासी फेरा, पहुँच्या पूर्ण धाम।।2।।
भक्ति से मिलग्या सांई, जो व्यापक सबके मांहि।
अब भूल भरम न कांई, पूर्ण भया विश्राम।।3।।
मैं तो सांची भक्ति ध्याया, ज्यासु जीवन मुक्ति पाया।
ज्ञानानन्द यो गाया, मुर्शीद के मुकाम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (139)

सद्गुरोः स्वामी उपवनं दिवसः प्रबुद्धम्।
ज्ञानानन्दभक्त्या ब्रह्मादितीयं प्राप्यम्।।

दोहा (139)

सतगुरु माली बाग का, सींचत है दिन–रात।
ज्ञानानन्द सेवा से, पाया दीनानाथ।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति भक्ति महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (139)

भगति का बगीचा पाया सा, राम नाम का बीज।।टेर।।
गुरु ऐसा पेड़ लगाया, ज्यांके अमृतमय फल आया।
ज्यांने बण जिज्ञासु खाया सा, धर अन्तर में धीज।।1।।
ये फल अनोखा भाई, जाने सहज लियो मैं खाई।
बण अधिकारी पायी सा, फिर नहीं होऊं मरीज।।2।।
ये अभेद स्वरूप बगीचा, जाने प्रेम भाव से सींचा।
मिट गयी तान खींचा, पूर्ण हुई प्रतीज।।3।।
ज्यांरी शीतल–शीतल छाया, ज्ञानानन्द सेवा कर पाया।
पुण्य पुर्बला पाया सा, गयो राम जी रीज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (140)

मतोऽप्यन्यत्परतः परमात्मतत्त्वंर्गाधिपतेर्नकिंचित्।
येषां किमु स्पृहयितरेण तेषाम् अकिंचानानां मयि भक्तिभाजाम्।।

दोहा (140)

सद्गुरु बताया रास्ता, भक्ति निर्मल ज्ञान।
ज्ञानानन्द पायी के, तोड्या सब यम डाण।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	भक्ति महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (140)

गुरुगम से भक्ति पाया सा, धर आत्म का ध्यान।।टेर।।
गुरु अभेद भक्ति सिखलाया, मैं धारण कर लौ ल्याया।
द्वैत दूर भगाया रे, महावाक्य लियो जान।।1।।
गुरु बताया रस्ता, तब अभेद मार्ग सस्ता।
नहीं भेद भरम में फंसता, शुद्ध स्वरूप लियो मान।।2।।
निज भक्ति से ज्ञान पाया, सारा दुख दूर गंवाया।
अब एक रूप रहाया, स्वयं ब्रह्म निर्वाण।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी दाता, ब्रह्म ज्ञान का पूर्ण ज्ञाता।
ज्ञानानन्द बलिहारी जाता, हरदम करूं गुणगान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (141)

मोक्षकानां कारणसामग्रयां भक्तिरेव गरीयसी।
स्वस्वरूपानुसन्धानं भक्तिरित्यभिधीयते।।

दोहा (141)

प्रेम हुआ निज राम से, छूटा जग का नेह।
ज्ञानानन्द गुरु भक्ति सु, पाया आदू धेय।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	भक्ति महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (141)

हाँ रे भक्ति मन भागी रे,
हरि प्रेम की ड़ोरी म्हारे, उर में लागी रे।।टेर।।
जन्म–जन्म की सुती सुरता, गुरु शब्दां से जागी रे।
मल विक्षेप आवरण तीनों, दूर बिसरागी रे।।1।।
काम क्रोध मद लोभ लुटेरा, याने दूर हटागी रे।
शील संतोष दया भाव म्हारे, घट में छागी रे।।2।।
ब्रह्म चिन्तन होन लाग्या, मलिन वासना भागी रे।
सर्व दुःखों की हो गयी निवृत्ति, परमानन्द को पागी रे।।3।।
सत्यानन्द जी सद्गुरु मिलग्या, गहरी अनुभव छागी रे।
ज्ञानानन्द भगति पाकर, हुआ बड़ भागी रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (142)

चाव म्हारे लग रह्यो, हर पल लगतो जाय।
ज्ञानानन्द भजन से, पाय लियो निज आय।।

(शिष्य सामर्थ बोल   वाणी पेश्यन्ति   भक्ति महिमा   राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (142)

हाँ हाँ रे चाव म्हारे लाग्यो रे।
हरि भक्ति को रंग म्हारे, उर में छा गयो रे।।टेर।।
कई जन्म को सूतो म्हारो जीवडो, गुरु शब्द से जाग्यो रे।
उलट देखकर आपको, भव बन्धन त्यागो रे।।1।।
सत्संग म्हारे मन में भावे, कुसंगत से भाग्यो रे।
आत्मज्ञान सुख रो कारण, सोई समझ में आग्यो रे।।2।।
ज्ञान गंगा सुख सागर भरया, ताँ मांहि मैं नहाग्यो रे।
उर में शीतल प्रेम फुवारा, मल विक्षेप बिसराग्यो रे।।3।।
सत्यानन्द जी शब्द सुणाया, सो म्हारे हिवड़े लाग्यो रे।
ज्ञानानन्द गुरु भक्ति से, अभय पद पाग्यो रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (143)

य इमं परमं गुह्यं मदभक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।।
(गीता 18.68)

दोहा (143)

प्रभू भक्ति को पायी के, दीना बंधन तोड़।
राम रंग के मायने, मन को लिना जोड़।।

(शिष्य सामर्थ बोल   वाणी पेश्यन्ति   भक्ति महिमा   राग धमाल मारवाड़ी)

भजन (143)

हाँ हाँ रे विरह म्हारे जागी रे,
हरि की लगन, म्हारे उर में लागी रे।।टेर।।
काम काज भावे नाहीं, निद्रा उर से भागी रे।
आठों पहर रहूँ तड़पता, चिन्ता गहरी जागी रे।।1।।
बादल देख पपैया के मन, पीऊ–पीऊ रट लागी।
कबहूं सुरत डिगे नाहिं ज्यांकि, भया अनुरागी रे।।2।।
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला यांसे, सुरता हो गयी आगी रे।
राम नाम से निज नेह मेरो, प्रेम से नहागी रे।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिल गया, ज्यामें सैन समागी रे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मन भयो वैरागी रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: नाम का अंग—9::—

श्लोक (144)

आपन्नः संसृति घोरां यन्नाम विवशो गुणन्।
ततः सद्यो विमुच्येत यद्बिभेति स्वयं भयम्।।
(भागवत 2.2.24)

दोहा (144)

सद्गुरु जी कृपा करो, दे दीजिए नाम दान।
निज देव को दिखाय के, मेटो खींचातान।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यमा नाम प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (144)

सद्गुरु नाम दान दे दीज्यो, जन्म–जन्म का पाप मिट ज्या, जल्दी ही कह दीज्यो।।टेर।।
नाम बड़ा है जग में, कृपा मोपे करज्यो।
भक्ति भाव बिसरु नाहीं, अन्तःकरण शुद्ध कीज्यो।।1।।
मैं भूल पड्यों भव माही, बेगा ही सुध लीज्यो।
मल विक्षेप आवरण तीनों, याने दूर कर दीज्यो।।2।।
वेद महावाक्य कृपा करके, अर्थ सहित कह दीज्यो।
मूल अविद्या मेटो सारी, शुद्ध स्वरुप लिखाज्यो।।3।।
हाथ जोड़ मैं करूं विनती, नाम नीर रस पाज्यो।
ज्ञानानन्द चरण का चेरा, पूर्ण आश कर दीज्यो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (145)

अरज करूं गुरुदेव जी, नाम दीजियो दान।
ज्ञानानन्द की विनती, मेटो चारों खान।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यमा नाम प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (145)

सद्गुरु जी नाम सुनावो जी, मेटो मन की त्रास।।टेर।।
मैं कामी बहु अभिमानो, आठों पहर दीवानो।
माफ करो द्यो दानो, मैं लेकर आयो आस।।1।।
मणि राम नाम की चाऊ, जासें अपनो भरम मिटाऊ।
सत् उजियारा पाऊ, है सत् चित आनन्द रास।।2।।
राम नाम री मोटी माया, संत शास्त्र सब गाया।
शरण मांगण को आया, मैं हूँ तेरा दास।।3।।
गुरु थाने अरज सुनाऊं, मैं नाम दान को चांऊ।
ज्ञानानन्द मर मिट जाऊ, कर दो पूर्ण आस।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (146)

एकाक्षर परं ब्रह्म श्रुतिः सन्तइति वदति।
ज्ञानानन्दः लिखति अखण्ड ब्रह्मानन्दोऽस्ति।।

दोहा (146)

आस करे है देवता, वो तन मिलियो तोय।
ऐसे तन को पाय के, ज्ञानानन्द मत खोय।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	नाम चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (146)

अब तु चेत प्यारे, ले–ले हरि नाम।।टेर।।
सब नामों में नाम बड़ा, नामों बीच प्रधान।
जैसे नौ लख तारों में, यूँ चन्दा को जान।।1।।
ओम बिना सिद्ध नहीं होवे, और यत्न लो धार।
ज्यां घट ओम प्रगटिया, कर्म गया सब जार।।2।।
चंचल मन निर्मल हो जावे, जरा न लागे बार।
ज्ञान प्रकट होते ही घट में, पावेला निज सार।।3।।
चेतन हो चतुराई त्यागो, कीज्यो आप विचार।
ज्ञानानन्द राम नाम से, उतरो भव जल पार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (147)

एतदेवाक्षरं ब्रह्म एतदेवाक्षरं परम्।
एतदेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छतितस्य तत्।।

दोहा (147)

ओम अक्षर पर ब्रह्म, श्रुति कहवे पुकार।
निज मूल अक्षर ऊँ है, जड़ चेतन इकसार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	नाम चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (147)

नामों में भाई नाम, ब्रह्म ओमकार।
ओम नाम का सुमरण करल्यो, हो आत्म दीदार।।टेर।।
ओम नाम में तीन मात्रा, अकार ऊकार मकार।
अर्द्ध मात्रा रूप आपको, देखो स्वयं विचार।।1।।
ओम आगे ओम पीछे, ओम सर्वज्ञ संभार।
ओम का ही सकल पसारा, ओम आरमपार।।2।।
ओम कार अंग्रह उपासना, करे सोही होशियार।
तीन लोक में होवे वन्दना, जावे हरि के द्वार।।3।।
अकार ऊकार मकार जानो, लय चिन्तन विधि अनुसार।
ओम सोहम जानके, दुतिया भये निवार।।4।।
ओमकार का सार बताऊं, वेद मतानुसार।
ज्ञानानन्द वाच्यार्थ त्यागो, लक्ष्यार्थ लो धार।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (148)

ऊँ अखण्डस्वरूप इत्यादि वदन्ति वेदाः।
ज्ञानानन्द ऊँ जपति नाश्यन्ति सर्वकर्माणि।।

दोहा (148)

सांचा नाम जानके, रटन कर मन लाई।
मुक्ति मिले इस जीव को, अविद्या दूर जाई।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी नाम चेतावनी राग चलत मारवाड़ी)

भजन (148)

तू रट ले ओम हरि नाम, नाम है निर्वाणी।।टेर।।
अगम–निगम में ऐसे पुकारा, ओम नाम सबका आधारा।
जो नर रटे होवे भव पारा, फिर पावे आधु धाम।।1।।
बिन स्वार्थ कोई ओम को रटता, भव बन्धन ज्यारां पल में कटता।
जन्म–मरण में फिर नहीं फिरता, पावे शुद्ध साक्षी घनश्याम।।2।।
ओम नाम का सुमिरण करसी, पूर्ण विवेक घट मांहि भरसी।
कारज वांका सारा सरसी, मिट जावे विघ्न तमाम।।3।।
पुरूष सत्यानन्द जी दाता, ओम नाम रटो मन भ्राता।
ज्ञानानन्द जब होवे ज्ञाता, फिर पद पावे निर्वाण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (149)

नंगारो नाम रसना, सुन्द दे रे ताल।
ज्ञानानन्द मगन होय, फिर ना खावें काल।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी नाम चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (149)

बजाले मनवा नाम को नंगारो तू बजाले।
सोऽहम नाम की धुन समझ के, जीवन मुक्ति पाले।।टेर।।
ई काया रो बना नंगारो, सुरता री डोर खिंचाले।
मन की ढ़पली बांध ऊपरे, राग सुरेली सुनाले।।1।।
सत् की चौपड़ माण्ड़ भाईड़ा, दिल बिच ज्योत जगाले।
अज्ञान अंधेरी भागे दूरी, ज्योति में ज्योति मिलाले।।2।।
जीवन मुक्ति माल मौखला, सत् का सौदा कराले।
बन व्यापारी माल अमोलक, यम का कर्ज चुकाले।।3।।
सत् चित् आनन्द रूप तिहारो, बंसी चैन की बजाले।
ज्ञानानन्द परख नाम निज, सारी त्रास हटाले।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (150)

नाम निज मोती धन है, हंसो का आधार।
काग कैसे खाए सकें, फूटा भाग विचार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी नाम चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (150)

मन सुनरे हरि नाम की धुन सुनरे,
मानव देह मिला मुश्किल से ज्ञान गुरु से गुनरे।।टेर।।
राम नाम का मोती मनवा, हंस होई चुनरे।
झूठी बाँता छोड़ जगत की, यांसु ले ले मोन रे।।1।।
राम नाम को हीरा भाई, कांई कीमत कर रे।
मुक्ति मिलज्या सहज में, अमरापुर पद ले रे।।2।।
राम नाम से शिला ही तरगी, सत् शास्त्र पढ़ ले रे।
वाल्मिकि विद्वान हुआ, राम नाम धुन ले रे।।3।।
त्यागी ग्रहस्थी बुढ़ा बालक, लेवे नाम चुनरे।
ज्ञानानन्द बलिहारी उन पर, फेर जन्म नहीं ले रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (151)

एकोवशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।
(क.उ.)

दोहा (151)

गर्व करे मत मानवी, मानव तन को पाय।
ज्ञानानन्द नाम बिना, मार यमों की खाय।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी नाम चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (151)

क्यों ना राम रंग रांचा रे।
जगत में कोई सत्य नाहीं, एक राम सांचा रे।।टेर।।
यह तन मिल गया मुक्ति खातिर, है जो इकदम काचा रे।
कांई गर्व गुमान करे नर, काल मारे तमाचा रे।।1।।
लख चौरासी में घणो दुख पाया, ये है उण्ड़ा खांचा रे।
गुरु बिना कोई काड़े नाहिं, डूब मरे नर पाछा रे।।2।।
अगम–निगम की सार न जाणी, पाना बहुत सा बाँच्या रे।
आत्म ज्ञान बिन मर्या जगत सब, निरक्षर न रांचा रे।।3।।
निरख–परख कर समझो भाई, झूठा जग का ढ़ांचा रे।
ज्ञानानन्द जीवन का मोर्चा, मत छोड़ो याने पाछा रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (152)

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्तितु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।।
(गीता 9.29)

दोहा (152)

भजन मूल है राम का, तहां टिका संसार।
ज्ञानानन्द भूले मति, दो दिन का व्यवहार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	नाम चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (152)

जगत में सांचो राम जी को नाम,
राम बिन और काम नहीं आवे, झूठो खेल तमाम।।टेर।।
जन्म लियो जब आयो जगत में, खुशी भई जननी बाम।
खुशी मनावे कुटम्ब कबीलो, हर्ष उछाव को काम।।1।।
युवा भया तब शादी किन्ही, त्रिया संग सुख धाम।
टाबर–टुबर मौकला जामै, भूल गया निज राम।।2।।
बुढ़ारा में रोग सतावे, लटक गयी सब चाम।
बेटा–पोता खीयो न माने, इन्द्रिया हो गयी जाम।।3।।
सोच समझ ले मन के माही, झुठा जग तम्बू ठाम।
ज्ञानानन्द राम सुमिरले, आठ पहर सब याम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (153)

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति।।
(कठो. 1.3.14)

दोहा (153)

जीवन डोरी सूत की, पल में टूटी जाय।
ज्ञानानन्द पता नहीं, समय कब चला जाय।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	नाम चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (153)

कुण न जाने कब टूट जावे, जीवन की लड़ी।
रामजी का सुमिरन करले, घड़ी दो घड़ी।।टेर।।
भाई बन्धु जग नाती, कोई नहीं संग साथी।
मौत दौड़ी आती मारे, घड़ा और घड़ी।।1।।
लागे काल बलि का पहरा, नहीं छोड़े अंधा बहरा।
सबका मुरझा देवे चेहरा, काल ले जावे सड़ा–सड़ी।।2।।
समझे तो राहि समझाऊं, बण अधिकारी सेन बताऊँ।
महावाक्य खोल समझाऊं, मुक्ति हो याहि घड़ी।।3।।
गुरु चरणा में चित्त दीजे, अनुभव गम्य सतगुरु कीजे।
ज्ञानानन्द भव सागर तिरजे, बाजी जीतो जड़ा–जड़ी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: फकीरी का अंग—10 ::—

श्लोक (154)

फकीरीः सद्गुरोः प्रदाम्यहम् उच्चैर्ममप्रार्थनाः।
ज्ञानानन्द कथयति त्यजति रागद्वेषौ।।

दोहा (154)

सद्गुरु फकीरी दीजिए, अरज करूं पुकार।
मोह बंध को तोड़ के, कीज्यो भव से पार।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	फकीरी प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (154)

फकीरी मन में भावे सा, देवो गुरु दात्तार।।टेर।।
फकीरी समझज्यो प्यारी, दुनियां लागी खारी।
आशा तृष्णा देवो मारी, कर दो ब्रह्म की लार।।1।।
जब तक फकीरी नहीं देवे, तब तक मौन नहीं होवे।
जीवन वृथा खोवे, समय हो रियो बैकार।।2।।
देवो फकीरी की युक्ति, ज्यांसू पाऊं जीवन मुक्ति।
पाऊं पूर्ण शक्ति, आऊं नहीं दुबार।।3।।
गुरु एक अरज सुनाता, ज्ञानानन्द फकीरी चाहता।
और कुछ नहीं भाता, बेगा लेवो संभार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (155)

फकीरीः उत्तम साधनं नाश्यन्ति सर्वपापम्।
ज्ञानानन्दस्य श्रृणु फकीरीः प्रदाम्यहम्।।

दोहा (155)

फकीरी के प्रताप से, काँपता काल जाल।
ज्ञानानन्द की सुणके, फकीरी दो दयाल।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	फकीरी प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (155)

ओ सामर्थ दीजे फकीरी बानो,
संसारी जन जाणे नाहीं, उल्टो मारे तानो।।टेर।।
मैं जैसा वैसा आप रे आगे, नहीं आपसे छानो।
न्यायाधीश न्यायकारी हो प्रभू, थ्ये सब घट की जानो।।1।।
विवेक बुद्धि है नहीं मुझमें, और कछू नहीं जानो।
आप बिना दूजा नहीं मेरे, नहीं दूजे को मानो।।2।।
एक इच्छा है मेरे दिल में, चाहूँ प्रेम में नहानो।
प्रेम में डूबकी इकबर मारूं, फिर नहीं होऊं विरानो।।3।।
हाथ जोड़कर करूं विनती, द्यो चरणा को ठिकानो।
ज्ञानानन्द कृपा हो तेरी, सफल जमारो जानो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (156)

श्रृणोतिः मम प्रार्थनां सद्गुरोः फकीरी प्रदाम्यहम्।
ज्ञान फकीरी धार्यः त्यजतिसर्व बंधनम्।।

दोहा (156)

सतगुरु सुनिये प्रार्थना, दीजे फकीरी मोय।
ज्ञान फकीरी पायके, देऊं बंधन खोय।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	फकीरी प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (156)

ओ सामर्थ ऐसी फकीरी दीज्यो।
जन्म मरण का चक्कर मिटज्या, भव से पार करिज्यो।।टेर।।
मल विक्षेप आवरण तीनों, आप दूर करिज्यो।
अन्तस मेरो शुद्ध कराके, सत्य स्वरूप लिखाज्यो।।1।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति, तुर्या आगे बसाज्यो।
स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण, आगे आप रहायज्यो।।2।।
ब्रह्म आत्म की होवे एकता, ऐसी युक्ति दिखाज्यो।
एक ब्रह्म दरशे सब में, दूजा भाव मिटाज्यो।।3।।
रस फकीरी प्रेम पीव का, बेगा पान कराद्यो।
अबके आस लगी है म्हारे, पपीया बूंद पिलाज्यो।।4।।
हाथ जोड़कर करूं प्रार्थना, बेगा ही सुन लीज्यो।
ज्ञानानन्द चरणों का चाकर, अब के आस पुरिज्यो।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (157)

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शांतिमचिरेणाधिगच्छति।।
(गीता 4.39)

दोहा (157)

महर कर गुरुदेव जी, फकीरी दो आशीष।
मैं आयो शरण माय, कर बेगो बख्शीश।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	फकीरी प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (157)

मोहे ज्ञान फकीरी देवो सा, महर करो दात्तार।।टेर।।
हो जावो स्वामी राजी, काटो भव री बाजी।
थ्ये मत होवो नाराजी, मैं शरण पड्यो आर।।1।।
गुरु मल विक्षेप मंडराया, आवरण हृदय छाया।
निज अपना बिसराया, समझूं न सार असार।।2।।
काम क्रोध भारी, मति हर लिया म्हारी।
मैं लीनो शरण तिहारी, भव से उतारो पार।।3।।
ज्ञानानन्द अरज पुकारा, सुन लो नाथ हमारा।
कर दो घट उजियारा, मेटो सकल अन्धार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (158)

मंमन शुद्ध भवति सर्वा दुर्गुणा त्यजन्ति।
ज्ञानानन्दस्य प्रार्थनाः फकीरी मम प्रदामि।।

दोहा (158)

निर्मल होवे मन मेरा, मेल जावे खोय।
ज्ञानानन्द की सुणके, फकीरी दीजे मोय।।

(शिष्य लघु बोल वाणी मध्यमा फकीरी प्रार्थना राग मारवाड़ी)

भजन (158)

म्हारे आशा फकीरी की लागी सा, देवो गुरु दात्तार।।टेर।।
म्हारे फकीरी मन में भावे, और म्हारे दरश न आवे।
फकीरी बिन रहा नहीं जावे, चिन्ता लागी बारम्बार।।1।।
मोहे दान फकीरी देवो, चिन्ता सब हर लेवो।
मोही मगन मस्त कर देवो, म्हारे थाँको ही आधार।।2।।
मैं आशा लायो भारी, मैं आयो शरण तुम्हारी।
आशा पूरी करो म्हारी, सब जग का पालन हार।।3।।
मैं अज्ञानी दाता, चरणों में शीश झुकाता।
ज्ञानानन्द सुनाता, गुरुदाता लेवो उबार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (159)

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।।
(गीता 5.7)

दोहा (159)

फिकर चिन्ता को छोड़, करो चेतन में बास।
सत् फकीरी यही है, कहता हूँ खासम खास।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी फकीरी चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (159)

फकीरी तोड़े मोह जंजाल।
बिन मोह छोड्या नाहिं फकीरी, तुरत खा जावे काल।।टेर।।
दस दौष अरू सात दुर्व्यसन, इनको दे तू टाल।
काम क्रोध विषय वासना, सबको दूरी बाल।।1।।
दस अंग धर्म का भाई, उर में ले तू घाल।
मल विक्षेप को दूर हटा के, गुरु नीति में चाल।।2।।
सार शब्द को धारण करना, ज्यो मोति चुगे मराल।
उत्तम फकीरी समझ गुरु से, पल में होवे निहाल।।3।।
सांचा गुरु समझावे, महावाक्य संभाल।
ज्ञानानन्द उत्तम फकीरी, अनुभव भरिया ताल।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (160)

स्वार्थतृष्णां त्यजन्ति फकीरी ग्रहणन्ति।
तत् फकीरी देवस्यः ज्ञानानन्दः समर्पणम्।।

दोहा (160)

आशा तृष्णा छोड़ के, लेव फकीरी धार।
ज्ञानानन्द फकीर को, बार–बार बलिहार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	फकीरी चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (160)

फकीरी निर्मल होकर लेना।
तन मन धन अर्पण कर गुरु के, चरणों में चित्त देना।।टेर।।
पहला साधन फिकर छोड़कर, निर्भय होकर रहना।
कर्म जाल अविद्या छोड़ो, पंथ ज्ञान में चलना।।1।।
राम रमैया सबमें समाया, उसी में जाय बसेना।
उलट सँभाले आपको, ना होवे जनम मरेना।।2।।
अहम् ब्रह्म चिन्तन करना, अद्धैत भाव में रहेना।
सर्व वासना दूर हटाकर, माया पर चलेना।।3।।
सांचा गुरु की बैठ शरण में, चरणों में चित्त देना।
ज्ञानानन्द सदगुरु कृपा से, मुक्ति पद ले लेना।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (161)

ज्ञान फकीरीया दुर्लभः यः तत्त्वस्य नायकः।
एते नर न मिलन्ते यः गुरोः पन्थे गच्छति।।

दोहा (161)

ज्ञान फकीरी कठिन है ज्यों खाण्डा की धार।
बिरला कोई नर बचे, गुरुगम सेन विचार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	फकीरी चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (161)

सांची फकीरी गुरु वचनों से, कोई बिरला ही पाता है।
फिर लखे आप निज रूप को, भव सागर तर जाता है।।टेर।।
चिन्ता फिकर को छोड़ के, गुरु शरणा में आता है।
तन मन धन अर्पण करके, आत्मस्वरूप लखाता है।।1।।
शूरा होई सो रण में लड़ता, चोट शब्द की खाता है।
काम क्रोध को दूर हटाके, मोह ममता को भगाता है।।2।।
वाच्यार्थ को छोड़कर, अपना लक्ष्य बनाता है।
हो बेपरवाह परवाह नाहिं, मार्ग अपने चलता है।।3।।
सांचा साहिब निश्चय करके, वो मरहम को पाता है।
ज्ञानानन्द फकीरी पाके, सहज अमर हो जाता है।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (162)

फकीरी समझे सुरमा, तन मन धन कुर्बान।
ज्ञानानन्द वो पावे, असली पद निर्वाण।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	फकीरी चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (162)

फकीरी समझे बिरला साधो सूर।
समझे सोही परम पद पावे, दरशे निजानन्द नूर।।टेर।।
काम क्रोध को मार भगा दे, सुने शब्द को तूर।
वचन धार बिसरे नहीं कबहूं, चातक ज्यों आतूर।।1।।
सूरवीर सो रण में जावे, अपना आप्या चूर।
तब दुश्मन नेड़ो नहीं आवे, जंग लड़े भरपूर।।2।।
सूरा सन्त को एक मतो, रण छोड़ न जावे दूर।
हँसते–हँसते प्राण त्याग दे, मन का पूरा मूर।।3।।
साधु फकीर–फकीरी पावे, अपने आप हुजूर।
ज्ञानानन्द बलिहारी जावे, उगता अनुभव सूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (163)

यथा यथैव सा वृतिः ब्रह्माकारतया स्थिता।
पृथक् न भाति ब्रह्मैवाद्वितीय भवरूपतः।।

दोहा (163)

चाह गयी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।
जिसको कछू न चाहिए, वो शहंशाहों का शहंशाह।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	फकीरी चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (163)

फकीरा ब्रह्म निष्ठ ब्रह्मज्ञानी।
राग द्वैष लवलेश नहीं, रहता सदा निर्वाणी।।टेर।।
सब कुछ करता कुछ नहीं करता, बोलत बोले ना वाणी।
सब कुछ खाता कुछ नहीं खाता, खावत पीवे ना पाणी।।1।।
पदम पलाश जल में रहता, लिपता नहीं ज्यूँ पानी।
यूँ निरलेप सदा ही रहवे, भोगे नहीं चारों खानी।।2।।
ब्रह्म फकीरा जहाँ रहावे, पवित्र हो जावे धरणी।
पाप पुण्य में लागे नाहिं, अनुभव मस्त सैलानी।।3।।
ऐसा फकीरा बिरला कोई, जीवन मुक्त रहानी।
ज्ञानानन्द बलिहारी वांपे, मिटा लिया खींचातानी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: फकीरी महिमा ::—

श्लोक (164)

ज्ञान फकीरयाधर्म त्यजन्ति दसौदोषानां।
दृश्यन्ति निजानन्दः यथैव भशति जाग्रतं।।

दोहा (164)

ज्ञान फकीरी धार के, तज दिया दसो दौष।
देखा अपने आपको, जब ही आया होश।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ती	फकीरी महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (164)

मैं असली फकीरी पाया सा, सद्गुरु के दरबार।।टेर।।
ना मैं मूड़ मुंडाया, ना मैं जटा बढ़ाया।
ना मैं भगवा रंगाया, हो आड़म्बर से बाहर।।1।।
'फ' फक्र को छोड्या 'क' कर्मो को तोड़िया।
'र' राम से प्रीत जोड्या, पल–पल बारम्बार।।2।।
लेर फकीरा सेरा, निज आनन्द को हेरा।
अब मिट गया तेरा मेरा, मैं आर–पार इकसार।।3।।
मैं पाया फकीरी चोखी, ज्यांसे काल गेल को रोकी।
ज्ञानानन्द लहर अनोखी, गुरु वचनानुसार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (165)

ज्ञान फकीरया धार्म त्यजनित सर्वादुखानाम्।
ज्ञानानन्दः संतसंगेः त्यजते त्रयं दोषानाम्।।

दोहा (165)

ज्ञान फकीरी धारी के, दौष किया सब दूर।
मल विक्षेप आवरण को, करिया चकनाचूर।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ती	फकीरी महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (165)

ओ म्हारे रंग फकीरी लाग्यो सा, और न भावे काम।।टेर।।
म्हारो चित्त आत्म में लाग्यो, अनात्म चिंता त्यागो।
भेद–भरम सब भाग्यो जी, सदा करूं आराम।।1।।
मैं तो आशिक भयो दीवानो, पहरयो फकीरी बानो।
ज्यासूँ निज स्वरूप पहचानो, पायो आत्म राम।।2।।
भयो फकीरी उपकारो, जासूँ पायो राम पियारो।
मैं जड़ से होग्यो न्यारो, सदा साक्षी घनश्याम।।3।।
फकीरी महिमा भारी, ज्यांपे तीन लोक दियो वारी।
ज्ञानानन्द पुकारी, पूर्ण भया सब काम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (166)

गुरोः फकीरया प्रदाम्यहम् दृश्यते निजात्मा।
ज्ञानानन्द निजानन्दे नश्यति कर्मस्य रेखः।।

दोहा (166)

गुरुगम फकीरी पायी, मैं लिया आत्म देख।
ज्ञानानन्द निज देश में, मिटी कर्म की रेख।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ती फकीरी महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (166)

मैं तो ज्ञान फकीरी लीना सा, पाई लिया निज धाम।।टेर।।
सकल संशय भाग्या, ब्रह्म चिन्तन में लाग्या।
जीवन मुक्ति पाग्या सा, पूरण भया सब काम।।1।।
फकीरी संग भया वैरागी, म्हारी मलिन वासना भागी।
सुरत ब्रह्म से लागी सा, पल–पल आठों याम।।2।।
मैं ऐसी फकीरी पाया, ज्यांमें कपड़ा पाँच रंगाया।
अब रंग ना हटे हटाया, चढ्यो साक्षी चित्त श्याम।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी पाया, आत्म रूप लिखाया।
ज्ञानानन्द यूँ गाया, मुर्शीद के मुकाम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (167)

सर्वचिन्ता भयान्त्यजन्ति आत्मैव रम्यते।
परब्रह्म प्राप्नोति सद्गुरोः समीपे।।

दोहा (167)

चिन्ता फिकर को छोड़, किया चेतन में वास।
ज्ञानानन्द पाही लिया, सतगुरु जी के पास।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ती फकीरी महिमा तर्ज–आरती आठोयाम होती...)

भजन (167)

फकीरी गुरुगम से पाया, फकीरी गुरु गम से पाया।
आप्या किया विचार सार सत्, घट में दरशाया।।टेर।।
फकीरी फकर नहीं राया–2।
कुकर्मा को काट घट में, नूर झलकाया।।1।।
सूक्ष्म कारण नहीं काया–2।
महाकारण के पार म्हानें, चेतन दरशाया।।2।।
मल विक्षेप नहीं भाया–2।
घट का पर्दा तोड़ जीव को, ब्रह्म बतलाया।।3।।
चेतन चित्त माही आया–2।
वाच्यार्थ को त्याग, लक्ष्य आत्म लौ लाया।।4।।
सार सबद सतगुरु से पाया, महिमा, ज्ञानानन्द गाया–2।
लिया फकीरी धार मुक्ति, जीवन फल पाया।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (168)

अविनाशी अखण्डज्ञानः फकीरी धार्यः।
ज्ञानानन्द इति कथयति संत भाषणं प्रदार्थः।।

दोहा (168)

ज्ञान फकीरी मोय मिली, भला जगा सो भाग।
अज्ञान निंद्रा तज दिया, जाग्रत माही जाग।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ती	फकीरी महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (168)

फकीरी रंग लाग गया पूरा, हटाया होवे नहीं दूरा।।टेर।।
रंग लाग्या दिन–दिन गहरा, परमात्म निरख्या नेहरा।
मिट गया चौरासी फेरा, अपने आप को हेरा।।1।।
फकीरी रंग मुर्शीद ने घोला, जहाँ मैं डूबो दिया सब चोला।
वाँ में कपड़ा पाँच झकोला, होकर जग से अकोला।।2।।
फकीरी रंग लाग गया पक्का, विषयों से छूट गया छक्का।
मैंने पढ़ियो गुरुगम कक्का, जम के मार दिया धक्का।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी दीना, ज्ञानानन्द धारण कर लीना।
गुरु मिले प्रवीणा, ज्यांसे आत्म को चीना।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (169)

यदापश्यः पश्यतेरकमर्णः, कर्तारमीशं पुरूषं ब्रह्मयोनम्।
तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय, निरन्जनः परमं साम्यमुपैति।।

दोहा (169)

पार ब्रह्म पायी के, तजिया सारा राग।
ज्ञानानन्द पाया अब, भला जगा सो भाग।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ती	फकीरी महिमा	राग चलत धमाल मारवाड़ी)

भजन (169)

हाँ हाँ रे फकीरी पायी रे।
महर भई गुरूदेव की, सत् सेन लिखाई रे।।टेर।।
मल विक्षेप आवरण तीनों, अन्तःकरण धुलाई रे।
ब्रह्म आत्म निज उर में पाया, मस्ती छाई रे।।1।।
आशा तृष्णा ममता बैरी, काम क्रोध बिसराई रे।
शील संतोष और दया भाव, म्हारे उर में आई रे।।2।।
अविद्या माया हट गयी दूरी, आत्म पद लौ लाई रे।
द्वैत का सब झगड़ा मिट गया, अद्वैत रहाई रे।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिलग्या, मुक्ति राह बतलाई रे।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, गंगा नहाई रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (170)

ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः क्षीणैः क्लेशैर्जन्ममृत्युप्रहाणिः।
इत्येवैषा वैदिकी वाग्ब्रवीति क्लेशकर्मक्षये जन्ममृत्युप्रहाणिः।।

दोहा (170)

भैख फकीरी ले सभी, बिरला लेवे ज्ञान।
तत्त्व ज्ञान हम चीना, भइ बन्धन की हान।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ती	फकीरी महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (170)

मैं असल फकीरी पायो जी, मिट गयो कर्म क्लेश।।टेर।।

मैंने गेल फकीरी की पकड़ी, मिटी, कर्म भरम की जकड़ी।
लो लगी राम से तगड़ी, सुबह शाम हमेश।।1।।

ना कोई जंगल सिधाया, ना कोई गुफा खुदाया।
ना कोई आग जलाया, किया ना कोई भेष।।2।।

ज्ञान का धूणा जलाया, संयम की आग लगाया।
भक्ति री काठ लगाया, किया फकीरी प्रवेश।।3।।

मैंने भाग पूर्बला पाया, अमर फकीरी लौ लाया।
जन्म–मरण छुड़ाया, ज्ञानानन्द पाया देश।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: ईश्वर का अंग—11 ::—

श्लोक (171)

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदुःख भाग्भवेत्।।

दोहा (171)

सु पथ पर प्रभू! हमको ले चलो प्राप्त हो सतत ध्रुव कल्याण।
सकल कृतियाँ है तुमको विदित, पाप दल को कर दो म्रियमाण।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	ईश्वर प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (171)

दर्शन दे देना दिलदार तुम बिन, व्याकुल भई अपार।।टेर।।

लगा तेरे इश्क का जाला, तन को खाक कर डाला।
अब तो मिल जा मेरे आला, मैं तड़पत हूं बारम्बार।।1।।

मालिक क्यूं नहीं दरशे, पल–पल जीव घणों तरसे।
मिटा दो भूल मेरी उर से, मुझको तेरा ही आधार।।2।।

क्या काबिल नहीं मैं तेरा, इतनी क्यूं कर रीया देरा।
मिला दो अब तो तुम सेरा, तुम बिन कौन करे उद्धार।।3।।

तन–मन–धन कर दूं कुर्बान, तुम बिन नहीं दूजा दिलजान।
ज्ञानानन्द ले लियो मान, मेरा माशूक तू दिलदार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (172)

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।।
(गीता 9.36)

दोहा (172)

अगम उधारणा नाम सुनि, उर आ बढ़ि जात।
भक्ति सुनि नाम पै, अब मुक्ति चाहु नाथ।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	ईश्वर प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (172)

मैं मुक्ता हूँ माँगनिया, आया तेरे द्वार।।टेर।।
कोई मांगे माल खजाना, कोई मांगे धन अरू दौलत।
मैं प्रेम तेरा चाऊं, ये मेरी बोलत।
ऐसी कृपा करना प्रभू, सदा करूं तुमसे प्यार।।1।।
मुझ दीन पर दया करके, सत्य भाव जगा देना।
माया अविद्या आँतरे, निज अपना रूप लिखा देना।
ऐसी महर करो दयालू, सदा करूं दीदार।।2।।
एक प्रार्थना मेरी प्रभू, सुनिए गरीब नवाज।
आप बिना दीखे नाहीं, रखने वाला लाज।
मेरे दिल का तू ही मालिक, है एकरूप इकसार।।3।।
आप सेठ साहिब हो, जग का देवन हारा।
ज्ञानानन्द भूख भिखारी, मुक्ता माँगन हारा
तुम हो दीन दयालु प्रभु, हो सबके दातार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (173)

अलौकिकं सुन्दरम् इति भक्तिः या अनन्तरस्ति।
ज्ञानानन्द प्रदाम्यहम् भगवता भक्तिः।।

दोहा (173)

अनुपम अनोखी माया, लिखत न पावे पार।
ज्ञानानन्द बलिहारी, जाऊँ बारम्बार।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ती	ईश्वर महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (173)

सावरिया थारी महिमा पर, अचरज म्हानें आवे।।टेर।।
कदे तो पानी–पानी कर दे, कदे समंद सुखावे।
पल मांहि गूँगा कर देवे, पल में बोली बुलावे।।1।।
रंक को तो राजा कर दे, राजा को भीख मंगावे।
भिखारी को दानी कर दे, ऐसा खेल दिखावे।।2।।
कदे कोष को खाली कर दे, पल में खाली भरावे।
जैसो चावे पल में कर दे, थारो पार नहीं पावै।।3।।
पर्वत को तो राई कर दे, राई से पर्वत बनावे।
ज्ञानानन्द वारी चरणों की, पल–पल शीश झुकावे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (174)

सर्वत्रैव परमात्मन इति विज्ञाय विद्वान।
ज्ञानानन्दः अथ लिखति अधिकारस्य युक्तिम्।।
(ज्ञान. श्लोक)

दोहा (174)

हरि हर जगह बस रह्यो, जाने बिरला कोई।
ज्ञानानन्द ऐसे लिखे, गुरु मुखी युक्ति होई।।

(शिष्य सामर्थ बोल   वाणी पेश्यन्ती   ईश्वर महिमा   राग मारवाड़ी)

भजन (174)

सांवरिया थारी महिमा को, कांई करूं बखान।।टेर।।
अग्नि माही तृण बचादे, तृण को अग्नि जाण।
सूखा ने हरिया कर देवे, ऐसा आप भगवान।।1।।
डूबत हरि तरा दे पल में, समुंद्र मांहि पाषाण।
गज सा भारी सुई नौंक से, काढ़ करे आसान।।2।।
गूँगा ने तू बोली दे दे, बोलत कर दे मौन।
आंधा ने तू आंख्या दे दे, बहरा ने दे कान।।3।।
आप हरि की अपरबल माया, मूढ़ को होज्या ज्ञान।
ज्ञानानन्द आप शरण में, तन मन वारूं प्राण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (175)

स्वप्राधान्येन जगतो निमित्तमपि कारणम्।
उपादानं ततोपाधिप्राधान्येन भवत्ययम्।।
(स.वे.सि.सा.सं.333)

दोहा (175)

ईश्वर तेरी कला का, नाही पाया पार।
ज्ञानानन्द नेति–नेति, अनुपम खेल अपार।।

(शिष्य सामर्थ बोल   वाणी पेश्यन्ती   ईश्वर महिमा   राग मारवाड़ी)

भजन (175)

मेरे मालिक तू ने, कैसा खेल रचाया।
अनिर्वचनीय लीला कीना, सो मेरे मन भाया।।टेर।।
एक अनेक हुये पल माहीं, अपने में आप समाया।
आप माया रचें बहुतेरी, नाना रूप दिखाया।।1।।
कैसा फर्श बिछा पृथ्वी का, अम्बर तम्बू लगाया।
ग्रह योग नक्षत्र सारा, कांई पे ठहराया।।2।।
चाँद सूरज दो दिव्य दीपक, पवन का पंखा चलाया।
सूखा को हरिया कर दीना, पाल बिन सागर थाया।।3।।
नारी पुरूष रचे प्रभु ने, भिन्न–भिन्न कर दी काया।
अगट घटना पठयसी करके, बिन देश काल उपझाया।।4।।
कैसे पशु जानवर पक्षी, कैसे जीव बनाया।
कोई–कोई है शुद्ध शाकाहारी, कोई मांसाहारी बनाया।।5।।
गिरी वन की कतरन न्यारी–न्यारी, अजब रंग रंगाया।
कला–कला कुदरत की न्यारी, जुदा–जुदा दिखलाया।।6।।
कहां तक महिमा साहिब की कहूं, कहने में नहीं आया।
ज्ञानानन्द तेरी तू जाने, मैं शरणागत आया।।7।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: आत्मा का अंग—12 ::—

श्लोक (176)

एष सर्वेषु भूतेषू गुढात्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्या बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।
(कठो. 1.3.12)

दोहा (176)

पुण्य पुरबला उदय हो, करे आत्म की जाण।
ज्ञानानन्द ज्ञान से, पद पावे निर्वाण।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (176)

आत्मा का भाई, बिरला करी पिछाण।
पुण्य पूरबला उदय होय तब, पावे पद निर्वाण।।टेर।।
कोई तीर्थ में जाकर नहावे, कोई सैवे मूर्त पाषाण।
चेतन देव को भूलकर के, पच–पच मरे अजाण।।1।।
कोई जप करे, कोई तप करे, कोई भूखा राखे प्राण।
कोई फल खावे, कोई वन जावे, सब झूठी खींचातान।।2।।
और सभी है निष्फल साधन, जब तक नहीं आत्म जाण।
उलट देख ले आपको, यमड़ा खावे काण।।3।।
ब्रह्मनिष्ठ कोई गुरु मिले तब, देवे ब्रह्म का ज्ञान।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, सहज होत कल्याण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (177)

ब्रह्मनन्दरसं स्वादत्परेणैव चेतसा।
समाधिनिष्ठितो भूत्वा तिष्ठ विद्वन्सदा मुने।।

दोहा (177)

अमर अवगत है आत्मा, सतगुरु से ले जाण।
ज्ञानानन्द जाने बिन, मिटे न खींचाताण।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (177)

साधो भाई! अवगत सहन लिखा ले।
सतगुरु दाता सेन बतावै, मनभर दर्शन पाले।।टेर।।
विवेक वैराग्य षट्सम्पति, मुमुक्षू भाव रचा ले।
तीन तन का, तीन मन का, चार वचन का टाले।।1।।
सतगुरु जी की सत्संग करना, कुसंगत को हटा ले।
वेद महावाक्य गुरु सुनावे, अर्थ सहित हृदय बसा ले।।2।।
द्वैत पंथ का मार्ग नहीं जहां, अद्वैत मार्ग में चाले।
सर्व बन्धन की होवे निवृति, जीवन मुक्त करा ले।।3।।
सत्यानन्द जी गुरु समझावे, अपना धर्म नहीं टाले।
ज्ञानानन्द सन्तों की शरण में, अनुभव आत्म करा ले।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (178)

निष्कलकं निरातंकं त्रिविधच्छेवर्जितम्।
आनन्दमक्षरं मुक्तं ब्रह्मैवास्मिति भावयेत्।।

दोहा (178)

ब्रह्म व्यापक जगत में, दुनिया ने गम नाय।
ज्ञानानन्द अलख आप, रम रहयो सब माय।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (178)

साधो भाई! दुनिया महरम नहीं जाने।
ब्रह्म व्यापक सब जग मांहि, बिरला हरिजन पिछाणे।।टेर।।
अवगत अलख अलौकिक, सब घट–घट की जाने।
एक राम अविनाशी प्यारा, नाम रूप नहीं रहाने।।1।।
अम्बर सम निर्लिप्त सदा ही, नहीं माया में लिपाने।
सब में चमक सत्ता उसकी, ज्यों भूषण कनम समाने।।2।।
ज्यों जल में लहरी, लहरी में जल है, एक ही भाव रहाने।
जीव ब्रह्म में अन्तर नाहिं, अविद्या से भय खाने।।3।।
गुरु बिन कोई तत्व नहीं लिखता, दशों दिशा में फिराने।
ज्ञानानन्द गुरु गम विचारों, सहज ब्रह्म को जाने।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (179)

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात्।
एतैरूपायैर्यतते यस्तु विद्वान् तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम।।
(मुण्डक 3.2.4)

दोहा (179)

भूल गयो निज रूप को, सिंह बाजरो खाय।
ज्ञानानन्द जाण्या बिन, भूल भ्रम भरमाय।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (179)

काँई भूल भरम भरमावे रे, कर ले आत्म विचार।।टेर।।
सुखी–दुखी तू नहीं होवे, मन में मान कहावे।
क्यों नहीं दूर हटावे रे, तू तो है सदा इक सार।।1।।
सिंह बिसर के खाय बाजरो, ऐसे तु भी काटे चकरो।
नाना लग गयो फकरो, अब कैसे होवे दीदार।।2।।
जब गुरु शरणा में आवे, सतगुरु महावाक्य सुनावे।
सारा भरम मिट जावे, पावे असली सार।।3।।
गुरु सत्यानन्द की वाणी, ज्ञानानन्द छोड़ मनमानी।
तू है सकल का जानी, स्वयं साक्षी निराधार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (180)

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो व्याप्तकामायत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम्।।
(मुण्डक 3.1.6)

दोहा (180)

ज्ञान बिना मुक्ति नांही, यही सुरति है महान।
ज्ञानानन्द मोक्ष का, साधन समझो ज्ञान।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग आसावरी)

भजन (180)

साधो भाई! ज्ञान मार्ग में चलणा।
और मार्ग से मुक्ति नाहिं, याही सत् का निरणा।।टेर।।
कर्मकाण्ड भेद भक्ति से, दूणा हो दुख भरणा।
भेदभाव को दुर हटाके, अभेद चिन्तन करणा।।1।।
बिन प्रकाशा तम नहीं जावे, लाख उपाय कर थकणा।
आत्मज्ञान बिन मुक्ति नाहिं, समझ समझ पग धरणा।।2।।
आशा करो निज आपकी, और परायी सब तजणा।
गुरु ज्ञान बिना मुक्ति नाहीं, ये वेदो का कहणा।।3।।
और उपाय खूब करो तुम, मिटे नहीं जन्म अरू मरणा।
ज्ञानानन्द वेद कहे यूँ, ब्रह्म भाव में रहणा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (181)

युक्त्यात्मानात्मनोऽस्तस्मात् करणीयं विवेचनम्।
अनात्मन्यात्मबुद्धिर्गन्थिं यत्नेन विदीर्ततात्म्।।

दोहा (181)

जीवन बाजी जीतकर, करो आत्म का ज्ञान।
ज्ञानानन्द निज बोध सु, जीवन मुक्ति प्रमाण।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग आसावरी)

भजन (181)

हाँ जो आत्म पद में लागे, वाँको जन्म–मरण भय भागे।
भाग पुर्बलो जागे।।टेर।।
जो करे ब्रह्म से प्रीति, जीवन बाजी वो जीती।
याही सांची रीति, अपने आप अनुरागे।।1।।
जो करें गुरु की सेवा, वहीं पावे निज मेवा।
पद निर्वाणा लेवा, भेद भ्रम सब त्यागे।।2।।
जो साधन चारो धारे, वोहीं सांचा ज्ञान विचारे।
काम क्रोध को मारे, जाग्रत मांहि जागे।।3।।
कोई चावे भव से तिरणा, ले सत्संग का शरणा।
ज्ञानानन्द का निरणा, ले संतो के आगे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (182)

यस्मिन्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।
(ईशा.उप. 7)

दोहा (182)

सत चित अवगत राम में, पाप पुण्य नाकाम।
ज्यूँ का त्यूँ सब काल में, व्यापक है सबधाम।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (182)

जो रहवै ब्रह्म लवलीना, सोही संत परवीना।
वो जाने जग में जीना, रस माया तज दीना।।टेर।।
जो राग द्वैष नहीं करता, वही भव सागर से तरता।
जीवन मुक्ति विचरता, अपने आप में लीना।।1।।
सम रहे मान अपमाना, सोही आत्म ज्ञाना।
गुरुगम उगता भाना, भूल भ्रम तज दीना।।2।।
ऐसा बिरला है कोई, जो मरजीवा होई।
पाप पुण्य सब खोई, सो अनुभव रंग में भीना।।3।।
सत्य की राह बतावे, आत्म पद निश्चय करावे।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, निर्णय सत् का कीना।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (183)

हिरण्यमयं परं कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्येतिषां ज्योतिस्तद् यदात्मविदोविदुः।।

दोहा (183)

है परम् ब्रह्म आत्मा, तीन काल से पार।
अस्ति भाँति प्रिय रूप में, व्यापक सब की लार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (183)

जो आत्मा वित अनुरागी, सोही है बड़ भागी।।टेर।।
जो ब्रह्म माही रमता, क्रिया करम नहीं करता।
पाप पुण्य नहीं भरता, वासना सकल का त्यागी।।1।।
जिसको है ब्रह्म का ज्ञाना, जीते जी ब्रह्म समाना।
मिटज्या आना–जाना, सूरता ब्रह्म से लागी।।2।।
जहाँ ब्रह्म ज्ञानी रहावे, भूमि पुण्यवती हो जावे।
संग लग्या पाप धूल जावे, महात्मा बड़ा वैरागी।।3।।
ऐसा संत बिरला होयेगा, जो ब्रह्म को पायेगा।
ज्ञानानन्द बलिहारी जायेगा, ज्याँकी सत्य में सेन समागी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (184)

मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय।
तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीराः आनन्दरूपममृतं यद्विभाति।।

दोहा (184)

साधु बड़ा हि दयालु है, उत्तम ज्या का भाव।
मल विक्षेप को तोड़के, आत्मा देवे दाव।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग आसावरी)

भजन (184)

जगत में ज्ञानी सदा सुख पाता।
हो मरजीवा जीवे जग में, नाहीं दुजे को दुखाता।।टेर।।
कर्म करे निष्कामी होकर, नहीं कर्मो में लिपाता।
करता कर्म रहत है न्यारा, सुण–सुण अचरज आता।।1।।
निर भ्रम रहे निर्वाणी, नहीं जग में भरमाता।
मन इन्द्रियों को वश में राखे, सबको चाल चलाता।।2।।
अहम् ब्रह्म की लेकर युक्ति, नहीं बंधन में आता।
मगन होय रहता निज व्यापक, नहीं दूजे को ध्याता।।3।।
तीन लोक में महिमा होवे, देवा चँवर ढुलाता।
गंगा यमुना बहती चरणा, सारा पाप मिटाता।।4।।
महिमा गाऊँ ज्ञानी जन की, पर गाने में नहीं आता।
ज्ञानानन्द उस ज्ञानी जन के, चरणा बलि–बलि जाता।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (185)

यत्र नान्यत् पश्यतीति श्रुतिर्द्रष्टं निषेधति।
कल्पितस्य भ्रमाद्भूमौ मिथ्यात्वावगमाय तत्।।
(स.वे.सि. 769)

दोहा (185)

पंहुच जा उस देश में, फेर ना होव प्रेत।
अवसर आयो हाथ में, ज्ञानानन्द तु चेत।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी तर्ज–थाने सत गुरु हेलोपाडे .....)

भजन (185)

ओ थाने श्रुति मात जगावे रे, जिज्ञासु जागो।।टेर।।
यह नगरी तो, है स्वप्न की–2
ओ ज्यां सपना ही सपना आवे रे।।1।।
सूंता रे सूंता भाई, कांई करो–2
सूंता ने काल सतावे रे।।2।।
चेतन विवृत, माया परिणामी–2
ओ ये सारा जग कहलावे रे।।3।।
श्रुति की पुकार भाई, सुण मेरे प्यारे–2
पद ज्ञानानन्द यूं गावे रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (186)

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय।
येनाक्षरं पुरूषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्।।
(मुण्डक 1.2.13)

दोहा (186)

ज्ञान बिन संसार में, मिटे न खींचातान।
ज्ञानानन्द तन पाय के, कर ले आत्मज्ञान।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (186)

तू करले आत्मज्ञान, थारो जब होवे कल्याण।।टेर।।
तन मन से सेवा गुरु की धार, ज्यां से उतरे भव जल पार।
तब पद पावे निर्वाण।।1।।
मल विक्षेपा दूर हटावे, चहुँ साधन लो ल्यावे।
तब पात्र ज्ञान का जाण।।2।।
जप तप खुब करो मनमान, याँसे होवे नहीं उत्थान।
ज्यांरो वेद वचन प्रमाण।।3।।
पद ज्ञानानन्द यो गावे, सतगुरु जी सेन बतावे।
मिले गुरु ब्रह्मनिष्ठ विद्वान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (187)

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।
(गीता 4.38)

दोहा (187)

सफल जमारा उसका है, जाणे आत्माराम।
ज्ञानानन्द काल कर्म, मिटज्या सकल तमाम्।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (187)

सफल जमारा उसका है, जिसको आत्मज्ञान।।टेर।।
जो करे गुरु से प्रीति, वो जाने आत्म रीति।
वोई ब्रह्म निष्ठ विद्वान।।1।।
राग द्वैष नहीं मन में, आत्म ज्ञानी है जन में।
वो नर है रे महान।।2।।
जो ब्रह्म आपको जाने, बन्धन नहीं बांधे वाने।
वो सांचा इन्सान।।3।।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, श्रुति री शाख बतावे।
वो ही करे कल्याण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (188)

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।।
(गीता 4.37)

दोहा (188)

मानुष तन को पाय के, कर ले आत्मज्ञान।
फिर भव में नहि आवसी, ज्ञानानन्द ल जाण।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (188)

जगत में ब्रह्म ज्ञान आधार, जहाँ से उतरे भव जल पार।।टेर।।
जब तक होवे नहीं निज ज्ञाना, तब तक होवे नहीं कल्याणा।
मिटे न आना जाना, नैया डुबेली मझदार।।1।।
जप तप खूब करो शुभ काम, यहाँ से पावे नहीं जिन धाम।
वृथा खर्चत है धन दाम, आखिर जावे जमारो हार।।2।।
शरणे ज्ञानी गुरां की आवो, स्वरूप ज्ञान को पावों।
सहज में भव तिरजाओ, लागे नहीं कछू बार।।3।।
सदगुरु जी यूं समझावे, सार की बात बतावे।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, औसर मत खोवे बैकार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (189)

अतोऽयं पुत्र आत्मेति मन्यते भ्रान्तिमत्तमः।
तन्मतं दूषयत्यन्यः पुत्र आत्मा कथं त्विति।।

दोहा (189)

भूल मत आत्मराम को, काया कोटि माय।
ज्ञानानन्द जाण्या बिन, कटे न पाश यमराय।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (189)

ओ मत भूले आत्म प्यारा, हो के चूर नशा में।।टेर।।
जो आत्म को बिसरावे, वो लख चौरासी जावे।
ना ना योनि दुःख पावे, जा के उल्टी दशा में।।1।।
चढ़यो नशो यूं भारी, सुध भूल गयो तू थारी।
अविद्या तोये मारी, आके जीव हिस्सा में।।2।।
वेद शास्त्र समझावे, क्यूं आत्म समझ नहीं लावे।
मार काल की खावे, फंसियो कर्म कसामें।।3।।
ज्ञानानन्द बोले वाणी, सुणले प्यारे प्राणी।
आवागमन हो हानि, मिलजा जिस्म जिसामें।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (190)

स्वात्मतत्त्वं समालम्ब्य कुर्वन्नप्रकृतिनाशनम्।
तेनैव मुक्तोभवति नान्यथा कर्मकोटिभिः।।

दोहा (190)

श्री वेदान्त समझ के, करले आत्मा विचार।
लौट जगत आवे नाहिं, सहज होय भवपार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (190)

कर ल रे मनवा आत्म ज्ञान विचार।
ब्रह्म ज्ञान बिन काल न भागे, चुक्या ले लो मार।।टेर।।
तन मन धन अर्पण कर गुरु के, समझो सारो सार।
अविद्या व्याधि मिट जावे रे, सहज होवे भवपार।।1।।
मल विक्षेप को दूर हटाके, चारों साधन धार।
बण अधिकारी ज्ञान पिछाने, कटे कर्म जंजार।।2।।
अभिमान को दूर हटाके, माया परि–निवार।
गुरु वचन में पूर्ण रहणो, होवे जय जयकार।।3।।
सत्संग माँई आंके भाई, गुरुगम आप निहार।
ज्ञानानन्द उलट आप में, कर आत्म दीदार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (191)

तस्मान्मुमुक्षोः कर्तव्या ज्ञाननिष्ठा प्रयत्नतः।
निःशेष वासनाक्षयै विपरीतिनिवृत्तये।।

दोहा (191)

शुभ व अशुभ को त्याग कर, कर आत्मा में वास।
जन्म–मरण में आवे न, छोड़ जगत की आस।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (191)

करल–करल रे म्हारा मनवा, आत्म राम का दीदार।
अवगत राम सकल में व्यापक, गुरुगम सेन विचार।।टेर।।
पहला साधन गुरु सेवा, दूजा सत्संग धार।
तीन साधन चार कहिजे, चौथा ब्रह्म विचार।।1।।
दृश्य दृष्टा एक होवे, वृति रहे ब्रह्माकार।
अनावृत हो चित्त प्रकाशा, सोऽहम् सदा इकसार।।2।।
बाहर–भीतर एक ही दरशे, परम् पुरूष निराधार।
भवबंधन सब सहज मिटे, कटे कर्म जंजार।।3।।
विधि सद्मुख सब अनुभव करले, गुरु शरणा में आर।
ज्ञानानन्द उपदृष्टा हो, सब का जाणन हार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (192)

अवयक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्चते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशौचितुमर्हसि।।
(गीता 2.24)

दोहा (192)

अवगत अमर है आत्मा, व्यापक है सब ठौर।
ज्ञानानन्द सब कुछ है, वाँ बिना नहीं और।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (192)

साधो भाई राम अखण्ड अविनाशी।
खण्ड पिण्ड तो है नहीं उसमें, व्यापक सब जगवासी।।टेर।।
सजाति विजाति संबंध नाहिं, नाहिं स्वगत रहासी।
देश काल वस्तु रहित है, अपने में आप उजासी।।1।।
पाँच कोष अरू पांच भेद है, यांसे परे रहासी।
है वो सब में सबसे न्यारा, नाम रूप नहीं पासी।।2।।
समाधि अरू सुषुप्ति में भाषे, वो ही बिम्ब भूत राशि।
ऐसे आप सब को प्रकाशे, नहीं दूजा प्रकाशी।।3।।
वाच्य लक्ष्य लागे नाहिं, मन वाणी गम नहीं पासी।
ज्ञानानन्द जो जाणे आपको, सो ही ब्रह्म में वासी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (193)

तस्माद् ब्रह्मात्मनोर्भेदः कल्पितो न तु वास्तवः।
अत एव महद्भिः श्रुव्याप्येकत्वं प्रतिपाद्यते।।

दोहा (193)

दुजा देव कोय है नहि, आत्मा सांचा देव।
ज्ञानानन्द आत्म मांहि, करे न दूजी सेव।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (193)

साधो भाई आत्म है निज देवा।
और देव सब दूरा कहिये, दरशे आप अभेवा।।टेर।।
नूर निरंजन सूर है सब का, जल थल माहिं बसेवा।
उनसे खाली नाहिं कोई, ओत प्रोत रहेवा।।1।।
विवेक वैराग्य साधन साधे, निष्काम करे गुरु सेवा।
महावाक्य अर्थ विचारे, तत् त्वं पद शोधन करेवा।।2।।
निज देव का दर्शन होवे, भव बंधन हो छेवा।
लौट जगत में फेर न आवे, ज्यामें परम पद ऐवा।।2।।
ये पद कोई बिरला पहुंचे, आप्या आप लिखेवा।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मिलज्या मुक्ति मेवा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (194)

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते कामा येऽस्य हृदिश्रिताः।
अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते।।
(कठो. 2.3.14)

दोहा (194)

यत्न करले तु मुक्ति का, दो दिन का मेहमान।
ज्ञानानन्द छोड़ जाय, पल में सब कमठाण।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग आसावरी)

भजन (194)

साधो भाई ये साधन सुण लीजे।
जिन साधन से मुक्ति होवे, सोही काम कर लीजे।।टेर।।
ज्ञान बिना मुक्ति है नाहिं, सकल यत्न कर लीजे।
ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः भाई, श्रुति ये सुन लीजे।।1।।
कर्म उपासना कर चित्त शुद्धि, ये निष्काम कहिजे।
होय सकामी नहीं चित्त शुद्धि, भावे सो फल लीजे।।2।।
सद्गुरु शरणे अमृत बरसे, जा सेवा में चित्त दीजे।
बण मुमुक्षु पात्र ले लीजे, भर–भर अमृत पीजे।।3।।
ये साधन है राम मिलन का, याने मत बिसराजे।
ज्ञानानन्द और क्या करना, जीवन मुक्ति लीजे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (195)

नव द्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहिः।
वशीसर्वस्य लोकस्य स्थावरस्य चरस्य च।।

दोहा (195)

हंस समझ निज आपको, छोड़ नाडु व्यवहार।
ज्ञानानन्द मोती जाँ, चालो पंख पसार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग आसावरी)

भजन (195)

हंसा भाई समझ करो पयाना।
लौट जगत पाछा नहीं आवे, मिट जावे आना जाना।।टेर।।
सत्य राम सकल में व्यापक, परम पुरूष पुराना।
स्वयं प्रकाशी सब जगवासी, पहुंचे नहीं शशि भाना।।1।।
अलौकिक धाम अगोचर है, शाश्वत चेतन ठहराना।
वहां पहुंचे संत मरजीवा, पावे पद निर्वाणा।।2।।
अमर मंजिल जब ही पावे, गुरु गम लेवे ज्ञाना।
दया करूणा हृदय में लावे, द्वैत भय बिलाना।।3।।
सत्यानन्द सतगुरु समझावे, हिवड़े वचन धराणा।
ज्ञानानन्द समझ मन मेरा, छोड़ो देश वीराना।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (196)

ज्ञानंलब्धवाकृतार्थः स्यादिति वेदांताडिण्डिमः।
सर्वमुक्तं समासेन किंभूयः श्रोतुमिच्छसि।।

दोहा (196)

मानव तन दुर्लभ घणो, देवो से भी महान।
ज्ञानानन्द तन मिल्या, सहज भजो भगवान।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (196)

ओ करले रे आत्म ज्ञान, नर तन अजब मिल्यो–2।।टेर।
दुर्लभ तन देवा के खातिर, सोच समझ ले नर तू चातुर।
रामभजन में हो जा तू आतुर, मानव तन मेहमान।।1।।
सूखा पात पीपल का जैसे, गिर जावे पल माहिं तैसे।
ये तन भी जावेला ऐसे, छुटे ज्यूं हाथ से बाण।।2।।
ब्रह्म ज्ञान का कर ले सौदा, कर्म रहे नहीं तेरा बोधा।
मिट जावे सब मन का खोदा, फिर आपणा रूप पहचान।।3।।
ज्ञानानन्द समझ मन मेरा, सहज कटै चौरासी फेरा।
मत कर रे नर अब तू देरा, कर अपना कल्याण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (197)

प्रतिपदमहादयो विभिन्नाः क्षणपरिणामित्वतः विकारिणस्ते।
न परिणतिरमुपैषि निष्फलत्वादयमविकार्यत एव नित्यात्मा।।

दोहा (197)

आत्म ज्ञान होते ही, कर्म सब बिलाय।
जैसे सुरज उगते ही, अन्धकार भग जाय।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (197)

ओ करले रे मनवा सत् आत्म की खोज।
भव बंधन की व्याधि मिटज्या, मिलज्या आत्म मौज।।टेर।।
तन–मन–धन अर्पण कर गुरु के, सत्संग किजे रोज।
दिन–दिन मनड़ा निर्मल होवे, उतरे पाप का बोझ।।1।।
वेद महावाक्य गुरुदेव सुनावे, अर्थ सहित कर सोज।
वृति ब्रह्माकार ह्वे तब, भाग जावे यम फौज।।2।।
जीवन मुक्त होय के डोले, अपने अनुभव औज।
आप तरे औरों ने तारे, अहम् सर्वम् की खोज।।3।।
लक्षण निर्दोष से अनुभव कीजे, अपना आप्या खोज।
ज्ञानानन्द उलट देखले, उपलक्षित की मौज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (198)

जड़ प्रकाशकः सूर्यः प्रकाशात्मैव नोज्ज्वलः।
बुद्ध्यादि भासकस्तस्माच्चित्तत्वरूपस्तथा गतः।।

दोहा (198)

मानव तन पा मानवी, कर आत्म की खोज।
बार–बार ना आवसी, मानव तन की मौज।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (198)

साधो भाई! कर आत्म में डेरा।
आत्म हेरयां सब कुछ होवे, मिटे चौरासी फेरा।।टेर।।
है अविनाशी सब सुख राशि, सब जग माई बसेरा।
देश काल वस्तु के आगे, नहीं दुर नहीं नेहरा।।1।।
वो आत्म है तेरा तुझमें, कर अपने में डेरा।
उलट देख ले आपको, सहज ही पावे शेरा।।2।।
अनुभव आत्म होवे जब ही, मिटज्या तेरा मेरा।
गुरु ज्ञान से दर्शन कीजे, उठ जावे यम डेरा।।3।।
जन्म–मरण में फिर नहीं आवे, ज्ञान मार्ग है गहरा।
ज्ञानानन्द देख आपको, मिट जावे भव फेरा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (199)

भग्नाभग्नविवर्जितो भगो लग्नालग्नविवर्जितलग्नः।
एवं कथमिह सारविसारः समरसतत्त्वगगनाकारः।।

दोहा (199)

रोग अनरोग है नहिं, शुद्ध आत्म के माही।
ज्ञानानन्द ज्यूँ की त्यूँ, काल कर्म छ नाहीं।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग आसावरी)

भजन (199)

साधो भाई! आत्म सदा अणरोगी,
अम्बर सम निर्लिप्त रहावे, योगी नहीं कभी भोगी।।टेर।।
नहीं ग्रहस्थ नहीं वानप्रस्थ, नहीं संन्यासी नहीं योगी।
मिलना बिछुड़ना नाहिं है रे, नाहि रहत संयोगी।।1।।
बंधन मुक्ति उसमें नाहिं, नाहिं कभी वियोगी।
देश काल वस्तु न लागे, दौड़ न मन की होगी।।2।।
अगम अनुपम आत्म अगोचर, बिरला ने गम होगी।
जाने सोई परम पद पावे, फिर आवागमन नहीं भोगी।।3।।
आत्म पद को जानन खातिर, ब्रह्मज्ञान उपयोगी।
ज्ञानानन्द जाने जो आत्म, वोही जग में जोगी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (200)

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण।
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम्।।

(मुण्डक 2.2.11)

दोहा (200)

जल थल नौ खण्ड माहिं, व्यापक सब ठौर।
ज्ञानानन्द खाली नहि, बसरह्यो सब और।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग आसावरी)

भजन (200)

साधो भाई! आत्म सब के मांहि।
आत्म बिना कोई खाली नाहिं, कण–कण में रहियो समाई।।टेर।।
सोना जेवर सोनी गड़ता, नाना रूप दिखाई।
काट पिट जब धरे मुश में, अन्वय सोना थाई।।1।।
तटस्थ स्वरूप दो लक्षण है, निरदोष वेदान्त में गाई।
श्रुति युक्ति से अनुभव करले, शरण गुरु की जाई।।2।।
अस्ति भांति प्रिय अंश ब्रह्म के, सकल चराचर छाई।
नाम रूप अंश माया के, व्यभिचारी रहत सदाई।।3।।
अनुभव राम अमीरस भरिया, गुरुमुखी पीवे जाई।
ज्ञानानन्द तज सकल आसरा, राम शरण सुखदाई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (201)

परित्यज्य विरुद्धान् शुद्धचैतन्यस्य लक्षणम्।
वस्तु केवलं सन्मात्रं निर्विकल्पं निरंजनम्।।

(स.वे.सा.श्लोक 759)

दोहा (201)

ज्ञान समान कछू नहीं, मुक्ति कोई पंथ।
ज्ञानानन्द निज ज्ञान सु, पहुंचे पूर्ण संत।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग मारवाड़ी)

भजन (201)

हे बीरा रे! आत्म ज्ञान विचारणा, मिट जावे खींचातान।
मार्ग मिल जावे निज राम का, जीवन मुक्त प्रमाण।।टेर।।
हे बीरा रे! सांचा सद्गुरु खोजले, ब्रह्म निष्ठ विद्वान।
दूतिया ने दूरी करे, कोई उगावे अनुभव भान।।1।।
हे बीरा रे! तत् त्वं पद को शोध ले, असि पद एकता जान।
आत्म सो परमात्मा रे, कोई छूट जाए यम डाण।।2।।
हे बीरा रे! सात समुद्र पार है, कोई पांच कोष की घाण।
यही बात निज राज की, कोई समझे चतुर सुजाण।।3।।
हे बीरा रे! ना समझ तो नहीं गया, ये पद है निर्वाण।
ज्ञानानन्द निज ज्ञान से, सहज होत गलतान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (202)

देवं विद्वान् यान्ति मृत्युं पाशान् चैव तरत्यरः।
ज्ञात्वा देवं पाशहानिः क्षीणैः क्लेशैर्जन्ममुक्तिः।।

दोहा (202)

पारस पाया ज्ञान की, गयी गरीबी दूर।
ज्ञानानन्द जन्म नहीं, जाण लिया निज नूर।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग–चलत मारवाड़ी)

भजन (202)

ओ कर्जो मिट गयो रे कर्मा को, ज्ञान पारस पाबा से।।टेर।।
भवसागर में फरयो भटकतो, कर्म गरीबी से।
भव की भूल मिटगी पल में, सत्संग सुणबा से।।1।।
अलौकिक पारस मैंने पायी, सतगुरु सेवा से।
दीन गरीबी दूरां भागी, प्रबल पुरूषार्थ से।।2।।
जीवन महल बनाया चौखा, सांचा सौदा से।
विदेह तख्त लग्यो चौबारे, दृढ़ आत्म अनुभव से।।3।।
काल धाड़ायत अब नहीं आवे, मुक्ति पहरा से।
ज्ञानानन्द फेर सब कटग्या, अविद्या मिटबा से।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (203)

दूर अविद्या हटाए, कर जीव ब्रह्म् मेल।
ज्ञानानन्द जग में, दो ही दिन का खेल।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग–चलत मारवाड़ी)

भजन (203)

ओ झगड़ो मिट गयो रे कर्मा को, आत्म ज्ञान होबा से।।टेर।।
आत्म अनात्म का विवेक भया, सतगुरु कृपा से।
सब दुःखों की होगी निवृति, परमानन्द पाबा से।।1।।
पार ब्रह्म से सूरता लागी, हटगी अनात्म से।
आठो पहर लीन हरि में, हटे न हटाया से।।2।।
यमराजा का कागज फाड्या, ज्ञान भाला से।
निर्भय होय निसंग मैं डोलू, मस्त मस्ती से।।3।।
ज्ञानानन्द को आनन्द आया, आप्या पाबा से।
लौट जगत में फेर न आऊँ, अविद्या मिटबा से।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (204)

ज्ञानादेव तु कैवल्यमिति श्रुत्या निगद्यते।
ज्ञानस्य मुक्ति हेतुत्वमन्यत्रावृत्तिपूर्वकम्।।

दोहा (204)

रहम करी गुरुदेव ने, दिया आत्म ज्ञान।
ज्ञानानन्द भव जाल से, कर दीना कल्याण।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग–चलत मारवाड़ी)

भजन (204)

ओ म्हारा कट गया कर्म क्लेश, आत्म पाया रे।।टेर।।
त्रिविध कर्म कटे सब ऐसे, काठ अग्नि में जलती जैसे।
अब पाप पुण्य रहवे कैसे, चढ़े नहीं कर्मा री पेश।।1।।
ज्ञान से अज्ञान नासे, आवरण आश्रित संचित हरासे।
अहम् ब्रह्म से क्रियामाण न भासे, जल कमलवत रहे अस्लेश।।2।।
लेशा आश्रित प्रारब्ध बखाना, भोग से निवृत इस विद जाना।
सर्वकर्म से मुक्त ऐसे माना, हुआ जीवन मुक्ति में प्रवेश।।3।।
प्रपंच सहित स्वरूप में समाना, दग्ध धान कण का अनुमाना।
मृगजल बाधित निवृति जाना, लिया जीवन मुक्ति की रेश।।4।।
आत्मज्ञान से स्वराज्य पाया, इस विध समझ की लौ ल्याया।
भव बन्धन का भ्रम हटाया, ज्ञानानन्द पाया निज देश।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (205)

सर्वं सर्वगतं शान्तं ब्रह्म सम्पद्यते तदा।
इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं शिष्यस्तु छिन्नसंशयः।।

दोहा (205)

अवगत अजर अविनाशी, पीव दिया बतलाय।
ज्ञानानन्द पाय लिया, आत्मा सब घट छाय।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग–चलत मारवाड़ी)

भजन (205)

साधो भाई! अब मैं, अपने घर को पाया।
बहुत दिनों से भटकत–भटकत, सतगुरु राह दिखाया।।टेर।।
मेरा घर तो आदि अनादि, जहां काल कर्म नहीं काया।
अवगत अजर अमर, ज्यों का त्यों थिरथाया।।1।।
घर है मेरा अजब अनोखा, जहाँ रात–दिवस नहीं रहाया।
जहाँ बास बसा है मेरा, सत् में रहूँ समाया।।2।।
चन्द्र सूर प्रकाशक नाहिं, ये पर प्रकाश रहाया।
सब का परम प्रकाशक हूं मैं, आत्मा अखर कहाया।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिल गया, यूं हमको समझाया।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, मौज मगन यश गाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (206)

इति गुरुवचनाच्छ्रुतिप्रमाणात् परमवगम्य स्वत्त्वमात्मयुक्त्या।
प्रशमितकरणः समाधितात्मा क्वचिदपि चक्रवृत्तिरात्मनिष्ठोऽभूत्।।

दोहा (206)

नशा हुआ गुरु ज्ञान का, उतरे ना दिन–रात।
ज्ञानानन्द सब फीका, यह अलौकिक विज्ञात।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग–चलत मारवाड़ी)

भजन (206)

साधो भाई गुरुगम नशा हो आया।
और नशा सब फीका लागे, गुरुगम चढ़े सवाया।।टेर।।
ब्रह्म आत्म एक ही दरशे, द्वैत नहीं कछु राया।
अमल अविनाशी देव ही है, ज्यों जेवर सोना थाया।।1।।
ब्रह्म चिन्तन होवे निशदिन, भेदभाव बिसराया।
पतिव्रता को पीव दरशे, यूँ दूजा नहीं लाया।।2।।
एको देवः सर्तभूतेषु, नानात्व नहीं पाया।
मेरा मुझ में अन्तर नाहीं, ज्यों का त्यों थिरथाया।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिल गया, ऐसा नशा कराया।
ज्ञानानन्द का नशा अलौकिक, सेन गुरु से लाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: तत्त्वमसी का अंग—13 ::—

श्लोक (207)

सर्वाकारं सर्वमर्वं सर्वनिषेधावधिभूते।
सत्यं शाश्वतमेकमनन्तं बुद्धं तत्त्वमसि त्वम्।।

दोहा (207)

शुद्ध बुद्ध स्वरूप तू, तुझमें नाही विकार।
ज्ञानानन्द वह तू है, साक्षी सर्वाधार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग–आसावरी)

भजन (207)

हाँ तू है, अजर–अमर अविनाशी।
जन्म–मरण तुझमें नाहिं, नहीं काल की फांसी।।टेर।।
जन्म–मरण यह धर्म स्थूला, देह है विनाशी।
तू दृष्टा घटवत इसका, सदा सहज सुख राशि।।1।।
अग्नि जला सके ना तुझको, नाहिं नीर गलासी।
शस्त्र छेद सके ना तुझको, नाहीं पवन सुखासी।।2।।
अचल अमर अविनाशी तू, व्यापक सब जगवासी।
कर्ता भोक्ता तुझ में नाहीं, ना भोगे भोग विलाशी।।3।।
तत्वमसि तू ही ब्रह्म है, सामवेद यश गासी।
ज्ञानानन्द ले शरण गुरु की, गुरु मिल्यां गम पासी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (208)

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात् सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।
(गीता 2.30)

दोहा (208)

सोच किसका करता है, तु सच्चिदानन्द रूप।
जन्म–मरण तुझ में नहीं, न छाया न ही धूप।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग–मारवाड़ी)

भजन (208)

है बीरा रे! वही राम तू आप है, जिसे खोज रही संसार।
भूल के निज आपको, क्यूं भटक रह्यो तु बाहर।।टेर।।
सत्य साईं नहीं खोजता, पड्यों मिथ्या की लार।
है नहीं जिसको ढूंढ़ता, कोई जीवन जाये बैकार।।1।।
माया अविद्या वासना, कोई काल कर्म को जार।
काम क्रोध मोह लोभ को, अहंकार को मार।।2।।
तीन भेद है लक्षणा, जहत अजहत विचार।
भाग त्याग अपनाइले, तत्त्वमसि आधार।।3।।
अगम निगम प्रमाण है, कोई सत्पुरूषां की साख।
ज्ञानानन्द यूँ बोलिया, मिट जावे यम की दाख।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (209)

निःसङ्गो निष्क्रियोऽसि त्वं स्वप्रकाशो निरञ्जनः।
अयमेव हि ते बन्धः समाधिमनुतिष्ठसि।।

दोहा (209)

मानव मत भूल रे निज, आपनो असली रूप।
ज्ञानानन्द ज्यूँ का त्यूँ, न छाया नहीं धूप।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग–मारवाड़ी)

भजन (209)

मानव करले रे सत ज्ञान, तेरा रूप अनादि रे।।टेर।।
करले अपने आपकी खोज, मिटज्या कर्म भ्रम का बोझ।
सत्संग करते रहना रोज, कटज्या भव की व्याधि रे।।1।।
तू श्रवण मनन को साध, ज्याँ से संशय हो ज्या बाध।
तू हो जावे आजाद, बैठ जा सत् की गादी रे।।2।।
मनवा तत् त्वं शोधन करले, वाच्य लक्ष्य अर्थ समझ ले।
चेतन सब में शामिल कर ले, जो है निर उपधि रे।।3।।
तेरा सत् चित् आनन्द रूपा, तुझमें नहीं छाया नहीं धूपा।
तु है अपने आप अनूपा, नहीं अन्त अरू आदि रे।।4।।
पद ज्ञानानन्द यूँ गावें, तोय निज स्वरूप बतावे।
श्रुति री साख फरमावे, निश्चय कर सतवादी रे।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (210)

त्वया व्याप्तमिदं विश्वं त्वयि प्रोतं यथार्थतः।
शुद्धबुद्धस्वरूपस्त्वं भ्रामकः क्षुद्रचिन्तताम्।।

दोहा (210)

परख करो निज आपकी, तेरा रूप अनूप।
ज्ञानानन्द भूल मति, न छाया नहीं धूप।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग—आसावरी)

भजन (210)

करले मनवा अपने आपकी खोज।
पार ब्रह्म की दूरी मिटज्या, मिलज्या मन की मौज।।टेर।।
मल विक्षेप को दुर हटावे, सेवा साबुन खोज।
विवेक वैराग्य साधन साधके, मरे कामादिक फौज।।1।।
आत्म पद का निश्चय करले, मिटे अनात्म बोझ।
जीवन मुक्ति मिले पलक में, निरंकुश तृप्ति ओज।।2।।
महापुरूषों की सेन समझले, ज्यो तिथि चन्द्र दोज।
भेद भ्रम सब मिटे आपका, पावे आत्म पोज।।3।।
सूरत लगा आत्म दृढ़ावो, उलट आपकी नोज।
ज्ञानानन्द भेद हटाके, अब सांचा सतगुरु खोज।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (211)

सच्चिदानन्द स्वरुप है, नहि माया लवलेस।
तीन गुणों से पार है, साक्षी सोहि हमेश।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग—मारवाड़ी)

भजन (211)

तेरा सत् चित् आनन्द रुप है, क्यों भूल रह्यो निज नूर।
तू अविनासी आप है, क्यों भटक रह्यो फिर दूर ।।टेर।।
काल कर्म अरु माया, अविद्या ने उलझाया।
स्वरुप भूल रियो भाया, क्यूं करतो फिरे गुरूर।।1।।
तत्त्वमसी का करो विचारा, जीव ब्रह्म है नहीं न्यारा।
हो जीव—भाव से पारा, तू अपने आप हुजूर।।2।।
तू अपने आपको जान, क्यूं हो रियो हैरान।
पहचान अपनी शान, तू सुख सागर भरपूर।।3।।
यूं सामवेद फर्मावे, तत् त्वं पद अर्थ बतावे।
ज्ञानानन्द समझावे, समझो बात जरूर ।।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (212)

येऽप्यन्यदेवताभक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्।।

दोहा (212)

दूरा खोजे राम को, वो ही मुँड गँवार।
ज्ञानानन्द दुःख पावे, खावे यम की मार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग—आसावरी)

भजन (212)

साधो भाई! जो खोजे राम को दूरा।
भूल भ्रम में सब जग अंधा, दरशे नहीं निज नूरा।।टेर।।
सब घट मायी राम समाया, व्यापक है भरपूरा।
उसके बिना खाली न कोई, जाने कोई सतसूरा।।1।।
सब बर्तन में माटी समावे, माटी बिना अधूरा।
बर्तन खोज माटी में नाहीं, अधिष्ठान आत्म भरपूरा।।2।।
रज्जु में सर्प भ्रम से भासे, डर कर भागे दूरा।
अपनी भूल से जग दिखे, जो जाने झुठ अधूरा।।3।।
नाना विधि से बणे मिठाई, तामे चीनी बूरा।
ज्ञानानन्द सत् राम न दूजा, जाने गुरुमुखी पूरा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: हेली का अंग—14 ::—

श्लोक (213)

एषा निष्कण्टकः पन्था मुक्ते ब्रह्मात्मना स्थितेः।
शुद्धात्मनां मुमुक्षूणां यत् सदैकत्वदर्शनम्।।

दोहा (213)

सखी भूल मत पीव को, है प्राणों का नाथ।
ज्ञानानन्द विचार कर, वोहै तेरे साथ।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग—आसावरी)

भजन (213)

हेली काँई बैठी मुखड़ा न मोड़, पीया जी री खबर करो।।टेर।।
सात समन्दर पार पीया जी बिराजे, वहाँ पहुँचे सोई सब दुःख भाजे।
या है पांच कोश की दौड़।।1।।
झूठी है इस जग की प्रीति, समझो इसकी याही रीति।
अध बीच में जावे छोड़।।2।।
काचा घड़ा माटी का जैसे, देही नशवर सदा ही ऐसे।
पानी घाल त्यूं जावे फोड़।।3।।
तेरा पीव है तेरे मांहि, अब भूल राखे तू काँई।
ज्ञानानन्द उलट तू जोड़।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (214)

भूयो जन्माय प्रसक्तिर्विमुक्तिः क्लेशक्षयाद् भाति जन्माद्यभावः।
क्लेशक्शत्यै हेतुरात्मैकनिष्ठा, तस्मात् कार्या ह्यात्मनिष्ठा मुमुक्षोः।।

दोहा (214)

कौन कहां से आविया, कहां जावन तैयार।
ज्ञानानन्द जाण आप,रू महावाक्य विचार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग–आसावरी)

भजन (214)

लगन लगा हरि नाम से म्हारी हेली, कटज्या कर्म कलेश।।टेर।।
तु कौन कहां से आई म्हारी हेली, कहां जावन को तैयार।
इस जग में तेरा कौन है म्हारी हैली, कौन लगावे पेली पार।।1।।
सत् चित् आनन्द रूप है म्हारी हेली, सत् रूप से आय।
सत् में जाय समावसी म्हारी हेली, जग में ना तेरा कोई।।2।।
सतगुरु सम कोई नहीं म्हारी हेली, जग में तारण हार।
तन मन से सेवा करो म्हारी हेली, सहज होवे उद्धार।।3।।
ज्ञानानन्द निज नाव में म्हारी हेली, बैठे संत सुजान।
लौट फेर नहीं आवसी म्हारी हेली, पावे पद निर्वाण।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (215)

बुद्धिः कल्पितमालिन्याक्षालनं स्नानमात्मनः।
त्वमेव शुद्धिरेतस्य न मृदा न जलेन च।।

दोहा (215)

हेली सुणले ज्ञान को, कर ले आत्म विचार।
ज्ञानानन्द जाण आलि, भव बंधन हो छार।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग–हेली)

भजन (215)

हेली आत्म ज्ञान विचारो, भव बंधन परे निवारो।टेर।।
कीजे संतो की सेवा, सेवा से दरशे देवा।
देव का दर्शन कीजे, भव सागर पार तरीजे।।1।।
तू जगत को छोड़ लारो, यहां कोई नहीं है थारो।
भाई बन्ध संग साथी, सब झूठे जग के नाती।।2।।
पुष्प मुरझावे जैसे, तेरा रूप उड़ जावे वैसे।
इनका कांई भरोसा प्यारी, तू अपना राम सम्भारी।।3।।
हेली जग को समझो सपना, यहाँ कोई नहीं री अपना।
ज्ञानानन्द कहे सुन सजना, सब त्याग हरि को भजना।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (216)

एतैः प्रमाणैरस्तीति ज्ञातः साक्षित्या बुधैः।
आत्मायं केवलः शुद्धः सच्चिदानन्दलक्षणः।।

दोहा (216)

पाकर साधन मोक्ष का, चूके मति गंवार।
क्या गर्व करे नर बावले, जीना है दिन चार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग–हेली)

भजन (216)

हेली ये करले आत्म विचार, आत्म सुख साँतरो।।टेर।।
विवेक वैराग्य समधम साधो, और मुमुक्षता धार।
श्रवण–मनन को साध के री, निधिध्यासन को धार।।1।।
तत् त्वं साधन शोध के, लेवो समाधि धार।
सहज समाधि में पावसी रे, सत् आनन्द अपार।।2।।
परमानन्द को पाँवता, मिटे जगत जंजार।
उदित भये ज्यूं भान के, मिटज्या तम अन्धकार।।3।।
सतगुरु सेवा साध संगत को, सांचा साधन मान।
ज्ञानानन्द मिट जांवसी रे, सारी खींचातान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

–:: बेगम का अंग–15 ::–

श्लोक (217)

एको वशी निष्क्रियाणां बहूनामेकं बीजं बहुधा यः करोति।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।।

दोहा (217)

बेगम उसका नूर है, बेगम उसकी जात।
ज्ञानानन्द यूँ कहवे, काल कर्म खो खात।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग–आसावरी)

भजन (217)

साधो भाई! कर बेगम में वासा।
जन्म–मरण का धोखा मिटज्या, होवे भरम का नाशा।।टेर।।
ओहम् सोहम् रा चिन्तन करना, पल पल सुवासम सुवासा।
अभेद भाव में लीन रहे, मिटे सकल अध्यासा।।1।।
बेगम देश है निराला, नहीं माया का वासा।
और देश सब छोड़ के, कर बेगम की आशा।।2।।
दुख रा ज्यां लवलेश नहीं है, वो है सुख की रासा।
कमती ज्यादा है नहीं रे, आर पार इकरासा।।3।।
अलौकिक धाम अगोचर महिमा, सदा करो तुम वासा।
ज्ञानानन्द बेगम मांहिने, आनन्द रहे हमेशा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (218)

जन्म मृत्युर्न ते चिन्ता बन्धमोक्षौ शुभाशुभौ।
कथं रोदिषि रे वत्स नामरूपं न ते न मे।।

अवधूत गीता श्लोक 17

दोहा (218)

जन्म–मरण जहाँ है नहीं, नहीं छांव नहीं धूप।
ज्ञानानन्द कछू गम न, ऐसा देश अनूप।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग–आसावरी)

भजन (218)

साधो भाई! कर बेगम में ड़ेरा।
वहाँ पहुंचे फिर काल न खावे, कर सद्‌गुरु से हेरा।।टेर।।
अगम पंथ पंथी न पहुंचे, चाले चाल घणेरा।
वो पहुंचला जा बेगम में, अभिमान नहीं नेहरा।।1।।
शील संतोष दया जा घट में, राग द्वैष नहीं लेहरा।
आठो पहर लीन हरि में, ये पात्र जाणेरा।।2।।
कर्म भ्रम जहां व्यापे नाहीं, नहीं कोई काल पसेरा।
पाँच आठ पच्चीस नहीं भाँसे, परमानन्द है गहेरा।।3।।
अगम निगम शोध गुरु से, अनुभव आत्म सेरा।
ज्ञानानन्द अपने आप में, लीजे आप बसेरा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (219)

सर्वव्याप्तं ब्रह्मधाम यत्र विश्वं निहितं भाति भ्रान्तिभ्रमम्।
उपासते पुरुषं ये ह्यकामाः ते भूर्यक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः।।

दोहा (219)

पहुंच गया उस देश में, जहां न व्यापै काल।
आत्मस्वरूप में रम गया, भेद भ्रम सब टाल।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–मारवाड़ी)

भजन (219)

आदू धाम हमारा सा, सब का निज मूल।
सदगुरु कृपा होगी मुझ पर, मिटग्या जम का शूल।।टेर।।
मेरा तेरा है कछू नाहिं, आदु धाम के मांहि।
ये जग झुँठी झाँई, ये ही जग का रूल।।1।।
मेरा धाम अचल अखण्डा, जहां नहीं गरम नहीं ठण्डा।
सब जग उसका झण्डा, खिलता है ज्यों फूल।।2।।
आदु धाम पहुंचा पीछे, ना माया अविद्या खींचे।
न काल बलि भीछे रे, लगा ज्ञान त्रिशूल।।3।।
मैं आदु धाम को पाया रे, जन्म मरण नहीं आया।
ज्ञानानन्द यूं गाया रे, उड़े ज्ञान बिन धूल।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (220)

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं ममः।।

दोहा (220)

पहुंच गया उस देश में, जहां न व्यापे काल।
आत्म स्वरूप में रम गया, भेद भ्रम सब टाल।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–मारवाड़ी)

भजन (220)

महर भई गुरुदेव की, देश दिवाना पा लिया।
गुरु चरणा में है नित प्रीति, ज्ञान गंगा में नहा लिया।।टेर।।
अचल अमर है देश हमारा, नाही चलाय मान रिया।
सुरति युक्ति दे सतगुरु ने, उसका अनुभव करा दिया।।1।।
ऐसा दिवाना देश है जहां, न माया का लेस रिया।
अपने आप प्रकाशक सबका, सर्व खलक में छा गया।।2।।
क्या महिमा कहूँ उस देश की, गेबी देश बता दिया।
सो स्वरूप साक्षी मेरा, सर्व बन्धन खो गया।।3।।
महर करी जब सदगुरु देवा, ज्ञान पट्टा निज लिख दिया।
ज्ञानानन्द अभय देश में, सदा–सदा को बस गया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (221)

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च।।

दोहा (221)

देश दिवाना पहूंच क, बन्ध गये सब छूट।
आत्मा पद को पांवता, गांठ गयी सब खूट।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–मारवाड़ी)

भजन (221)

मस्ताना मेरा देश, सतगुरु दिखा दिया।।टेर।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तूरिया, यहां से आगे देश रहीया।
जाम में मेरा वास बसीया, जहां नहीं कर्म क्लेश।।1।।
नहीं पतला, नहीं मोटा, नहीं लम्बा, नहीं छोटा।
वहां नहीं लाभ, नहीं टोटा, वो एक सा रहे हमेश।।2।।
पंचकोष का पर्दा तोड्या, मेरा मन चेतन से जोड्या।
भूल भ्रम का भण्डा फोड्या, हूं एक रस शेष।।3।।
सत्यानन्द जी गुरु समझाया, अगम देश की राह बताया।
ज्ञानानन्द गम लौ लाया, आप्या में आप रमेश।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (222)

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।।

दोहा (222)

बेगम में जा पूछिया, भेद भ्रांति को छोड़।
ज्ञानानन्द आत्मा में, मन को लीना जोड़।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–मारवाड़ी)

भजन (222)

मेरी बैगम में है बस्ती।
तीन काल में भाव हमारा, रहवे सदा अस्ति।।टेर।।
ब्रह्मा विष्णु देवा नाहिं, नाहिं शिव और शक्ति।
तीन लोक के बाहर देश है, जहाँ मेरी सुरता रमती।।1।।
निर्भय देव निरंजन रहता, जहाँ सदा ही मस्ती।
जहां काल का दाव न लागे, आत्म सदा ही खिलती।।2।।
सब में बास बसा है उनका, ज्योति ज्ञान की जलती।
उसी देश में बास हमारा, सुरत कभी नहीं टलती।।3।।
सत्यानन्द जी समर्थ मिलिया, ऐसी बताई युक्ति।
ज्ञानानन्द कृपा सद्गुरु की, हुई बैगम में बस्ती।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (223)

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्।।

दोहा (223)

अमर स्वरूप है मेरा, नहीं काल का बास।
ज्ञानानन्द बैगम में, मिटगी यम की त्रास।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–मारवाड़ी)

भजन (223)

बैगम में मेरा वास, रहता निर्वाणी।।टेर।।
वहां दूजे का काम नहीं है, राम अरू मुझमें भेद नहीं है।
दोनों का एक ही रूप, मैं तो हूँ सबका जानी।।1।।
भेद हमारा बड़ा अजब है, समझे सो ही बड़ा गजब है।
मैं तो गुरुगम मारयो सोठ, मन की छूटी पण्डतानी।।2।।
तीन गुणों को छेक कर, गुरु चरणा में सिर टेककर।
मैं तो लेऊं बैगम की मौज, मिट गयी खींचातानी।।3।।
गुरु देव को भयो उपकारो, बैगम देश में पायो प्यारो।
अब बस्यो बैगम में बास, ज्ञानानन्द अनुभव जानी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (224)

विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वैः प्राणा भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र।
तदक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेशेति।।

दोहा (224)

वहां आनन्द बहुत है, जहां मेरा निवास।
ज्ञानानन्द बेगम में, काट्या यम की पाश।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–मारवाड़ी)

भजन (224)

बेगम में भारी मौज, सतगुरु दे दीना।
जन्म–मरण में आवे नाहिं, हमसे कह दीना।।टेर।।
चौदह लोक के बाहर है, सतगुरु कहे तो पार है।
मिटाया सब भेद, अभय पद दे दीना।।1।।
विवेक वैराग्य साधन साधके, मुमुक्षता का डेरा लाद के।
लिया अगम की सेन, बैगम में चल दीना।।2।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया, स्थुल सुक्ष्म कारण पूर्या।
महाकारण को त्याग, निज पद जा लीना।।3।।
पंच कोष अविद्या का वासा, ज्यांने छेक भया सुख राशा।
मैं तो पहुंचा शुन्य के ऊपर, जाय आत्म पद चीना।।4।।
सत्यानन्द जी बोध कराया, अमरापुर में बास बसाया।
ज्ञानानन्द महर पाय, मौज से कह दीना।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (225)

शिवं न जानामि कथं वदामि, शिवं न जानामि कथं भजामि।
अहं शिवश्चेत् परमार्थतत्त्वं, समस्वरूपं गगनोपमं च।।

अवधूत गीता श्लोक 27

दोहा (225)

बैगम में मैं रम रिया, गुरु बताया राय।
ज्ञानानन्द भव बन्धन, मिट गया सब भाय।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग–आसावरी)

भजन (225)

साधो भाई! बैगम की गम पाया।
क्या कहूँ कछू कहा न जावै, ज्यूं गूंगा गुड़ खाया।।टेर।।
अगम पंथ निगम रास्ता, सद्गुरु मोहे बताया।
ऐसा मार्ग पपील भी फिसले, वहाँ पांव जमाया।।1।।
सुन्न असुन्न धरा गगन, बस्तिन बास बसाया।
मिले बिछुड़े एक दो न, गया न पाछा आया।।2।।
अपना आप ताप नहीं रे, नहीं त्रिगुण न माया।
शुद्ध चेतन शामिल सब में, सब में एक लिखाया।।3।।
सद्गुरु शब्द सुनाया, सूंता नींद उड़ाया।
ज्ञानानन्द केवल अनुभव में, उलट आप में समाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: एक देव का अंग—16 ::—

श्लोक (226)

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च।।

दोहा (226)

राम लिखे सब मायने, भेद भ्रम को टाल।
ज्ञानानन्द ज्ञानी को, कभी न खावे काल।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग—मारवाड़ी)

भजन (226)

एकोराम देखे सब में, वो ही बड़ा है सब में।।टेर।।
जो नानात्व लो ल्याता, भव में भय बहु खाता।
वों बहुत दुख पाता, इस माया के संग में।।1।।
जो एक तत्व लो ल्याता, वो अमरापुर को पाता।
अगम निगम यश गाता, जो रम गया राम रंग में।।2।।
गहना बने अनेका, सोना है सब में एका।
यूँ आत्म सब में देखा, व्यापक है हर अग में।।3।।
ज्ञानानन्द यूं फरमावे, एको देव सब में रहावे।
कोई बिरला समझ में ल्यावे, गुरु का ज्ञान अगम में।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (227)

पश्यन्ति स्वप्नवल्लोकं तुर्यभूमिसुयोगतः।
पञ्चमीं भूमिमारुह्य सुषुप्तिपदनामिकाम्।।

दोहा (227)

निराकार निज आत्म है, माया अविद्या पार।
ज्ञानानन्द आप ही, स्वयं है निराधार।।

(गुरु बोल वाणी बेखरी स्वरुप चेतावनी राग—आसावरी)

भजन (227)

चेतन अपने आप है, नहीं माया का काम।।टेर।।
आदि अचल गुँसाई, व्यापक सभी में सांई।
उस बिन खाली न कांई, व्यापक सब धाम।।1।।
ज्यों कमल बसे जल मांहि, जल स्पर्श करता नाहिं।
यूँ अचल कूटस्थ रहाई, सदा रहे निष्काम।।2।।
जैसे पुरूष की छाया, यूँ समझो ब्रह्म की माया।
नश्वर सभी काया, नहीं नाम रहे नहीं ठाम।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी स्वामी, है वो घट अन्तर्यामी।
ज्ञानानन्द करे सलामी, पल—पल आठू याम।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (228)

मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किञ्चन।
मृत्योः स मृत्युं गच्छति य इह नानेव पश्यति।।

दोहा (228)

राम सभी में ऐक है, मति में राख विवेक।
ज्ञानानन्द विचार के, सुरत आप में टेक।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरुप चेतावनी	राग–आसावरी)

भजन (228)

एक हरि को ध्यावो, मत करो बे विचार।
मत करो बे विचार, लेवो राम को धार।।टेर।।
भाई एक राम ध्यावो, दूतिया सभी मिटाओ।
नहीं तो भव भय खावो रे, वेद कियो निराधार।।1।।
पतिव्रता नारी जो पिया की, सुरता लागी पिया से जांकी।
अब कोई रहा न बाकी, एक पिया इकसार।।2।।
एक राम व्यापक सब में, जल, थल और नभ में।
क्यों करे कल्पना मन में, सतगुरु से कर दीदार।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी समझावे, सब गहनों में कनक बतावे।
ज्ञानानन्द यूँ गावे, अद्वैत मत लौ धार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: पियाजी का अंग—17 ::—

श्लोक (229)

यस्यां भक्तिर्भगवति हरौ निःश्रेयसे वरे।
विक्रीतोऽयमृताम्भोधौ किं क्षुद्रैः खातकोदकैः।।

दोहा (229)

यह कमा ले इश्क है या इन तिहाये बेखुदी।
आपकी सूरत नजर आती है हर तस्वीर में।।

(शिष्य लघु बोल	वाणी मध्यमा	ईश्वर प्रार्थना	राग मारवाड़ी)

भजन (229)

दर्शन देना दिलहार, तुम बिन व्याकुल भई अपार।।टेर।।
लगा तेरे इश्क का जाला, तन को काट कर डाला।
अब तो मिल जा मेरे आला, मैं तड़पत हूँ बारम्बार।।1।।
पल–पल जीव घणो तरसे, फिर मालिक क्यों नहीं दरशे।
अविद्या भूल मिटा दे जड़ से, मुझको तेरा ही आधार।।2।।
क्या काबिल नहीं तेरा, इतनी क्यों करी देरा।
अब तो मिला दे सेरा, तुम बिन कौन करे उद्धार।।3।।
तन मन धन कर दूँ कुर्बान, तुम बिन दूजा नहीं दिलजान।
ज्ञानानन्द दियो तान, मेरा मासुक तू दिलदार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (230)

शुद्धचैतन्यरूपत्वं चित्तं ज्ञानस्वरूपतः।
अखण्डसुखरूपत्वादानन्दत्वमितीर्यते।।

दोहा (230)

पिया पूरण परमात्मा, ताकि कीजे खोज।
ज्ञानानन्द जाण्या बिन, मिटे न ममता बोज।।

(गुरु बोल	वाणी बेखरी	स्वरूप चेतावनी	राग मारवाड़ी)

भजन (230)

पिया बिना धूल जमारो, कर ले गहन विचार।।टेर।।
यह माया मिथ्या संसारी, आपत काल न थारी म्हारी।
आखिर जावे हारी, कुछ भी न पावे सार।।1।।
पिया सुख का भण्डारा, वो तेरा प्रीतम प्यारा।
दुख का मिटज्या लारा, आनन्द मिले अपार।।2।।
सुख सेन पिया की पोड़ो, जगत जाल को छोड़ो।
सबसे नाता तोड़ो, होजा पिया की लार।।3।।
गुरु सत्यानन्द समझावे, पिया की राह बतावे।
ज्ञानानन्द यों गावे, पिया बिन जीना है धिक्कार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (231)

तमेव भारणम् गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रादात्परां शान्ति स्थानं प्राप्स्यसि भागवतम्।।

दोहा (231)

हर चशम, हर बशर, हर फहम, हर मकहूम में।
नाजिर नाजर, मंजूर हूँ अलम हूँ मै मालूल में।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (231)

परम पिया पाया सा, गयी भरमना दूर।।टेर।।
मैं क्यों तीर्थ में जाऊँ, मैं क्यों मूरत को ध्याऊँ।
अपने में आप समाऊँ, सदा ही आप हुजूर।।1।।
मैं ऐसा पिया पाया, जाके रंग रूप नहीं काया।
अपने में आप अजाया, है सब निज नूर।।2।।
साक्षी पिया हमारा, नहीं भेला नहीं न्यारा।
वो चेतन सबका प्यारा, व्यापक है भरपूर।।3।।
गुरु सत्यानन्द समझाया, पिया का दरश कराया।
ज्ञानानन्द यूँ ध्याया, सतगुरु मिलिया पूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (232)

उत्तमभगवतः प्राप्तः सच्चिदानन्दस्वरूपम्।
ज्ञानानन्दाद् यतो न यान्ति त्रितापाः।।
(ज्ञा. श्लो.)

दोहा (232)

परम पिया पायी लिया, जो है आप्या आप।
ज्ञानानन्द दर्शन कर, मिटिया तीनों ताप।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (232)

अखण्ड प्रीतम पायी सा, मानव तन के मांहि।।टेर।।
ना ढूँढ़ी शहर बजारा, ना ढूँढ़ी भीतर बहारा।
मेरे पिया का सकल पसारा, वाँ बिन खाली ना कांई।।1।।
ना जप तप योग साधा, फिर भी अमर पिया लादा।
नहीं वो कमती ज्यादा, इकसार है मेरा सांई।।2।।
मैं मिली पिया से जाके, दुई का परदा हटाके।
आदू पिया रिझाके, मिटी मिथ्या जग झांई।।3।।
गुरु सत्यानन्द जी पाया, पीव का पंथ बताया।
ज्ञानानन्द मिल गाया, सदा एक रस रहाई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (233)

अखण्डदृश्यरूपं सच्चिदानन्दस्वरूपम्।
ज्ञानानन्द इति लिखति ब्रह्म अद्वितीयमनूपम्।।

दोहा (233)

अजर–अमर पियाजी है, सकल गुणों से पार।
ज्ञानानन्द जाय मिली, भेद भरम सब टार।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (233)

अमर पिया पायी सा, सब मांहि भरपूर।।टेर।।
अस्ति भाँति प्रिय रूपा, सत चित आनन्द अनूपा।
जहाँ नहीं छाया नहीं धूपा, है वो सबका निज नूर।।1।।
अजर अमर अविनाशी, मेरा पीव घट–घट वासी।
वो मेरा निज सुखराशि, नहीं नेड़ा नहीं दूर।।2।।
अब मिली जाय पिया से, प्रेम करी मैं खोल हिया से।
अब मैं गाऊं गाना जिया से, बाजे अनहद तूर।।3।।
मैं पायी पीया ऐसा, जहां नहीं राग नहीं द्वैषा।
रहता प्रेम हमेशा, सदा रहे जरूर।।4।।
अब मैं पिया के घर आके,गुण पिया का गाके।
ज्ञानानन्द यूँ चाके, पाके अमृत लूर।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (234)

आत्मा यः परमात्मा यत्र नः दुःखलवलेशः।
ज्ञानानन्दो मुक्तिभयात् त्यजति जगन्मिथ्या।।

दोहा (234)

आत्मा सो ही परमात्मा, इनमें मीन न मेख।
ज्ञानानन्द तोड़ दिया, भूल भरम की टेक।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (234)

संतो भाई मिटा दिया सब धोखा।
भव बंधन की होगी निवृति, भाग जागिया चौखा।।टेर।।
विवेक वैराग्य षट् सम्पति, मुमुक्षता का आ गया मौका।
निज स्वरूप में जाय समाया, क्रियामाण संचित को रोका।।1।।
मल विक्षेप को दूर हटाया, आवरण ज्ञान से झौंका।
भवसागर से पार पहुंचा, बैठ ज्ञान की नौका।।2।।
उलट आपको देखते ही, आनन्द आया अनोखा।
अनुदुखों से पीछा छूटा, भव मिटा सब यम का।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिल गये, ज्ञान दिया हीरो का।
ज्ञानानन्द बण व्यापारी, जीत लिया यह मौका।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (235)

यं न प्रकाशयति किं चिद्विनोड़इपि चन्द्रः नो।
विधुतः किमुत पहिरमं मिताभः।।

दोहा (235)

दयालू सतगुरु देवजी, बन्धन दीना टाल।
ज्ञानानन्द भवजाल सुँ, कीन्हा तत्काल निहाल।।

(शिष्य सामर्थ बोल वाणी पेश्यन्ति स्वरुप महिमा राग मारवाड़ी)

भजन (235)

साधो भाई अभेद हरि बतलाया।
भेद करे सो भवदुख पावे, यो ही जन्म गंवाया।।टेर।।
सोना एक है सभी में, फिर भी गहना बहुत बनाया।
टूट फुट गहना के मांहि, अन्वय सोना थाया।।1।।
ब्रह्म आत्मा एक सदा ही, भेद बुद्धि बिसराया।
हरि है मुझमें मैं हूँ हरि में, ज्यों जल बीच तरंग समाया।।2।।
अस्ति भाँति प्रिय ब्रह्म में, नाम रूप बिसराया।
सब का अधिष्ठान एक हरि में, जड़ चेतन में थाया।।3।।
श्रुति युक्ति से अनुभव कीना, अपने में आप अजाया।
ज्ञानानन्द सर्व को जाने, ना कोई जान जणाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (236)

नष्टे पूर्वे विकल्पे तु यावदन्यस्य नोदयः।
निर्विकल्पचैतन्यं स्फुटं तावद् विभासते।।
(पंचीकरण राम गुरु श्लोक 26)

दोहा (236)

मैं अपने में आप हूँ, भेदभ्रम न कोई।
मैं ही सब में रम रहा, ज्ञानानन्द सोई।।

(शिष्य सामर्थ बोल	वाणी पेश्यन्ति	स्वरुप महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (236)

क्या गाऊं क्या बतलाऊं, राम मेरा निज नूर।
भटक भटक सब जग मर्‌या, जो जाने उसे दूर।।टेर।।
कोई गंगा यमुना जावे, तीर्थ नहावे भरपूर।
मंदिर जावे मूर्त ढोके, फिर भी मिले न मन का मूर।।1।।
जप तप व्रत धर्म सब साधे, नियम पाले भरपूर।
अपने आप को जाणे नाहिं, आगे खड़ा यम सूर।।2।।
ये अब म्हारे मन नहीं भावे, उग्यो ज्ञान को सूर।
भ्रम अन्धेरो दूरा भाग्यो, अहंता ममता चूर।।3।।
सद्‌गुरु जी ऐसी युक्ति दीना, मैंने किया मंजूर।
ज्ञानानन्द निज रूप परख के, मिटा दिया फितूर।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: दृढ़ आत्म अनुभव का अंग—18 ::—

श्लोक (237)

ब्रह्मैवाहमखण्डं ब्रह्म निर्गुणं निर्विकल्पकम्।
इत्येवाखण्डया वृत्त्या तिष्ठ ब्रह्मणि निष्क्रिये।।

दोहा (237)

जीव ब्रह्म की एकता, कहत वेद वेदान्त।
जो इसमें भेद माने, वो ही नर है भ्रांत।।

(चिदाभास बोल	वाणी परा	साक्षी महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (237)

मैं हूं ब्रह्म आत्मा एक, नहीं दूजे का भान।।टेर।।
अद्वितीय ब्रह्म माही, भेदभाव कुछ नाहिं।
मैं सब में रियो समाय, श्रुति करे बखान।।1।।
रूप रंग नहीं रेखा, निज चेतन घट देखा।
मिट गया जमका लेखा, गोली मारी तान।।2।।
मम साक्षी रूप न्यारा, नहीं श्वेत नहीं कारा।
मैं अपने में आप प्यारा, व्यापक सबमें समान।।3।।
नहीं है साँझ सवेरा, आत्म रूप एक मेरा।
ज्ञानानन्द दीना डेरा, अपने आप को जान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (238)

अवाक्पाणिपादोऽहमवागक्षरप्राण एव रम्यमनो ह्यबुद्धिः।
व्योमेव पूर्णोऽस्मि विनिर्मलोऽस्मि सदैकरूपोऽस्मि चिदेव केवलः।।

दोहा (238)

ब्रह्म एक अद्वितीय है, नानात्व मत देख।
माया अविद्या को हटा, श्रुति अपन में टेक।।

(चिदाभास बोल	वाणी परा	साक्षी महिमा	राग मारवाड़ी)

भजन (238)

मैं अचल ब्रह्म अविनाशी, हूँ मैं स्वयं प्रकाश।।टेर।।

सुरज चन्द्रमा तारा, पर प्रकाश सारा।
मैं हूँ इनमें न्यारा, सर्व में मेरा उजास।।1।।

चंचल प्रकृति सारी, मेरी सत्ता इनसे न्यारी।
ये गयी मुझमें हारी, इनका पल–पल होवे नाश।।2।।

मैं नहीं पतला नहीं मोटा, नहीं लम्बा नहीं छोटा।
नहीं लाभ नहीं टोटा, सदा ही सुख राश।।3।।

वाच्य लक्ष्य नहीं लागे, मैं साक्षी इनसे आगे।
ज्ञानानन्द स्वयं सागे, हूँ सबका खासम–खास।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (239)

अचलमखण्डं ब्रह्माहमादिमध्यान्तश्च।
ज्ञानानन्दः सत्यं सोऽहं साक्षी चेतो निर्गुणश्च।।

(ज्ञाना. श्लोक)

दोहा (239)

बुद्धि रूपी डाली पर, पक्षी बैठा दोई।
एक रखे अकर्ता, एक कर्ता नित होई।।

(चिदाभास बोल	वाणी परा	साक्षी महिमा	राग आसावरी)

भजन (239)

मैं हूं अचल ब्रह्म अविनाशी।
नाम रूप ये मुझमें नाहिं, सब माया अध्यासी।।टेर।।

कर्ता कर्म क्रिया नाहिं, नाहिं उपासक उपासी।
भोगता भोग भोग्य नाहिं, मैं सदा निर्वासी।।1।।

दृष्टा दर्शन दृश्य नाहिं, ना दर्शन अभिलाषी।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय भी नाहिं, रहता मैं प्रकाशी।।2।।

ध्याता ध्यान धेय भी नाहिं, ना कोई धीर उदासी।
ना उपदेशक ना उपदेश हूँ, नाहिं मैं उपदेशी।।3।।

आप मैं आप ताप नहीं त्रिगुण, सदा रहूँ जगवासी।
ज्ञानानन्द सत्य सोऽहम्, हूँ सदा थिरथासी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (240)

शुद्धोऽहम् बुद्धोऽहम् प्रत्यग्रूपेण नित्यसिद्धोऽहम्।
शान्तोऽहमनन्तोऽहम् सततपरमानन्दसिन्धुरेवाहम्।।
(स.वे.सि. 866)

दोहा (240)

आत्म परमात्मा एक है, मूर्ख माने भेद।
ज्ञानानन्द की सुनके, गुरु से समझ अभेद।।

(चिदाभास बोल	वाणी परा	साक्षी महिमा	राग आसावरी)

भजन (240)

मैं हूँ अपने आप अपारा।
अवगत आप अलख अविनाशी, नित न्यारा का न्यारा।।टेर।।
जंगल बस्ती नाहिं, नाहिं शहर बजारा।
ना मैं माणक ना मैं मोती, ना मैं लाल जंवारा।।1।।
ना मैं कर्ता ना मैं भर्ता, सदा रहूँ निर्विकारा।
सब कुछ करता कुछ नहीं करता, एकरस इकसारा।।2।।
ना मैं नीरा ना मैं पृथ्वी, ना आकाश समीरा।
ना मुझमें पचीस प्रकृति, सदा मैं इनके पारा।।3।।
पंचकोष मैं नाहिं, चित मन बुद्धि अहंकारा।
ज्ञानानन्द सकल को जाँनू, ना मोहे जानना हारा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—: उल्ट बोध अंग—19 :—

श्लोक (241)

आनन्दार्णविनिर्मग्नस्वभावोऽभवदर्जसा।
एवं त्वमपि दुर्वृत्तं निगृह्य सखि सम्भवम्।।
(त्रिपुरा रहस्य ज्ञानाखण्डे)

दोहा (241)

पराया अपना लागे, अपनो से ना मोह।
ज्ञानानन्द उल्टा में, सुल्टा दरशे सोह।।

भजन (241)

साधो भाई! अलख थलख या वाणी,
क्या कहूँ कछु कहा न जावै, जाणे सो ही मानी।।टेर।।
बाँजड़ी पुत्र पांग्लो जणलायी, वो पुत्र किया घर हानी।
घर खोया हानि सब मिटगी, उलट डायन को खानी।।1।।
कमल माहिं से नीर प्रगटिया, नीर माहिं से भानू।
भानू में शीतलता भारी, शीतलता में रहाणी।।2।।
हंस चढ़ा ब्रह्म के ऊपर, गरूड़ चढ़े विष्णु कानी।
बैल चड़े शिवजी के ऊपर, सोऽहम् से नहीं छानी।।3।।
क्या कहूँ कछु कह्यो न जावै, संतो की रीत भखानी।
ज्ञानानन्द उल्ट आप में, आप्या में सुख जानी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (242)

मायया सङ्गम्य मन्मथपुरमासाद्य द्रुतम्।
मन्मथारं परिष्वज्य मुहुः मुहुर्मुहुः कल्मषाः।।
(त्रिपुरा रहस्य ज्ञानखण्डे)

दोहा (242)

पाहन पर धरती टिकी, बिन धरती आकाश।
सिर टिक्यो आकाश में, ज्ञानानन्द यु पास।।

भजन (242)

साधो भाई! उल्टी वाणी सुन मेरी,
उल्टी ने सुल्टी कर खोज्ये, तब पावे निज सेरी।।टेर।।
अंधा देखे सुने कोई बहरा, गूंगा शब्द को टेरी।
नकटा बास टूटा पहाड़, पंगला नित्य भेरी।।1।।
बूंद माहिं समंद समाया, राई में समाया मेरी।
पानी में एक तुम्बी डूबी, पत्थर तरे लगी नहीं बेरी।।2।।
एक तमाशा ऐसा देखा, सूरज ने किया अन्धेरी।
इस अन्धेरी में हीरा पाया, आई अमीरी गेरी।।3।।
इस वाणी का अर्थ कोई खोजे, मिटे चौरासी फेरी।
ज्ञानानन्द समझ रमझ है, गाफिल नाहिं हेरी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

श्लोक (243)

प्राप्य स्वमातरं नाथ सुखं नित्यं समाप्नुहि।
एतत्ते कथितं नाथ स्वानुभूतं सुखास्पदम्।।
(त्रिपुरा रहस्य ज्ञानाखण्डे)

दोहा (243)

ज्यादा बोले मुनि कड़ा, मीठा बोले नहीं।
ज्ञानानन्द पग बिन चल, बिना पंथ के सही।।

भजन (243)

साधो भाई! मौहे अचम्भा आया,
उल्टा सुल्टा ठाठ देख के, मन मेरा मुसकाया।।टेर।।
चींटी एक हाथी ने खागी, स्याल सिंह ने खाया।
मछली बहुत दुखी थी जल में, बैठ अग्नि सुख पाया।।1।।
मृतक देख काल भी डरपे, पंगु पहाड़ चढ़ाया।
बुंद मांहि समुद्र प्रगट्या, राई में पहाड़ समाया।।2।।
राजा करे रंक की सेवा, शिष्य गुरु ने समझाया।
देवल माही देव प्रकट्या, देव में मंदिर नहीं पाया।।3।।
इस वाणी का भेद नहीं चोखा, समझे जिन्हें नहीं आया।
ज्ञानानन्द इसे मत समझो, नहीं छूट जावली माया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: चेतावनी अंग—20 ::—

भजन (244)

जग में दो दिन का है खेल, जग में दो दिन का है खेल।
उमर थारी जायी रही रे, जैसे जा रही रेल।।टेर।।
भाई—बंध तेरा मामा भाणजा, झूठा जग का मैल।
मिलकर के भी बिछुड़ जावसी, जैसे काचरी बेल।।1।।
काया माया झूठी जाणो, जैसे जादू का खेल।
देखत ही उड़ जावसी रे, जैसे कपूरी तेल।।2।।
शाम पड़े सब पंछी बैठा, करे रात को पहल।
डाल छोड़कर पंछी उड़ज्या, बस इतना सा मेल।।3।।
राजा प्रजा कोई न रहवे, देवा अवतारी सेल।
काल बड़ा है बलकारी रे, खावे मुख में मेल।।4।।
आत्म ज्ञान जब ही होवे, लागे शब्दा का सेल।
मोह माया ममता मिट जावे, करे ब्रह्म में टहल।।5।।
वृद्ध अवस्था बड़ी दुखदायी, कोई न रहवे गेल।
ज्ञानानन्द हरि भजन से, छूट जावे यम जैल।।6।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (245)

गाड़ी जावे रे अमर लोक, बैठ जावो गाड़ी में।।टेर।।
कोई—कोई करम कमावे छ खोटा, यमड़ा मारेला ज्यांके सोटा।
ये तो बुरा करमा का भोग, बैठ जावो गाड़ी में।।1।।
कोई—कोई शुभ करम विचारे, ज्यांक बल वो स्वर्ग सिधारे।
ये तो शुभ करमा का संयोग, बैठ जावो गाड़ी में।।2।।
कोई—कोई ब्रह्म लोक तक जावे, पुण्य छिन हो पाछा आवे।
मिटे नहीं जन्मा को रोग, बैठ जावो गाड़ी में।।3।।
उत्तम जिज्ञासु ज्ञान विचारा, सहज हो भव जल से पारा।
फिर देह आत्म वियोग, बैठ जावो गाड़ी में।।4।।
ज्ञानानन्द पद विरला पावे, लौट फेर भव में नहीं आवे।
मिले पूरबला योग, बैठ जावो गाड़ी में।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (246)

चालो रे अमर लोक, अवसर आग्यो रे।।टेर।।
लख चौरासी का सुणो विस्तारा, ज्यामें जीव भया दुखियारा।
भोगे करमा का भोग, अवसर आग्यो रे।।1।।
नो लख जल का जीव कहावे, दस लख फिर पंछी बतलावे।
ग्यारह लाख कृमी का योग, अवसर आग्यो रे।।2।।
बीस लाख स्थावर जाना, तीस लाख पशु का अनुमाना।
सब करमा का जोग, अवसर आग्यो रे।।3।।
चार लाख मानुष का मेला, ज्ञानानन्द हो राम से भेला।
मिटज्या चौरासी भोग, अवसर आग्यो रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (247)

भूल करे मत भाई रे, मनुष्य जन्म को पाके।
मनुष्य जन्म को पाके, ई सुअवसर को पाके।।टेर।।
हीरा जड़ित हाण्डी ल्याया, ज्यां में लसण का साग पकाया।
ज्यामें चंदन की आग जलाया रे, पछताया खारी खाके।।
सोना रा हल गड़वाया, ज्यांने ऊसर में जार चलाया।
बीज आंकड़ा का बोया रे, फल आम कहां से चाखे।।
कपूर भीम सैनी ल्यावे, ज्यांसे तन का रोग भगावे।
मूरख नाज में दबावे रे, औषध का भेद न पाके।।
ये मानूष जनम का मौका, ज्ञानानन्द खावे मत धोखा।
करम करल्यो चौखा रे, सतगुरु जी की शरणा जाके।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (248)

मनारे मत चाले अफूटो।
उलटो चाल घणो दुख पावे, यो जग है सब झूठो।।टेर।।
नियम धरम को पालन करले, पकड़ सत को खूटों।
गुरु वचन ने कभी मत टालो, तन–मन चाहे सब छूटो।।
गुरु सेवा मोक्ष का कारण, करलो काम सखूठो।
गुरु से प्रेम अटूट सदा ही, चाहे सब जग जावे रूठो।।
वचन न मान्यो राजा बलि, गुरु शब्द सुणायो अनूठो।
अपनी टेक जो छोड़ी नाहिं, जा पातालां बैठो।।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, ज्यांको पलड़ा लूंठो।
ज्ञानानन्द सील संतोष बिन, मिले ना राम अनूठो।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (249)

दुर्लभ मानव जन्म है, देव भी करे आस।
ज्ञानानन्द खौवे मत, मानव हीरा पास।।

भजन (249)

मनख जमारो अवसर मोटो, नहीं तो पाछे पछतावेलो।
रामभजन करले रे बन्दे, भवसागर तर जावेलो।।टेर।।
मात–पिता गुरु सेवा करले, अन्तःकरण धुल जावेलो।
विवेक–वैराग्य साधन करले, अधिकारी पद पावेलो।।1।।
अधिकारी बन प्रश्न करले, महावाक्य सुनावेलो।
वाच्य हटाके लक्ष्य समझो, जीव ब्रह्म हो जावेलो।।2।।
जीव ब्रह्म की होवे एकता, जीवन मुक्ति पावेलो।
जन्म–मरण में फेर न आवे, विदेह मांहिने जावेलो।।3।।
सत् शास्त्र संतो की वाणी, अगम–निगम यश गावेलो।
ज्ञानानन्द उलट आप में, नहीं आवे नहीं जावेलो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (250)

धन जन माय मौकली, जावत न लाग बार।
ज्ञानानन्द हरिभजन सु, सहजे हो भव पार।।

भजन (250)

मानव तन का नहीं ऐतबार, जग में थोड़ा जीवना।।टेर।।

नारी सुशील चन्दा जैसी, कुल में कमी नहीं कैसी।
आखिर में गति होवेगी ऐसी, तेरी कोई न जावे लार।।1।।

महल मालक्या बण्या चौबारा, सोना का सिंहासन तुम्हारा।
अन्न धन का भऱ्या भण्डारा, इस धन को जात न लागे बार।।2।।

सतगुरु सत्संग सेवा साधो, मन को गुरु वचना से बांधो।
गुरु ज्ञान का तीर साधो, ज्यां से काम क्रोध को मार।।3।।

ज्ञानानन्द कहे गुरुवाणी, सोच समझ रे भोला प्राणी।
आवागमन की होज्या हानि, तू सहज होय भव पार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: प्रश्न—उत्तर का अंग—21 ::—

भजन (251)

हे बाई ! अपना हाल बतावो।
सांची—सांची बात बताना, झूठा ना जतलावो।।टेर।।

कैसा तो तुम पाणी पीवे, कैसा भोजन पावो।
कैसा तो तुम सोवे सोवणा, कैसा गाणा गावो।।1।।

कांई उमर थारी कहिए, कांई पति की बतावो।
कांई उमर थारी सास की, कांई ससूरा लखावो।।2।।

कौन तेरी दौराणी कहिए, कौन जिठाणी दिखावो।
कौन तो तेरा देवर कहिए, कौन है जेठ सुणावो।।

ये बांता है महरम की, जाणे जाने ही जणावो।
ज्ञानानन्द सुण बाई सा, असली राज समझावो।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (252)

साधो भाई मैं हूं सेठ पुराणा।
सांची–सांची बात बताऊं, नाहिं करू झुठलाणा।।टेर।।
दो तो मेरे पुत्र कहिए, एक कहिए मुकाना।
चार तो ज्यांमें कमरा कहिए, एक कहिए दुकाना।।
उस दुकान में सौदा अमोलक, भरिया माल खजाना।
शब्द विवेकी सौदा करसी, मूरख फिरे बौराना।।
मात–पिता मेरे संग विराजे, सुन्दर नार सुहाना।
एक भाई बहन कहिए, यही परिवार ठाना।।
आना जाना मुझ में नाहिं, निर्भय आद ठिकाना।
ज्ञानानन्द अर्थ करे सो, सोहि मम रूप पिछाना।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (253)

साधो भाई ये पद कैसे पावे।
देश काल वस्तु नहीं लागे, ऐसा संत बतावे।।टेर।।
रंग रूप है नहीं जिसमें, कैसे नैन लगावे।
शब्द गति लागे नाहिं, शब्द गति लखावे।।1।।
मन पवना की गमता नाहिं, कैसे ध्यान लगावे।
ध्याता ध्यान धेय भी नाहिं, अगम–निगम बतावे।।2।।
ऐसा झीणा मार्ग है ज्यां, पांव पपील पिसलावे।
हाथी पांव ठहरेगा कैसे, याही अचरज आवे।।3।।
ब्रह्म निष्ठ मिले गुरु जद, ऐसा निश्चय आवे।
ज्ञानानन्द भोम अगोचर, गुरुगम से दृढ़ावे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (254)

साधो भाई सो चेतन को पावे।
रहे मरजीवा जीवे नाहिं, कबहू काल नहीं खावे।।टेर।।
शब्द तीर सतगुरु जी मारे, श्रवण कर ल्यो ल्यावे।
घायल हो घूमे गुरु आगे, शरण छोड़ नहीं जावे।।1।।
संशय सांप नगर में दीखे, ज्यांरा भय नहीं खावे।
निश्चय आग जला गुरु गम से, संशय सांप जलावे।।2।।
अनुदुखां री भये निवृत्ति, जीवन मुक्त हो जावे।
विदेह मुक्ति भवसागर नाहिं, धाम अगोचर पावे।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु दाता, सरल पंथ समझावे।
ज्ञानानन्द कोई बड़ भागी, पूण्य पूरबला पावे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (255)

मुक्ति कहवे है किसको, समझाावो गुरु भेद।
ज्ञानानन्द शरणा में, मेटो मन की खेद।।

भजन (255)

साधो भाई कहो मुक्ति कैसी।
युक्ति सहित अर्थ बताना, संत शास्त्र कहे जैसी।।टेर।।
पहले बताना स्वरूप मुक्ति का, खोल दिखावो वैसी।
हेतु और फल बताना, गुरु से जान्यो जैसी।।1।।
कितने भेद मुक्ति के कहिये, आगे कीजे लेसी।
कारण कार्य मुक्ति कहिये, खोल करो पेसी।।2।।
क्या साधन संबंध, किसका किसके कैसी।
यथार्थ उत्तर देना, रति न रहवे रहसी।।3।।
लक्षण प्रमाण वस्तु सिद्ध, कैसे हो कहो कैसी।
ज्ञानानन्द सोच समझ, सुणावो ज्ञान जैसी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (256)

दृढ़ राग द्वैष को रे, छोड़ दिया जग माहिं।
ज्ञानानन्द जिवन मुक्त, उनमें संशय नाहिं।।

भजन (256)

साधो भाई ! जीवन मुक्त प्रमाणा।
उनकी महिमा वो ही जाने, लोग रहे हैराना।।टेर।।
पवन वेग से भ्रमण करता, ज्यों पीपल का पाना।
शेष कर्म प्रारब्ध से, क्रिया करत दरशाना।।1।।
कभी चढ़कर चले हाथी घोड़ा, कभी नंगे पांव रवाना।
कभी–कभी घूमे बाग–बगीचा, कभी घूमे श्मशाना।।2।।
कभी सज्या शयन, उत्तम भोजन भोग भुगताना।
कभी न खावे इक दाना, कभी न खात अगाना।।3।।
कोई करे वांकी पूजा आरती, कोई समझे अभिमाना।
उनका भला बुरा कोई नहीं, सबको समझे एक समाना।।4।।
जो वांकी पूजा करता, वो संचित पुण्य फलपाना।
जो कोई वांकी निन्दा करता, पाप फल ले जाना।।5।।
ज्ञानी की देह का, बिन नियम होता आना जाना।
उनको भ्रम संदेह नहीं कबहूं, पाया ब्रह्म निरवाना।।6।।
ज्ञानानन्द ऐसे संतो का, दुर्लभ जग में बाना।
आप तरे औरां ने तारे, भक्तों के डीग आना।।7।।

ॐ सोऽहम् ॐ

–: पाखण्ड का अंग–22 :–

दोहा (257)

पाखण्ड ही पाखण्ड सूं, करते खींचाताण।
ज्ञानानन्द सत्य बिना, नहीं पावे निर्वाण।।

भजन (257)

साधो भाई मतवादी नहीं पाया।
अपने मत की कर–कर बढ़ाई, यूं ही जन्म गंवाया।।टेर।।
प्राण उपासक प्राण ब्रह्म कहत है, चार्वाक कहे काया।
सांख्य गुणों को ब्रह्म कहत है, ऐसे भरम भुलाया।।1।।
पाद वेत्ता पाद ब्रह्म कहत है, विशेषज्ञ शब्द बतलाया।
लोक वेत्ता लोक को कहत है, देवोपासक देव ठहराया।।2।।
वेदज्ञ तो वेद बतावे, यज्ञादिक यज्ञ सुनाया।
भोक्ता वाले भोक्ता ही जाने, भोज्य मरम लिखाया।।3।।
सुक्ष्मवेत्ता सुक्ष्म माने, कोई स्थूल दृढ़ाया।
साकार उपासक मूर्त माने, शुन्यवादी अमूर्त दिखाया।।4।।,
ज्योतिषी काल को माने, स्वरज्ञानी दिशा ठहराया।
धातु वादी धातु माने, मंत्रवादी मंत्र पुराया।।5।।
मनवादी मन को माने, बौद्ध बुद्धि बतलाया।
चित्तवादी चित्त को समझे, धर्मवेत्ता धर्म को ठहराया।।6।।
कोई चौबीस कोई पच्चीस, कोई इकतीस जनाया।
कोई आश्रय कोई अनाश्रय, कोई स्त्री पुर्लिंग दिखाया।।7।।
सृष्टि वेत्ता सृष्टि को कहत है, लयवादी लय जतलाया।
वाद–विवाद बहुत जगत में आर–पार नहीं पाया।।8।।
कल्पित आत्म में वाद–विवाद, अनुभव में गुरु बतलाया।
ज्ञानानन्द समझ आपको, जीवन मुक्ति ले भाया।।9।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (258)

जगत में बहुत ढ़ोंगी गुरु चेला।
आत्म ज्ञान तो जाने नाहिं, चावे रूपया धैला।।टेर।।
कपड़ा रंगाई जगत में डोले, ज्यांका मन है मैला।
तंत्र–मंत्र करे टोटक्या, पैसा सूं भर ले थैला।।1।।
सीधा–सीधा ने लेवे चक्कर में, करता पैलम पैला।
गुरु चैला दोनों नरक में जावेला, मोह माया में खैला।।2।।
मंदिर बनाई महंत बण बैठे, कर्म कमाय गंधैला।
मांस खाए मदिरा पीवे, कुकर्मो में टैला।।3।।
पाखण्डी गुरु शिष्य पाखण्डी, उल्टा किया सब गैला।
चोर चांदणो कभी नहीं चावे, ज्ञानानन्द देवे हैला।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (259)

अनपढ़ गुरु दुख देला रे, दुनिया में मुंडे चेला रे।।टेर।।
लम्बी–लम्बी जटा बढ़ावे, सारा तन में राख रमावे।
भवसागर जाय डूबेला रे, अनपढ़ गुरु दुख देला रे।।1।।
कंठी माला तिलक लगावे, भगवा पहन कर रूप बतावे।
वे ज्ञान का जाणे न धैला रे, अनपढ़ गुरु दुख देला रे।।2।।
पूर्ण आत्मा का भेद न जाणे, सत्संग में बैठा झूठी ताणे।
वे सदा ही नरक में रेला रे, अनपढ़ गुरु दुख देला रे।।3।।
ज्ञानानन्द कहवे चेतो भाया, राम भजन का अवसर आया।
ईश्वर ही पार करेला, अनपढ़ गुरु दुख देला रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (260)

भेद भरम के मायने, जगत हो रहा डोल।
ज्ञानानन्द जाण्या बिन, होवे पोलमपोल।।

भजन (260)

साधो भाई! दुनिया खा रही धोखा।
मुक्ति का साधन नहीं जाने, निरखे चोखा–चोखा।।टेर।।
कोई मुक्ति प्राणायाम से माने, वायु कुम्भक में रोका।
आसन सिद्ध पदम लगाके, ऐड़ी को जोर से ठोका।।1।।
कोई मुक्ति कर्मकाण्ड से माने, हवन करे घणा चोखा।
वेद मंत्र पढ़ दी आहुति, घी अग्नि में झौका।।2।।
कोई मुक्ति तप से माने, शरीर सुखाई किया खोखा।
निज चेतन जाना नहीं, कैसे मिले मुक्ति का मौका।।3।।
ज्ञान बिना मुक्ति नाहिं, यो वेदों में लेखा।
ज्ञानानन्द शरण सतगुरु की, आनन्द आवे अनोखा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (261)

भूलकर भी मत कीजे, मूर्ख का तू संग।
ज्ञानानन्द विष सदा ही, ज्यों व्यापे भूजंग।।

भजन (261)

साधो भाई मूर्ख माने नहीं।
अपना मान बड़ाई के खातिर, महापुरुषों से गुराई।।टेर।।
उल्टा सुल्टा अर्थ करे है, पढ़ाई रोब दिखाई।
अनुभव का अर्थ नहीं जाने, आत्म किन विद पाई।।1।।
अर्थ पंहुचे तो शब्द जाल बतावे, मन करे गुमराई।
आपकी न सूझे औरां से न समझे, अभिमान मन माई।।2।।
ग्रहस्थ त्याग राग द्वैष में, भ्रम रह्यो भव माहिं।
आत्म दृष्टि मिली नहीं है, झूठा गुरु बणाई।।3।।
पढ़े लिखे भी मुर्ख अज्ञानी, सांचा सद्गुरु नहीं पाई।
ज्ञानानन्द अभी समझ, समय हाथ नहीं आई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—: अन्य :—

दोहा (262)

संत शरण में मेवा, रहे न दु:ख लवलेश।
ज्ञानानन्द सेवा से, पावे पद निर्लेश।।

(संत चेतावनी	राग — मारवाड़ी)

भजन (262)

कर मन सत्पुरुषा की सेवा।
संत सेवा में मेवा ही मेवा दर्शे अलख अभेवा।।टेर।।
सेवा से अन्तःकरण धुल जावे, रहवे न पाप का लेवा।
ज्ञान पात्रता आवे उर में, शुद्ध स्वरूप लिखेवा।।1।।
सेवा से जनकादिक ने, पाया पद अभेवा।
जन्म—मरण रा बंधन कटज्या, मिलज्या मुक्ति मेवा।।2।।
सतगुरु एक ही जगत मांहिने, देवन के पति देवा।
तांकी कृपा से अंधा देखे, पंगु पहाड़ लंगेवा।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु बोले, महापुरुष कष्ट हरेवा।
ज्ञानानन्द शरण गियां से, सर्व काज सरेवा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (263)

संत शरण के माहिने, पावे आदु धाम।
ज्ञानानन्द कर्म कटे, पावे साक्षी श्याम।।

(संत चेतावनी	राग — मारवाड़ी)

भजन (263)

ओ सुणले संता को उपदेश, सुणले संता को उपदेश।
थारो मिटज्या कर्म क्लेश, ज्यांसे पद पावे निर्लेश।।टेर।।
साधन चार ज्ञान का धारो, मिटज्या मल विक्षेप अंधियारो।
दर्शन लागे आत्म प्यारो, ज्यों का त्यों हमेश।।1।।
दर्शन लागे आत्मराम, पूर्ण हो जावे सब काम।
पाकर के तू निज धाम, ज्यां नाहिं शेष—अशेष।।2।।
आनन्द जीवन मुक्ति वो पावे, अनुदु:खों से छुटकारा पावे।
लख चौरासी में कबहूं न जावे, पंहुच्या पाछे निज देश।।3।।
मिटज्या जन्म और मरणा, समासम संतो का करना।
ज्ञानानन्द का मानो कहणा, यो पावे आत्म अखिलेश।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (264)

शीलू संतोष गरीबी, अखण्ड ज्ञान विचार।
ज्ञानानन्द संतो पे, बार–बार बलिहार।।

(संत चेतावनी राग – मारवाड़ी)

भजन (264)

सोई संत म्हारे मन भावे, जो आत्म ज्ञान करावे।।टेर।।
भिन्न–भिन्न आत्म अनात्म कर, लक्ष्य आत्म ठहरावे।
जन्म–मरण का बन्धन काटे, फिर भव में नहीं आवे।।1।।
शील संतोष हिवड़ा में राखे, तृष्णा सकल मिटावे।
वेद सम्मत वाणी बोले, सारो भ्रम हटावे।।2।।
कुमार्ग में पग नहीं देवे, सत मार्ग चलावे।
सर्व अनर्थ की करे निवृति, परमानन्द परखावे।।3।।
ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय संत को, ज्ञानानन्द शीश झुकावे।
पार ब्रह्म से देवे मेला, भव सागर तर जावे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (265)

साधो भाई सो पद है सुखदाई।
जिन पद मांहि काल न व्यापे, सुख–दुख परे रहाई।।टेर।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति नाहिं, तुरिया अतीत कहाई।
शुभ–अशुभ दोनों नाहिं, निर्गुण अटल गुसांई।।1।।
चेतन अमल अगोचर, गुण गोचर में नाहिं।
नित्य निर्वाणी सत् स्वाभाविक, ज्यों का त्यों थिरथाई।।2।।
देश काल वस्तु ना पंहुचे, व्यापक दशों दिशाई।
सकल पसारा चेतन का है, गुरु मुख ज्ञानी लौ लाई।।3।।
सत्यानन्द जी सतगुरु मिल गया, असली सेन लखाई।
ज्ञानानन्द शरण गुरु के, सहज परम पद पाई।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: सतगुरु भगवान की आरती ::—

ओम जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु जय सद्गुरु स्वामी।
जड़—चेतन का मालिक, घट अन्तर्यामी।।टेर।।
तन मन है सब निर्मल, निर्मल गुरुवाणी।
सुनत परम सुख ऊपजे, मिटज्या चारों खानी।।1।।
ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मवेता, तुम सबके दाता।
भव बंधन मम काटो, चरण शरण लेता।।2।।
दुख दरिद्र नहीं आवे, जीवन मुक्ति देवे।
सत्संग भक्ति देके, अवगुण हर लेवे।।3।।
सतगुरु सम देवा नहीं, देवन पति देवा।
काल कर्म भव व्याधि, पल में हर लेवा।।4।।
जो कुछ है यहां मेरा, सब कुछ है तेरा।
तुम हो सो ही मैं हूं, मैं हूं सो ही तुम हो, मेटो भव फेरा।।5।।
सतगुरु स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
ज्ञानानन्द शरणागत, अमरापुर पावे।।6।।

ॐ सोऽहम् ॐ

गुरु महाराज के वरिष्ठ शिष्य
संत श्री रामानन्द (रामनारायण) जी
निवासी : नयागांव पीपलू (टोंक)

ॐ सोऽहम् ॐ

गुरु महाराज के वरिष्ठ शिष्य संत श्री रामानन्द (रामनारायण) जी की वाणियां

दोहा (1)

रामानन्द की विनती, सुणियो गुरु दयाल।
अज्ञान अंधेरा मेट के, ज्ञान सूरज द्यो जाल।।

भजन (1)

सद्गुरु जी कृपा कीज्यो, मन चरणा में रख लीज्यो।।टेर।।
गुरु मैं हूं मूढ़ अज्ञानी, थ्ये घट–घट का हो जाणी।
अवगुण पर चित्त मत दीज्यो, मन चरणा में रख लीज्यो।।1।।
काम क्रोध मद है भारी, मति हर लिया है म्हारी।
इन सबको दूरा कीज्यो, मन चरणा में रख लीज्यो।।2।।
मल विक्षेप मण्डराया, आवरण हृदय छाया।
जीव ब्रह्म को मेलो कीज्यो, मन चरणा में रख लीज्यो।।3।।
रामानन्द की यही अर्जी, सद्गुरु जी थ्ये करद्यो मर्जी।
म्हारो कर्म भ्रम मिटाज्यो, मन चरणा में रख लीज्यो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (2)

सद्गुरु देवे ज्ञान सदा सुखदायी, सदा सुखदायी–2
फिर आवे नहीं भव के माहिं, परम पद पायी।।टेर।।
पूर्ण ब्रह्म व्यापक जग माहिं, व्यापक जग माहिं।
फिर भी सबको वो, चौड़े दीखे नाहिं।।1।।
मल विक्षेप आवरण हृदय माहिं, हृदय माहिं।
इस विधि से सबको, दर्शन होवे उसका नाहिं।।2।।
तन मन धन अर्पण करो चरणा माहिं, चरणा माहिं।
जब प्रसन्न होवे गुरुदेव, पलभर माहिं।।3।।
जब दर्शे आत्मराम सकल घट माहिं, सकल घट मांहि।
मिटज्या तीनू ताप, मुक्त हो जाहिं।।4।।
ये विधि है राम मिलन की मेरा भाई, मिलन की भाई।
यूं रामानन्द कहे, गुरु चरण सुखदायी।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (3)

तू पूर्ण परमात्मा, तू ही सच्चिदानन्द।
जन्म–मरण तुझमें नहीं, नहीं मोक्ष नहीं बंध।।

भजन (3)

तू अपने आप को जान, थारी मिटज्या खींचातान।।टेर।।

तू नहीं सुक्ष्म स्थूला, इसमें अपने आप को भूला।
इनमें अविद्या मोटी हाण, थारी मिटज्या खींचातान।।1।।

साक्षी स्वरूप है तेरा, नहीं दूरा नहीं नेरा।
ऐसे रूप पिछान, थारी मिटज्या खींचातान।।2।।

तू पूर्ण ब्रह्म है भाई, श्रुति में साख बतायी।
इसमें सामवेद प्रमाण, थारी मिटज्या खींचातान।।3।।

रामानन्द समझ ले प्यारा, सत् चित् आनन्द रूप तुम्हारा।
तू सदा मोक्ष निर्वाण, थारी मिटज्या खींचातान।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (4)

तीर्थ यात्रा डोल के, फिर–फिर गोता खायी।
जाने नहीं निज आपको, मुक्ति कैसे पायी।।

भजन (4)

क्यूं भटक रयो भव माहिं, तेरो आत्मराम घट माहिं।।टेर।।

कोई मन्दिर–मस्जिद में जावे, विरथा उम्र बितावे।
फिर–फिर गोत्या खावे, मूर्त मुख से बोले नाहिं।।1।।

तीर्थ यात्रा डोले, और तन का हाड़ झकोले।
वहां ईश्वर नहीं बोले, वांको अन्तकरण शुद्ध नाहिं।।2।।

वन में तपस्या कीना, देह सूखी कर दीना।
वहां आत्म नाहिं चीना, अहम् भाव घट माहिं।।3।।

जो सदगुरु शरण में जावे, तब आत्म ज्ञान को पावे।
सहज में भव तिर जावे, रामानन्द कथ गाहीं।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (5)

सदगुरु देव ज्ञानी मिल्या, किया भ्रम सब दूर।
पांच भ्रांति मेटकर, लिखा दिया निज नूर।।

भजन (5)

सद्गुरु मेरा देव मिल गया त्यागी, मिल गया त्यागी।
मोहे दीना आत्मज्ञान, अविद्या भागी।।टेर।।
गुरुदेव का चरणा से प्रीति लागी, प्रीति लागी।
कियो सत्संग में सीर, विवेक वृत्ति जागी।।1।।
वैराग्य की सार समझ में आगी, समझ में आगी।
षट् संपत्ति लियो धार मुमुक्षता छागी।।2।।
श्रवण मनन को साध निधिध्यासन वृत्ति लागी, वृत्ति लागी।
तत् त्वं शोधन साध, आत्म को पागी।।3।।
गुरु ज्ञानानन्द जी की बात मेरे मन भागी, मेरे मन भागी।
किया रामानन्द पर महर, भया अनुरागी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (6)

बर्फ जल से ही होत है, बर्फ ही जल होय।
रामा ऐसे सगुण निर्गण, जाण देखो सब कोय।।

भजन (6)

निर्गुण सगुण को समझे तो, तोहे खोल बताऊं लेख।।टेर।।
निर्गुण पारब्रह्म को समझो, सगुण माया को देख।
दोनों मिलकर रचि सृष्टि, ये वेदों का लेख।।1।।
गुणा सहित को सगुण समझो, निर्गुण गुणों से छेक।
निर्गुण सगुण जाणे नाहिं, झूठी करता टेक।।2।।
लक्ष्य पार ब्रह्म को समझो, वाच्य माया को भेख।
वाच्य लक्ष्य जब जाणसी, जाग्रत होवे विवेक।।3।।
वाच्य लक्ष्य जो कोई जाणे, उसको ज्ञानी देख।
जन्म–मरण में आवे नाहिं, कोटि में दीखे एक।।4।।
निर्गुण सगुण दो नाहिं है, व्यापक सबमें एक।
रामानन्द गुरु कृपा से, मिटे कर्म की रेख।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (7)

आत्म ज्ञान पायी के, लियो फकीरी धार।
रामा गुरु कृपा से, मिटग्या भ्रम विकार।।

भजन (7)

फकीरी लीना हमने धार।
सद्गुरु वचन धार हृदय में, सहज हुआ भव पार।।टेर।।
पांचो हथियार जुगति से लेकर, हुआ बहुत होशियार।
पंच विषयों से करी लड़ाई, बाजी घणी तलवार।।1।।
ऊंट अहंकार को बस किया, गल में धीरज धार।
भगवत् बैलचो घाल नाक में, कर लीना ललकार।।2।।
मोह मगर को खत्म किया, तृष्णा हुई किनार।
वैराग्य का बाण चलाकर, मन को कीना छार।।3।।
जीव जगत का छेदन करिया, ले सुमिरन की सार।
ज्ञान गोला चालन लाग्या, यम भाग्यो घबरार।।4।।
ज्ञानानन्द जी सद्गुरु मिलग्या, दिया शब्द का सार।
रामानन्द गुरु कृपा से, पायो राम आधार।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (8)

ईश्वर से प्रीत करो, छोड़ विषयों की आस।
रामानन्द नहीं तो रे, बणसी काल का गास।।

भजन (8)

मार्ग झीणा रे।
भक्ति करे जग में, संत प्रवीणा रे।।टेर।।
अत्यंत प्रेम ईश्वर से होवे, जैसे जल में मीना रे।
जल से जब भी बाहर काढदे, प्राण तज दीना रे।।1।।
एक मास जल मीवे पपीया, ग्यारह मास नहीं पीना रे।
जैसे बूंद पड़े धरणी पर, हरगिज भी नहीं लीना रे।।2।।
भजत–भजत तद्रूप होवे, भक्त भगवत नहीं भिन्ना रे।
अहम् भाव को दूर हटाके, सदा राम रस पीना रे।।3।।
भक्ति बिन भगवत नहीं मिलसी, कोटी जतन कर लीना रे।
रामानन्द गुरु चरणा में, निश्चय कीना रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (9)

मानव तन दुर्लभ है, भक्ति करले भाई।
रामानन्द भक्ति से, पल में मुक्त हो जाई।।

भजन (9)

भक्ति करले रे।

तू राम नाम की, डोर पकड़ ले रे।।टेर।।
अत्यन्त प्रेम ईश्वर से प्यारा, इनको निश्चय कर ले रे।
ये भक्ति का स्वरूप बताऊं, हृदय धर ले रे।।1।।
सत्संग है भक्ति का साधन, नित उठ सत्संग कर ले रे।
मान बढ़ाई ईर्ष्या, इनको तज दे रे।।2।।
अर्द्ध वैराग्य अधिकारी है, साधन संपन्न कर ले रे।
चंऊ साधन को धारण कर, महावाक्य सुण ले रे।।3।।
ज्ञान वैराग्य फल भक्ति का, त्रिगुण ताप मिटा ले रे।
रामानन्द गुरु शरण में, मुक्ति पा ले रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (10)

संत बड़ा संसार में, मस्त रहवे स्वरूप।
कर्म भ्रम को मार के, बना भूपन का भूप।।

भजन (10)

संत महिमा भारी जगत में, संत महिमा भारी रे।।टेर।।
संत जगत के माहिं रहता, क्रिया करे इकसारी रे।
जल तत्व में फर्क नहीं है, चाहे मीठा चाहे खारी रे।।1।।
जैसे नाग नागों के माहिं, सबसे बड़ा मणिधारी रे।
वैसे ही ब्रह्म ज्ञानी जगत में, सबसे बड़ा तपधारी रे।।2।।
कोई कर्म काण्ड को करता, कोई भक्ति उर धारी रे।
ब्रह्मज्ञानी देखो आत्मा, चाहे नर हो नारी रे।।3।।
दूर्वासा सब मिठाई खाकर, फिल भी अल्पहारी रे।
गोपियों संग रास रचायो, कृष्ण ब्रह्मचारी रे।।4।।
क्या कहूं संतो की महिमा, लिखन में नहीं आरी रे।
रामानन्द उन संतो के, चरणों में बलिहारी रे।।5।।

गुरु महाराज के शिष्य
भूमानन्द जी (गिर्राज)
निवासी : लोहरवाड़ा, पीपलू (टोंक)

गुरु महाराज के शिष्य भूमानन्दजी (गिर्राज) की वाणियां

भजन (1)

सतगुरु जी म्हाने ऐसो ज्ञान दियो।
जन्म मरण का फन्द छुडाया, जीवन मुक्त कीयो।।टेर।।
तत्त्वमसि महावाक्य सुनाया, वाच्य लक्ष्य लियो।
भाग–त्याग करि लक्षणा, कुटस्थ ब्रह्म थिर थयो।।1।।
दृढ़ अपरोक्ष अनुभव कीनो, प्रमेय प्रमाण संशय गियो।
विपरीत भावना दूरी होगी, ब्रह्म स्वरूप रियो।।2।।
सर्व दुःखा की होगी निवृत्ति, तब परमानन्द भयो।
विदेह मोक्ष स्वतः ही होवे, नही चौरासी गियो।।3।।
ज्ञानानन्द जी सतगुरु मिलग्या, आत्म ज्ञान दियो।
भूमानन्द ब्रह्मस्वरूप है, ज्यों का त्यों निरख लियो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (2)

मैंने ऐसा सदगुरु पाया सा, किया भ्रम सब दूर।
दूतिया दूर हटायी म्हारी, परखाया आत्म नूर।।टेर।।
अनुबन्धा की दीनी चाबी, भिन्न–भिन्न कर समझादी।
अधिकारी विषय संबंधी, प्रयोजन मोक्ष विचार।।1।।
गुरु महावाक्य सुणाया, वाच्य लक्ष्य अर्थ बताया।
माया अविद्या रा फन्द छुडाया, किया जीव ब्रह्म इकसार।।2।।
सच्चिदानन्द रूप दिखाया, देश काल के पार बताया।
जीवन मोक्ष पल में पाया, विदेह स्वतः हुई लार।।3।।
गुरु ज्ञानानन्द जी पाया, म्हारी अविद्या दूर भगाया।
भूमानन्द फिर थिरथाया, सारा भेद निवार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (3)

शब्द सुनाकर भ्रम मिटाया, किया आत्म दीदारा।
साधो भाई गुरु मिलिया दातारा।।टेर।।
सत् असत् का विवेक कराया, आत्म ब्रह्म एक समझाया।
ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या, दिया शब्द तत्सारा।।1।।
पांच कोष चार अवस्था, तीन शरीर जणाया।
भेद भ्रान्ति अध्यास मिटग्या, अनुभव किया विचारा।।2।।
सात भूमिका ज्ञान की, भिन्न–भिन्न कर बताया।
पंच कोश अरु तीन ताप, दश दोष दिया निवारा।।3।।
ज्ञानानन्द जी सतगुरु मिलग्या, भाग पूरबला पाया।
भूमानन्द गुरु चरणों में, जीवन मुक्ति पठाया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (4)

साधो भाई सदगुरु पर उपकारा।
अधमी जीवा ने तारण आया, लिया नित अवतारा।।टेर।।
भूल्या भट्क्या जीव अनादि, किना ज्ञान विचारा।
अधिकारी हो सो उभरिया, डूबा कही मझधारा।।1।।
सतगुरु है अनन्त अनादि, निर्गुण ब्रह्म आधारा।
सब जीवन के हित के ताहिं, सगुण रूप ये धारा।।2।।
महावाक्य सतगुरु सुनावे, देवे ज्ञान अपारा।
जिनके लागे सो धारण करे, हो जावे भव पारा।।3।।
ज्ञानानन्द जी सदगुरु करले, करता भव से किनारा।
भूमानन्द तू चेतन होजा, मिलज्या मुक्ति द्वारा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (5)

मोक्ष धाम सदगुरु है, और न कोई धाम।
भूमानन्द सेवा करो, सहज हो कल्याण।।

भजन (5)

सदगुरु देव दयालू पाया, देव दयालू पाया ओ।
देकर हंसा रंग अपना, ताप मिटाया ओ।।टेर।।
काम क्रोध म्हारा दूर भगाया, समता शील कराया ओ।
मोह ममता का फन्द काटिया, राग–द्वैष हराया ओ।।1।।
विवेक वैराग्य धारण कीना, षट् संपत्ति मुमुक्षता लाया ओ।
श्रवण मनन की युक्ति देकर, निधिध्यासन ध्यान लगाया ओ।।2।।
तत्त्वमसि का अर्थ बताया, वाच्य लक्ष्य समझाया ओ।
जीव भाव का त्याग कराकर, ब्रह्म स्वरूप बणाया ओ।।3।।
ज्ञानानन्द जी सतगुरु मिलग्या, सारा भेद बिलाया ओ।
भूमानन्द शरण सद्गुरु की, दोनों फल खाया ओ।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (6)

सत्संग है मुक्ति द्वार, जन्म सुधारे तो।।टेर।।
सत्संग से सुधरे पापी, नही तो का वासी।
हो ब्रह्म निष्ठ विद्वान, जन्म सुधारे तो........।।1।।
दश दोषा न दूर हटावो, दश धर्म का अंग अपनाओ।
दूर्व्यसन दूर करो तमाम, जन्म सुधारे तो........।।2।।
संता शरणा हरदम रहणा, आठो पहर ज्यांरी सेवा करणा।
ज्यांसे सहज होवे कल्याण, जन्म सुधारे तो.......।।3।।
ज्ञानानन्द सदगुरु का हेला, सत्संगत मत भूले गेला।
भूमानन्द समझ धर ध्यान, जन्म सुधारे तो........।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (7)

मैं हूं सदा साक्षी इकसारा।
जड़ चेतन में मेरी सत्ता, हूं सबका आधारा।।टेर।।
पांच अंश मिल सृष्टि भांसू, नाम रूप संसारा।
विवृत्त रूप मैं सब हूं, ज्यों का त्यों निर्विकारा।।1।।
अनिर्वचनीय खेल हमारा, कहन सुनन से न्यारा।
अनुभव चित्त प्रकाश तादात्मय, विरला करत विचारा।।2।।
उत्पत्ति स्थिति प्रलय लहरी, सच्चिदानन्द रूप हमारा।
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिगुण, मैं साक्षी सर्व आधारा।।3।।
सात द्वीप नो खण्ड मांहि, पिण्ड ब्रह्माण्ड से पारा।
भूमानन्द मैं एक रस हूं, अपने आप दीदारा।।4।।

गुरु महाराज के शिष्य
विद्यानन्द जी (खुशीराम)
निवासी : नयागांव पीपलू (टोंक)

ॐ सोऽहम् ॐ

गुरु महाराज के शिष्य विद्यानन्द जी (खुशीराम) की वाणियां

भजन (1)

सुणले रे मनवा, घट–घट राम आधार।
एक राम का सकल पसारा, जाणे जाननहार।।टेर।।
एक ही माटी के बने खिलोने, एक ही कुम्भककार।
भिन्न–भिन्न दीखे मगर एक ही, जाणे विरला सार।।1।।
एक ही कंचन के बणे आभूषण, एक ही स्वर्णकार।
नाम रूप की है रे भिन्नता, स्वर्ण तत्व इकसार।।2।।
एक की सूत के बने है कपड़े, एक ही दर्जनकार।
एक ही ताना एक ही बाना, सूत तत्व विस्तार।।3।।
ऐसे ही स्थूल चराचर, चेतन का चमकार।
विद्यानन्द कहे एक निर्गुण, निराकार ही साकार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (2)

आपकी कृपा से गुरुवर, मैं मस्ताना हो गया।।टेर।।
सत् स्वरूप है आपका रे, तीनों काल में छा रिया।
ज्यूं का त्यूं इकसार है रे, एक रस थ्ये हो रिया।।1।।
चेतन रूप है आपका, सबको आप ही जान रिया।
ऐसी झीणी मंजिल रे, साधन सारा थकत रिया।।2।।
निराकार स्वरूप आपका रे, साकार थ्ये हो रिया।
नाम रूप को धार के रे, कण–कण माहिं दीख रिया।।3।।
ज्ञानानन्द गुरु को पाके, दुख रा नहीं लवलेश रिया।
विद्यानन्द आनन्द महल में, अपने में आप समारिया।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (3)

आत्म को गुरु से पायो रे, राम को सदगुरु से पायो।
जन्म मरण को लफड़ो मिटग्यो, यम को डाण छुडायो।।टेर।।
जन्म जन्म के शुभ कर्मा से, सत्संग को पायो।
सत्संग से सतगुरु को पायो, सारो भ्रम भगायो।।1।।
मल विक्षेप को दूर हटाके, विवेक वैराग्य करायो।
साधन सम्पन्न करके, म्हाने महावाक्य सुणायो।।2।।
तत्त्वमसि का शोधन करके, वाच्य लक्ष्य समझायो।
वाच्यार्थ से परे ले जाकर, लक्ष्य में ठहरायो।।3।।
ज्ञानानन्द जी सदगुरु मिलग्या, निज राज बतायो।
विद्यानन्द गुरु कृपा से, सत् में जाय समायो।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (4)

सद्‌गुरुजी मिलग्या रे, सद्‌गुरुजी मिलग्या रे।
म्हारे आनन्द होग्या रे, म्हारे आनन्द होग्या रे।।टेर।।
निष्काम बतायो रे, निष्काम बतायो रे।
मल दौष मिटायो रे चित्त शुद्ध कियो रे।।1।।
उपासना बतायो रे, उपासना बतायो रे।
विक्षेप मिटायो रे, चित्त चंचल रोक्यो रे।।2।।
महावाक्य सुणायो रे, महावाक्य सुणायो रे।
लक्ष्य समझायो रे, म्हारो भ्रम मिटायो रे।।3।।
जीवन मुक्ति पायो रे, जीवन मुक्ति पायो रे।
म्हाने ज्ञान बतायो रे, जग झूठ लिखायो रे।।4।।
गुरु ज्ञानानन्द पायो रे, ज्ञानानन्द जी पायो रे।
विद्यानन्द गायो रे, स्वरूप लिखायो रे।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भजन (5)

असली मौज फकीरी में।
नही रे मौज ग्रहस्थी में, नहीं रे मौज विरक्ति में।।टेर।।
कभी तो रहवे भाई महल मालिया–2
कभी तो गोबर गारा में, असली मौज फकीरी में।।1।।
कभी तो जावे भाई हुलस–जुलस में–2
कभी तो दौड़े अकेला में, असली मौज फकीरी में।।2।।
कभी तो खावे भाई अमृत भोजन–2
कभी तो रोटी कांदा में, असली मौज फकीरी में।।3।।
कभी तो होवे भाई मान बड़ाई–2
कभी तो लोक हंसाई में, असली मौज फकीरी में।।4।।
तभी तो जग में बड़ो फकीरो–2
विद्यानन्द चूको न ग्वांरा में, असली मौज फकीरी में।।5।।

गुरु महाराज के शिष्य
मनसा राम जी
निवासी : जैतपुरा, मित्रपुरा (सवाई–माधोपुर)

गुरु महाराज के शिष्य मनसा राम जी की वाणियां

दोहा (1)

हे गणपत गणनायका, सकल जगत आधार।
''मनसा'' सगुण स्वरुप में, आन लगावो पार।।

भजन (1)

दीनदयाला, हो मतवाला, गणपत जी गणराजा।
कर जोड़त मैं विनती करता, सकल सुधारो काजा।।टेर।।
जे नर कोई कारज करता, औरां पहली तोय मनाता।
सकल मनोरथ सिद्धि दाता, दीनों के रखवाला।।1।।
ग गणपत जी सिद्ध विनायक, हो बुद्धि वरदाता।
महिमा थारी कांई बखानूं, कोई राग नहीं आता।।2।।
सगुण रूप में हो गौरी सुत, शिव शंकर के प्यारा।
निर्गुण रूप अलेप सदा ही, कण–कण में ठहराता।।3।।
आयो ''मनसा'' शरण तुम्हारी, हालत म्हारी दीन भिखारी।
लजियो रखियो हो दातारी, भक्तों के सिरताजा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (2)

अधम उधारण आप हो, मोहि लगावो पार।
''मनसा'' दीन गरीब री, लाज बचावो आर।।

भजन (2)

या सतगुरु से अरज हमारी, भव से पार लगाणी रे।
जुगां जुगां से फिरया भटकता, अबके राहि बताणी रे।।टेर।।
जीव पड्यो जंजाल नाव की, डूबण री तैयारी रे।
आप पकड़ झट पार करो, पतवार खड़ी बैचारी रे।।1।।
तीरथ मूरत घणा डोलिया, नांहि सुख री बारी रे।
अबतो राहि बताओ गुरुजी, डोलत डोलत हारी रे।।2।।
तम अंधियारो घणो दुखारो, करो ऊजालो लारी रे।
मेटो रोग बहु दुःख पायो, आस लगायो थारी रे।।3।।
नाम ध्यान री शीतल झारी, पावो प्यासा भारी रे।
''मनसा'' ताप तड़पिया भारी, अबके लेवो ऊबारी रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (3)

बेल सदा हरि धर्म की, धर्म राम का मूल।
प्रेम नीर पाता रहो, ''मनसा'' मिटसी सूल।।

भजन (3)

करो धर्म की जाण, आनन्द आवेला जी आवेला।।टेर।।
धर्म शब्द धारण कर लेणो, या नर जीवन फर्ज निभाणो।
धर ले अब तू ध्यान, आनन्द आवेला जी आवेला।।1।।
सत्य वचन से धर्म उपजता, दया दान से नित–नित बढ़ता।
हो पांपा री हाण, आनन्द आवेला जी आवेला।।2।।
क्षमा संग से धर्म ठहरावे, क्रोध करण से तुरत् नशावे।
सब संतो का प्रमाण, आनन्द आवेला जी आवेला।।3।।
ज्ञानानन्द गुरु समझावे, मुरख ''मनसा'' समझ क्यूं नहीं लावे।
कर जीवन का कल्याण, आनन्द आवेला जी आवेला।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (4)

बैठ शरण गुरुदेव की, धर्म अंग ले धार।
''मनसा'' जब ये दृढ़ हो, फेर समझिये सार।।

भजन (4)

धर्म ने धारले रे.........,बीरा नहीं, जीवन ऐड़ो जाय।।टेर।।

क्षमा अहिंसा ने धारले रे......बीरा रे, दया वचन सत् जाण।

दान तप संग वाणी मधुर हो, शील संतोषा ताण।।1।।

तृष्णा त्याग अंग दस पूरा रे.....बीरा रे, धार धर्म फल पाय।

सुंदर देही, उत्तम भोंगा, नृप सम जीवन होय।।2।।

अंग धर्म का दस जाण जे रे.....बीरा रे, धारण कर शुद्ध होय।

अन्तःशुद्ध से ज्ञान प्रगटता, मुक्ति रा फल पाय।।3।।

मूरख ''मनसा'' चेतले रे.....बीरा रे, ज्ञानानन्द चेताय।

मानूष देही ऐड़ी जावे, धर्म राख भज लेय।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (5)

सद्गुरु कहणा चालणा, होवे भव से पार।
''मनसा'' तब ही जाणजे, ऐक राम आधार।।

भजन (5)

मूरख मनमानी मत कर रे, मान भाई सतगुरु का कहणा।।टेर।।

पहली मानो जाण जगत में, सतगुरु ईश्वर एक।

भेद विचारे खड़ा किनारे, झट भवसागर बहणा।।1।।

तन से, मन से, धन से सेवा, करता रीज्यो रोज।

कर विश्वासा परख पहन ले, गुरु वचना रा गहणा।।2।।

गुरु शब्द से सेन समझ फिर, नजर राम पर टेक।

गहरी कर कर देखले, हो सत् पद रा निरणा।।3।।

"मनसा" मन से जीवत जीवत, आप्या देवे खोय।

सीख गुरां की मानले रे, बैठ गुरु शरणा।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (6)

धन धन है गुरुदेव को, दी अमृत री घूंट।
पिवत ''मनसा'' अमर भया, भव बंधन सूं छूट।।

भजन (6)

मैं गुरु शरण में बैठ, ब्रह्म संग प्रीत लगायो जी।।टेर।।
युगां युगां से रही भरमना, सहज ही खोल बतायो।
काम क्रोध से जीत बतायी, तब मन हरसायो जी।।1।।
अरे मोमे तोमे वामे सबमें, एक राम दिखलायो।
जो घट माहिं सांई विराजे, वांको भेद बतायो जी।।2।।
भेद जाण म निर्मल पायो, ज्यूं गंगा में नहायो।
दुतिया दूर अब मैं ही मैं हूं, अनुभव आयो जी।।3।।
मैं ज्ञानानन्द जी री शरण गयो, तब प्रीतम पायो जी।
"मनसा" अब आनन्द लहर, परमानन्द पायो जी।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (7)

सद्गुरु सांचा देव ने, एसा किया उपकार।
निरख्या ''मनसा'' नूर, अब घट–घट म दिदार।।

भजन (7)

मैं तो राम नाम का सार, गुरु से पा लीना।।टेर।।
राम नाम की बेलड़ी रे, ज्यांरा गुरु लगाया बीज
प्रेम नीर से सींची ऐसी, अब छायी अपरम्पार।।1।।
मैं की ऐसी जेवड़ी, ज्यांम उलझ–उलझ झकझौर।
गुरु ज्ञान का फरसा लेकर, काट्या दे दे धार।।2।।
आठो पहर अमी रस पीके, मति भयी मतवाली।
ऐसा नैण नशा हो आया, घट–घट में दीदार।।3।।
गुरु ज्ञानानन्द जी सेन बताया, ''मनसा'' लीनी धार।
वो अविनाशी है घटवासी, इधर–उधर इकसार।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (8)

अगर मिले तू राम से, कर सत्संग सु प्रीत।
''मनसा'' क्यूं तू उदास ह, उठ समझ गुरु स रीत।।

भजन (8)

अरे हंसला करो विचार सार सत्संग में पाणा रे।
सार सत्संग में पाणा रे।।टेर।।
उण मंजिल में फेर पंहुचेला, पहली धार संगत रा गेला।
करले मूरख विचार संगत बिन, नाहिं ठिकाणा रे।।1।।
जैसे साढ़ चौमासा लगता, पड़िया बीज धरणी में ऊपजता।
ऐसे आत्म का बीज संगत से, झट ऊपजाणा रे।।2।।
सत्संगत से संशय जाता, फिर आत्म का भाव ठहरता।
आत्म अनात्म भेद परख तू, निज में आणा रे।।3।।
सुणले तू सत्संग री बातां, ''मनसा'' घट में दिन नहीं राता।
हो घट में प्रकाश अंध का, होवे हाणा रे।।4।।

ॐ सोऽहम् ॐ

दोहा (9)

प्रीत लगावो राम से, क्यूं भूल्यो किरतार।
''मनसा'' तू भज लीजियो, हो जावे भव पार।।

भजन (9)

अरे तू प्रीत राम से करले रे, तिर जावे पल माहिं।।टेर।।
प्रीत करी ची सबरी नारी, ऊंठ्या बोर खिलायी प्यारी।।
अरे तू भी प्रेम री माला जपले रे, तिर जावे पल माहिं।।1।।
प्रीत करी ची मीरा बाई, जहर रा प्याला पी गई भाई।
तू भी राम अमी रस पी ले रे, तिर जावे पल माहिं।।2।।
प्रीत करी ची करमा बाई, आर श्याम खिचड़लो खाई।
तू भी प्रेम रो भोग लगाले रे, तिर जावे पल माहिं।।3।।
प्रीत कर्यो चो नरसी प्यारो, भात भर्यो सांवरियो न्यारो।
तू भी नाम री गठड़ी धरले रे, तिर जावे पल माहिं।।4।।
प्रीत से सुरतां ह्वे दीवानी, गावे "मनसा" सुण रे प्राणी।।
तू भी राम रा गुण सुण गाले रे, तिर जावे पल माहिं।।5।।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: संध्या श्रद्धासुमन ::—

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवंभवानी सहितं नमामि।।
मंदार माला कलितालकायै कपालमालंगित शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।
शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्।
सुत्र भाश्य कृतौवन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः।।
ध्यान मूलं गुरुर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरुर्पदम्।
मन्त्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरुर्कृपा।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

वंदनम् सद्गुरुदेव वंदनम्
वंदनम् श्री सत्यानन्दम्
वंदनम् श्री ज्ञानानन्दम्
नमामि सर्व साधून्
तस्मै श्री गुरुवे नमः

ॐ सोऽहम् ॐ

मैं अपराधी जनम से, अवगुण किया हजार।
आप दया निधि कल्पतरु, मेटो विषय विकार।।

मति की कोई गति नहीं, नहीं कोई ज्ञान विचार।
भव जल गोता खायी के, अब आया तेरे द्वार।।

सद्गुरु बिन संसार में, भला किसी का नाहिं।
गुरु बिन जाने ना आप, गुरु बिन भय न जाहि।।
गुरु बिन भय न जाहि, गुरु बिन मिले न किनारा।
आन देव को त्याग, सत्गुरु करले प्यारा।।
सुगरा मानुष समझिये, नुगरा समझे कांई।
ज्ञानानन्द गुरु बिन, भला है किसी का नाहिं।।

ॐ सोऽहम् ॐ

सतगुरु भगवान की आरती

ओम जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु जय सद्गुरु स्वामी।
जड़–चेतन का मालिक, घट अन्तर्यामी।।टेर।।
तन मन है सब निर्मल, निर्मल गुरुवाणी।
सुनत परम सुख ऊपजे, मिटज्या चारों खानी।।1।।
ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मवेता, तुम सबके दाता।
भव बंधन मम काटो, चरण शरण लेता।।2।।
दुख दरिद्र नहीं आवे, जीवन मुक्ति देवे।
सत्संग भक्ति देके, अवगुण हर लेवे।।3।।
सतगुरु सम देवा नहीं, देवन पति देवा।
काल कर्म भव व्याधि, पल में हर लेवा।।4।।
जो कुछ है यहां मेरा, सब कुछ है तेरा।
तुम हो सो ही मैं हूं, मैं हूं सो ही तुम हो, मेटो भव फेरा।।5।।
सतगुरु स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
ज्ञानानन्द शरणागत, अमरापुर पावे।।6।।

ॐ सोऽहम् ॐ

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते।
नाम स्मरणाद अन्यं उपायं, नहि पश्यामो भरतरणे।।

श्री गुरु अष्टकम्

सुरुप शरीर वचना सुत, धन सुमेरू समान।
गुरु चरण प्रेम नही तो, सब कुछ थोथा जान।।1।।
चारों दिशा में यश हो, वैभव होय अपार।
प्रेम नहीं गुरु चरण से, वह यश भी बेकार।।2।।
धन जन माया मोखली, प्रारब्ध से हिपाय।
भक्ति नहीं गुरु चरण की, तत् प्रारब्ध की थाय।।3।।
वेद षट्शास्त्र याद हो, कविता करे विस्तार।
लगन नहीं गुरु चरण में तो, सब कुछ बेकार।।4।।
महिमा बड़ी संसार में, पूज्य देश परदेश।
प्रेम नही लगे गुरु चरण से, झूठा यह सभी भेष।।5।।
भूमण्डल के राजा भी, पूजे जाके चरण।
मन नहीं लगे गुरु चरण तो, जीते जी मरण।।6।।
घर परिवार छोड़ सभी, करे निरन्तर वास।
आश नहीं गुरु चरण की, तब तक रहे उदास।।7।।
यशो दान प्रताप से, चाले सालो–साल।
प्रिति नहीं गुरु चरण में, तो जीवन कंगाल।।8।।
मणि मुक्तादि रतन सभी, और सकल संसार।
गुरु के श्री चरण बिन, पावे ना मोक्ष द्वार।।9।।
जो राजा यति सन्यासी, सदाचार गृहस्थ।
ज्ञानानन्द गुरु अष्टकम्, दिलावे मोक्ष का पंथ।।10।।

आरती

आरती ब्रह्म निरंजन की, आरती ब्रह्म निरंजन की।
सदगुरु निर्गुण रूप सदाही, भव दुःख भंजन की।।टेर।।
जड़ चेतन में आप विराजे, लागे नहीं अंजन की।
सबका परम् प्रकाशक देवा, निर्गुण रंजन की।।1।।
ब्रह्मा विष्णु रूप तुम्हारा, शिव सगुण सुरंजन की।
मानव दानव कण कण व्यापक, चौदह भुवनन की।।2।।
भक्तन के हितकारी पाशी, काटे क्रंदन की।
काल कर्म को दूर हटावे, मन घट रंजन की।।3।।
सदगुरु रूप धर ज्ञान प्रगटावे, मोह माया खंजन की।
सद्गुरु साहिब साहिब सदगुरु, भरम मिटे बंधन की।।4।।
ज्ञानानन्द आरती अवगत, संध्या वंदन की।
लख चौरासी का फैरा मिटज्या, हो निरबंधन की।।5।।

अवगुण सब क्षमा करो, दीन गरीबो जान।
ज्ञानानन्द शरणागती, दीज्यो निज पहचान।।
पूजा आरती जानू नहीं, ना सेवा न ध्यान।
ज्ञानानन्द अर्पण सब, आप करो कल्याण।।

हरि ओम सोऽह्म ! हरि ओम सोऽह्म
श्वास श्वास में, हरि ओम सोऽह्म।।

ओम सोऽह्म का कर विचारा।
ये भज उतरो भव से पारा।।
हरि ओम सोऽह्म ! हरि ओम सोऽह्म
श्वास श्वास में, हरि ओम सोऽह्म।।

जे जनगुरु चरण रेनु सिर धरही।
सो जनसकल वैभव बस कही।।
हरि ओम सोऽह्म ! हरि ओम सोऽह्म
श्वास श्वास में, हरि ओम सोऽह्म।।

मन में प्रेम राम सम राखै।
हे प्रसन्न गुरु इम अभिलाखै।।
हरि ओम सोऽह्म ! हरि ओम सोऽह्म
श्वास श्वास में, हरि ओम सोऽह्म।।

दोष दृष्टि सुपने नहिं आने।
हरिहर ब्रह्म गंग रवि जाने।।
हरि ओम सोऽह्म ! हरि ओम सोऽह्म
श्वास श्वास में, हरि ओम सोऽह्म।।

गुरु मूरति को हिय में ध्याना।
धारे जो चाहे कल्याणा।।
हरि ओम सोऽह्म ! हरि ओम सोऽह्म
श्वास श्वास में, हरि ओम सोऽह्म।।

गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो।
राधा रमण हरि गोविन्द बोलो।।

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पुर्ण मुदच्यते
पूर्णष्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

श्रद्धालूओं की सुविधा के लिए

—:: वेदान्त—शब्दकोश ::—

1. अकर्ता

अर्थात् जो किसी कर्म का कर्ता नहीं है।

परिभाषाः— शुद्ध आत्मा कभी किसी कर्म का कर्ता नहीं होता। कर्तृत्व, बुद्धि, मन और अहंकार की उपाधि से प्रतीत होती है।

सरल अर्थ आत्मा कर्मों का करने वाला नहीं है।

2. अभोक्ता

अर्थात् जो किसी कर्म का भोक्ता नहीं होता।

परिभाषाः— आत्मा सुख—दुःख का वास्तविक भोक्ता नहीं है। भोग जीवाभास का धर्म है।

सरल अर्थ आत्मा किसी सुख—दुःख में नहीं बँधता।

3. अद्वैत

परिभाषाः— ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है; जीव—जगत नाम—रूपात्मक मिथ्या हैं।

सरल अर्थ केवल एक ब्रह्म है, दूसरा कोई स्वतंत्र सत्य नहीं।

4. अध्यास

अधि + आस एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप।

परिभाषाः— आत्मा और अनात्मा के परस्पर धर्मों का मिथ्या आरोप ही अध्यास है।

सरल अर्थ जो नहीं है, उसे भूल से वैसा मान लेना; जैसे रस्सी में साँप।

5. अध्यारोप

परिभाषाः— शिक्षण के लिए पहले किसी वस्तु का कल्पित आरोप करना।

उदाहरणः ब्रह्म को जगत का सृष्टिकर्ता कहना।

6. अपवाद

परिभाषाः— बाद में उस आरोप का निषेध कर केवल ब्रह्म का प्रतिपादन करना।

उदाहरणः नेति नेति (बृहदारण्यक उपनिषद्) द्वारा सभी उपाधियों का निषेध।

7. अविद्या

अ + विद्या अर्थात् ज्ञान का अभाव।

परिभाषाः— आत्मस्वरूप का अज्ञान, जिससे जीव, जगत और ईश्वर का व्यवहार प्रकट होता है।

8. अनात्मा

परिभाषाः— जो आत्मा नहीं है, वह सब अनात्मा है शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, प्राण आदि।

9. अनिर्वचनीय

परिभाषाः— जिसे न पूर्णतः सत्य कहा जा सके, न असत् और यही माया या जगत् की स्थिति है।

10. अखण्डाकार—वृत्ति

परिभाषा महावाक्य—जन्य वह ज्ञान—वृत्ति जो ब्रह्माकार होकर अज्ञान का नाश करती है।

11. अखण्ड

परिभाषाः— ऐसा अर्थ जिसमें किसी प्रकार का भेद न हो। महावाक्यों का तात्पर्य जीव और ब्रह्म की अखण्ड एकता का बोध कराना है।

सरल अर्थ महावाक्य का अंतिम अर्थ जीव—ब्रह्म की अभिन्नता है।

12. अखण्डानन्द

परिभाषाः— जो देश, काल और वस्तु से सीमित न हो, वही ब्रह्मस्वरूप अनन्त आनन्द है।

13. अन्तःकरण

भीतर कार्य करने वाला साधन।

परिभाषाः— मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इन चारों का समष्टि नाम अन्तःकरण है।

14. अन्तर्यामी

परिभाषाः— जो समस्त प्राणियों के भीतर स्थित होकर उन्हें नियन्त्रित करता है, वह अन्तर्यामी ईश्वर है।

ॐ सोऽहम् ॐ

15. अन्वय

परिभाषाः– जहाँ–जहाँ कारण है, वहाँ–वहाँ कार्य का होना। वेदान्त में आत्मा के नित्य अस्तित्व को सिद्ध करने की एक युक्ति।

16. व्यतिरेक

परिभाषाः– जहाँ कारण नहीं है, वहाँ कार्य भी नहीं है। अन्वय–व्यतिरेक से आत्मा और अनात्मा का विवेक कराया जाता है।

17. अनुभव

परिभाषाः– प्रत्यक्ष आत्मस्वरूप का साक्षात्कार। केवल शास्त्र–पठन नहीं, बल्कि सत्य का स्वयं प्रकाश होना।

18. अपरोक्षज्ञान

परिभाषाः– आत्मा का प्रत्यक्ष ज्ञान, जिसमें 'मैं ही ब्रह्म हूँ' का निश्चय हो जाए।

19. परोक्षज्ञान

परिभाषाः– शास्त्र और गुरु से प्राप्त ऐसा ज्ञान जिसमें अभी प्रत्यक्ष अनुभूति नहीं हुई हो।

उदाहरणः 'ब्रह्म है' यह जानना, पर उसका प्रत्यक्ष अनुभव न होना।

20. अभेद

परिभाषाः– जीव और ब्रह्म में वास्तविक कोई भिन्नता नहीं है।

ॐ सोऽहम् ॐ

22. अधिष्ठान

व्युत्पत्ति अधि + स्था = जिसके ऊपर सब कुछ टिका हो।

परिभाषाः– जिस सत्य पर मिथ्या वस्तु का आरोप होता है, वह अधिष्ठान कहलाता है।

उदाहरणः रस्सी में सर्प का भ्रम होने पर रस्सी अधिष्ठान है।

23. अध्यस्त

परिभाषाः– जो वस्तु वास्तव में न होकर भी अज्ञान के कारण किसी अन्य वस्तु में दिखाई दे, वह अध्यस्त कहलाती है।

उदाहरणः रस्सी में सर्प, शुक्ति में रजत।

24. असङ्ग

व्युत्पत्तिः सङ्गरहित।

परिभाषाः– आत्मा किसी भी वस्तु, कर्म, दोष या गुण से वास्तव में नहीं जुड़ता।

25. असत्

परिभाषाः– जिसका तीनों कालों में अस्तित्व न हो।

उदाहरणः खरगोश का सींग, वन्ध्यापुत्र।

26. अस्ति भांति प्रिय

परिभाषाः– वेदान्त के अनुसार प्रत्येक अनुभव में पाँच अंश होते हैं

अस्ति (सत्ता) भांति (प्रकाश) प्रिय (आनन्द)

नाम रूप।

पहले तीन ब्रह्मस्वरूप हैं; नाम और रूप माया के हैं।

27. अविद्या–लेश

परिभाषाः– जीवन्मुक्त ज्ञानी के शरीर रहने तक जो प्रारब्ध के कारण अज्ञान का अत्यन्त सूक्ष्म व्यवहारिक अवशेष प्रतीत होता है, उसे अविद्यालेश कहते हैं।

28. अविद्या–निवृत्ति

परिभाषाः– महावाक्यजन्य ब्रह्मज्ञान से आत्मा के अज्ञान का पूर्ण नाश।

29. अहंकार

व्युत्पत्तिः 'अहं' + 'कार'।

परिभाषाः– अन्तःकरण की वह वृत्ति जो शरीर–इन्द्रियों में 'मैं' का अभिमान करती है।

30. अज्ञानी

परिभाषाः– जो आत्मा को न जानकर देह, मन और अहंकार को ही अपना स्वरूप मानता है।

31. आत्मा

व्युत्पत्तिः आत्मा जो सबमें व्याप्त है, स्वयं प्रकाशित है।

परिभाषाः– नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, सच्चिदानन्दस्वरूप, स्वयंप्रकाश चैतन्य।

32. आत्मसाक्षात्कार

परिभाषाः– आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव, जिसमें ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान का भेद लीन हो जाता है।

33. आत्मनिष्ठा

परिभाषाः– आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद उसी में दृढ़ स्थिति।

34. आत्मविचार

परिभाषाः– 'मैं कौन हूँ ? ' इस प्रश्न के द्वारा देह, इन्द्रिय, मन और बुद्धि से भिन्न अपने शुद्ध स्वरूप का अनुसन्धान।

35. आत्मानात्म–विवेक

परिभाषाः– आत्मा और अनात्मा का स्पष्ट भेद जानना।

उदाहरणः शरीर बदलता है अतः अनात्मा। साक्षी नहीं बदलता अतः वही आत्मा।

36. आत्मैक्य–बोध

परिभाषाः– जीव और ब्रह्म में किसी प्रकार का वास्तविक भेद नहीं है इसका दृढ़ ज्ञान।

37. अन्तरात्मा

परिभाषाः– जो प्रत्येक जीव के हृदय में साक्षी रूप से स्थित है, वही अन्तरात्मा है।

38. अनन्त

परिभाषाः– जो देश, काल और वस्तु से कभी सीमित नहीं होता।

39. अनिर्वचनीय

परिभाषाः– अद्वैत वेदान्त का सिद्धान्त कि भ्रान्ति में जो वस्तु प्रतीत होती है, वह न पूर्णतः सत्य है, न असत्य, वह अनिर्वचनीय है। उदाहरणः रस्सी में साँप का भ्रम।

40. अवच्छेद

परिभाषाः— किसी असीम वस्तु का उपाधि के कारण सीमित—सा प्रतीत होना अवच्छेद कहलाता है। जैसे घट के कारण आकाश घटाकाश प्रतीत होता है, वैसे ही शरीर—मन आदि उपाधियों से एक ब्रह्म अनेक जीवों के रूप में प्रतीत होता है।

उदाहरणः घट टूट जाने पर घटाकाश महाकाश से अलग नहीं रहता; उसी प्रकार उपाधि का नाश होने पर जीव—ब्रह्म की भिन्नता नहीं रहती।

42. अवच्छेदवाद

परिभाषाः— वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसमें जीव और ईश्वर का भेद केवल उपाधि—जनित अवच्छेद माना जाता है, अवच्छेदवाद कहलाता है।

उदाहरणः एक ही आकाश अनेक घटों में भिन्न—भिन्न प्रतीत होता है, पर वास्तव में एक ही है।

43. अविद्या

परिभाषाः— आत्मा के वास्तविक स्वरूप का अज्ञान, जिससे जीव स्वयं को शरीर, मन और इन्द्रियों के साथ अभिन्न मानता है, अविद्या कहलाती है। यही संसार—बन्धन का मूल कारण है।

44. अविद्योपाधि

परिभाषाः— अविद्या ही जीव की उपाधि है। इसी के कारण शुद्ध चैतन्य जीवभाव को प्राप्त होता हुआ प्रतीत होता है।

45. अव्याकृत

परिभाषाः— जो अभी नाम—रूप के रूप में प्रकट नहीं हुआ, कारणावस्था में स्थित है, उसे अव्याकृत कहते हैं।

46. अव्यक्त

परिभाषाः— जो इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं होता और कारणरूप में स्थित रहता है, वह अव्यक्त कहलाता है।

47. अहंवृत्ति

परिभाषाः— अन्तःकरण में उत्पन्न होने वाली 'मैं' की वृत्ति को अहंवृत्ति कहते हैं। जब यह शरीरादि से जुड़ती है तो अहंकार कहलाती है, और जब आत्मस्वरूप में स्थित होती है तो आत्मबोध का साधन बनती है।

48. आत्मप्रत्यय

परिभाषाः— आत्मा का प्रत्यक्ष, स्वाभाविक और कभी न मिटने वाला 'मैं हूँ' का बोध आत्मप्रत्यय कहलाता है। यह किसी बाह्य प्रमाण पर आश्रित नहीं होता।

49. आत्मप्रकाश

परिभाषाः— आत्मा स्वयं प्रकाशस्वरूप है। उसे प्रकाशित करने के लिए किसी अन्य प्रकाश या प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती; उसी के प्रकाश से सब कुछ जाना जाता है।

50. आत्मविद्या

परिभाषाः— जिस विद्या से आत्मा और ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो, वही आत्मविद्या है। यह समस्त विद्याओं में श्रेष्ठ है।

51. आत्मबोध

परिभाषाः— 'मैं शरीर, मन और इन्द्रियाँ नहीं, अपितु शुद्ध ब्रह्मस्वरूप आत्मा हूँ' इस प्रत्यक्ष निश्चय का नाम आत्मबोध है। यही मोक्ष का कारण है।

52. अपरोक्षानुभूति

परिभाषाः— जब ब्रह्म का ज्ञान प्रत्यक्ष आत्मस्वरूप के रूप में 'अहं ब्रह्मास्मि' की अनुभूति बन जाता है और उसमें किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं रहती, उसे अपरोक्षानुभूति कहते हैं।

53. अज्ञान—निवृत्ति

परिभाषाः— श्रवण, मनन और निदिध्यासन से उत्पन्न ब्रह्मज्ञान द्वारा अज्ञान का पूर्ण नाश अज्ञान—निवृत्ति कहलाता है। यही मोक्ष है।

आत्मा पर आवरण के समान प्रतीत होने वाले पाँच उपाधियों को पञ्चकोश कहते हैं। ये आत्मा नहीं हैं, बल्कि आत्मा को ढकने वाले आवरण हैं।

पाँच कोशः—

अन्नमय कोश— स्थूल शरीर।

प्राणमय कोश— प्राणशक्ति।

मनोमय कोश— मन और संकल्प—विकल्प।

विज्ञानमय कोश— बुद्धि और कर्तृत्वाभिमान।

आनन्दमय कोश— कारण शरीर का आवरण।

54. स्थूल शरीर

परिभाषाः— पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतों से बना, जन्म—जरा—मरण के अधीन दृश्य शरीर स्थूल शरीर कहलाता है।

55. सूक्ष्म शरीर

परिभाषाः— पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ, पञ्च प्राण, मन और बुद्धिइन सत्रह तत्त्वों का समूह सूक्ष्म शरीर कहलाता है। यही सुख—दुःख काभभोक्ता प्रतीत होता है।

56. कारण शरीर

परिभाषाः— अविद्या रूप, अनादि, अनिर्वचनीय तथा स्थूल—सूक्ष्म शरीर का कारण जो आवरण है, वही कारण शरीर कहलाता है।

57. षट्उर्मि

परिभाषाः— शरीर को प्रभावित करने वाली छह तरंगें षट्उर्मि कहलाती हैं।

छः ऊर्मियाँ

क्षुधा (भूख)	तृषा (प्यास)	शोक
मोह	जरा (बुढ़ापा)	मृत्यु

वेदान्त में साधनचतुष्टय का तृतीय अंग षट्सम्पत्ति कहलाता है। यह अन्तःकरण की शुद्धि, स्थिरता तथा ब्रह्मज्ञान की पात्रता प्रदान करने वाले छह दिव्य गुणों का समूह है। इन गुणों के अभ्यास से मन विषयों से निवृत्त होकर आत्मतत्त्व में स्थित होने योग्य बनता है।

58. षट्सम्पत्ति

(1) शम– मन को विषय–वासनाओं से हटाकर शान्त एवं अन्तर्मुख बनाना।

(2) दम– इन्द्रियों को विषय–भोगों से संयमित रखना तथा उन्हें धर्म और विवेक के अधीन करना।

(3) उपरति– अनावश्यक बाह्य प्रवृत्तियों का त्याग करके स्वधर्म और आत्मचिन्तन में स्थित होना।

(4) तितिक्षा– शीत–उष्ण, सुख–दुःख, मान–अपमान आदि द्वन्द्वों को बिना खिन्न हुए सहन करना।

(5) श्रद्धा– गुरु, वेदान्त–शास्त्र तथा ब्रह्मवाक्यों में अटूट विश्वास रखना।

(6) समाधान– चित्त को बार–बार ब्रह्मस्वरूप में स्थिर करना तथा एकाग्र रखना।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पुर्णमुदच्यते
पूर्णश्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः